मैंने ईसाई मत क्यों छोड़ा

खण्ड १

DEDICATION TO WHOLE WOMENHOOD

To all women, of any nation or faith
To my sister in humanity
To the other half of society
To the original partner in the journey of life
To womenkind, I dedicate this my simple effect.

१. बाईबल में नारी

१. नारी के प्रति तलाक में भेदभाव

यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिए त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। -व्यवस्थाविवरण (२४ : १)

और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो सकती है। -व्यवस्थाविवरण (२४ : २)

परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिए त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, वा वह दूसरा पुरुष जिसने उसको अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, -व्यवस्थाविवरण (२४ : ३)

तो उसका पहिला पति, जिसने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। -व्यवस्थाविवरण (२४ : ४)

बाईबल में पुरुष जाति के लिए ऐसी व्यवस्था का न होना क्या नारी जाति के साथ अन्याय नहीं है ?

२. क्या नारी जाति लूट का माल है?

जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे, और तू उन्हें बन्धुआ कर ले, –व्यवस्थाविवरण (२१ : १०)

तब यदि तू बन्धुओं में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए, और उससे ब्याह कर लेना चाहे...

–व्यवस्थाविवरण (२१ : ११)

और जो वस्तुएँ सेना के पुरुषों ने अपने–अपने लिए लूट ली थी उनसे अधिक की लूट यह थी अर्थात् छः लाख पचहत्तर हज़ार भेड़–बकरियाँ, –गिनती (३१ : ३२)

बहत्तर हज़ार गाय–बैल –गिनती (३१ : ३३)

इकसठ हज़ार गधे –गिनती (३१ : ३४)

और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुंह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हज़ार थीं। –गिनती (३१ : ३५)

इस प्रकार का विवरण गिनती (३१ : १७,१८), न्यायियों (२१ : १०–१२) में भी मिलता है।

देखिये बाईबल यहाँ नारी को गधे आदि पशुओं लूट का माल मानता है।

३. नारी के अधिकारों का हनन?

फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत माने, वा शपथ खाकर अपने आप को बान्धे, –गिनती (३० : १०)

और उसका पति कुछ न कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और हर एक बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आप को बान्धा हो, वह स्थिर रहे।

–गिनती (३० : ११)

परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्नत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे, तो उसकी मन्नतें आदि जो कुछ उसके मुंह से अपने बन्धन के विषय निकला हो, उसमें से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति नें सब तोड़ दिया है; इसलिए यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा। –गिनती (३० : १२)

इस प्रकार का विवरण १ तिमुथियुस (२ : १२) में भी मिलता है।

देखिए यहाँ नारी स्वतन्त्रता से इच्छाएँ भी नहीं कर सकती।

४. नारी जाति से पक्षपात।

इस्राएलियों से कह, कि जो स्त्री गर्भिणी हो और उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। –लैव्यव्यवस्था (१२ : २)

...और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे; ...

–लैव्यव्यवस्था (१२ : ५)

क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। –१ कुरिन्थियों (११ : ८)

देखिए उक्त विवरण में जन्म से ही नारी जाति से भेदभाव किया गया है।

५. करे कोई भरे कोई।

फिर स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। –उत्पत्ति (३ : १६)

देखिए यहाँ सर्प के कहने पर सृष्टि की आदि महिला हौवा ने वृक्ष का फल खाया, हौवा के द्वारा किए गए अपराध का दण्ड ईश्वर समस्त नारी जाति को दे रहा है। यह कहाँ का न्याय है?

६. बहुपत्नीवाद का बाईबल में वर्णन।

जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन की बेटी बाश्मत को ब्याह लिया। –उत्पत्ति (२६ : ३४)

उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों, और दोनों लौण्डियों, और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया। –उत्पत्ति (३२ : २२)

ऐसा ही कुछ वर्णन उत्पत्ति (२६ : १५-३०) में भी मिलता है।

देखिए बाईबल में बहुपत्नीवाद जैसी अमानवीय घटनाएँ मिलती हैं।

७. बहू द्वारा श्वसुर के साथ मुंह काला करना।

जब यहूदा ने उसको देखा, उस ने उसको वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढांपे हुए थी। -उत्पत्ति (३८ : १५)

और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा, और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दो, (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, कि यदि मैं तुझे अपने पास आने दूँ, तो तू मुझे क्या देगा? -उत्पत्ति (३८ : १६)

उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूँगा। तब उसने कहा, भला उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा? -उत्पत्ति (३८ : १७)

उसने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊँ? उसने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वस्तुएँ दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई। -उत्पत्ति (३८ : १८)

इस प्रकार का परिवार के सदस्यों में परस्पर व्यभिचार का विवरण उत्पत्ति (२० : १२) में भी मिलता है।

देखिए चरित्रहीनता एवं व्यभिचार का वीभत्स स्वरूप।

८. नारी का मोल।

तुम मुझसे कितना ही मूल्य वा बदला क्यों न मांगो, तो भी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूँगा : परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिए मुझे दो। -उत्पत्ति (३४ : १२)

इसी प्रकार का वर्णन रूत (४ : १०) तथा होशे (३ : २) में भी मिलता है।

देखिए बाईबल के अनुसार नारी भी खरीदने की वस्तु है।

९. नारी पैर की जूती।

यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उसके संग कुकर्म करे, तो वह निश्चय उसका मोल देके उसे ब्याह ले। -निर्गमन (२२ : १६)

परन्तु यदि उसका पिता उसे देने को बिल्कुल इनकार करे, तो कुकर्म करनेवाला कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रुपए तौल दे। -निर्गमन (२२ : १७)

क्या इससे असभ्य कुछ हो सकता है?

१०. लेवीय द्वारा नारी जाति पर बर्बरता।

उन दिनों में जब .... और बताओ।। -न्यायियों (१९ : १-३०)

देखिए लेवीय पुरुष द्वारा लुच्चों से घिर जाने पर अपनी सुरैतिन (Concubine) को पकड़कर बाहर कर देना, लुच्चों द्वारा उससे रातभर व्यभिचार का किया जाना और लेवीय पुरुष द्वारा छूरी से सुरैतिन के अंग-अंग के बारह टुकड़े करना।

११. नारी जाति की पिता द्वारा दुर्गति।

तब यहोवा का... जाया करती थीं।।

न्यायियों (११ : २९-४०)

यहोवा द्वारा युद्ध में जीत के बदले यिप्तह मिस्पा की बेटी को होम बलि चढ़ाने के लिए मांगना और उसका देना कहाँ की मानवता है?

१२. नातान द्वारा स्वामी की पत्नियाँ दाऊद को देना।

फिर मैंने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियाँ तेरे भोग के लिए दीं; -२ शमूएल (१२ : ८)

नारी जाति का इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता है?

१३. यहोवा द्वारा नातान की पत्नियाँ औरों को देना।

यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे सामने लेकर दूसरे को दूँगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा। -२ शमूएल

(१२ : ११)

देखिए स्वयं ईश्वर द्वारा नारी जाति पर बरपा कहर!

१४. बाईबल में पुनर्विवाह का खण्डन।

परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है। –मत्ती (५ : ३२)

इसी प्रकार का विवरण लूका (१६ : १८) में भी मिलता है।

१५. नारी को व्यभिचार हेतु उकसाना।

जब तुम्हारी बेटियाँ छिनाला और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचार करें, तब मैं उनको दण्ड न दूँगा; क्योंकि मनुष्य आप ही वेश्याओं के साथ एकान्त में जाते और देवदासियों के साथी होकर यज्ञ करते हैं; और जो लोग समझ नहीं रखते, वे नाश हो जाएँगे। –होशे (४ : १४)

देखिए बाईबल का ईश्वर बहु-बेटियों के व्यभिचार को मान्यता देता है।

१५. विधवा विवाह निषेध

जो विधवा, वा त्यागी हुई, वा भ्रष्ट, वा वेश्या हो, ऐसी किसी को वह न ब्याहे, वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुंवारी कन्या को ब्याहे। –लैव्यव्यवस्था (२१ : १४)

बाईबल के ईश्वर की विधवाओं के प्रति ऐसी क्रूरता खेदजनक है।

वेदों में नारी जाति का सम्मान

१. **इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्।**
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।।

–अथर्ववेद (१२/२/३१)

स्त्रियों उत्तम धर्मपत्नियां बनें, ये कभी विधवा न बनें। वे सौभाग्ययुक्त होकर अपने शरीर को अंजन आदि द्वारा सुशोभित करें। नीरोग बनें, शोकरहित होकर अश्रुरहित रहें और उत्तम आभूषण से सुशोभित रहें।

अपने घर में ये स्त्रियां सुपूजित होती हुई महत्व का स्थान प्राप्त करें।

२. **अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः।**
वीरसूर्देवृकामा सं त्वयैधिषीमहि सुमनस्यमाना।।

–अथर्ववेद (१४/२/१७)

यह स्त्री पति के घर में आकर आनन्द से रहे, आंखे क्रोधयुक्त न करे, पति की हितकारीणी बने, धर्मनियमों का पालन करे, सबको सुख देवे, अपनी सन्तानों को वीरता की शिक्षा देवे, देवरादि को सन्तुष्ट रखे, अन्तःकरण में शुभ भाव रखे। ऐसी स्त्री से घर सुसम्पन्न होता है।

३. **सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शम्भूः।**
स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान्विशेमान्।। –अथर्ववेद (१४/२/२६)

उत्तम मंगल कामनावाली, गृहवालों को दुःख से छुड़ानेवाली, पति की सेवा करनेवाली, श्वसुर को सुख देने वाली, सास का हित करनेवाली स्त्री अपने घर में प्रविष्ट हो।

४. **इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योते ऽदिते सरस्वती महि विश्रुति।**
एता ते ऽअघ्न्येनामानि देवेभ्यो मां सुकृतं ब्रूयात्।।

–यजुर्वेद (८/४३)

जो विद्वानों से शिक्षा पाई हुई स्त्री हो वह अपने-अपने पति और अन्य सब स्त्रियों को यथायोग्य उत्तम कर्म सिखलावे जिससे किसी तरह वे अधर्म की ओर न डिगे। वे दोनों स्त्री-पुरुष विद्या की वृद्धि और बालकों तथा कन्याओं को शिक्षा किया करें।

५. **प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुतस्करम्।**
यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति।। –ऋग्वेद (१०/८५/२५)

वधू का सम्बन्ध पितृकुल से छूटे, परन्तु पतिकुल से न छूटे। पतिकुल से सम्बन्ध सुदृढ़ होवे। परमेश्वर इस वधू को पतिकुल में उत्तम पुत्रों से युक्त करे, और उत्तम भाग्य से युक्त करे।

६. **प्रबुध्यस्य सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।**
गृहान्गाच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु।।

–अथर्ववेद (१४/२/७५)

स्त्री विदुषी होवे, प्रातःकाल उठे, सौ वर्ष की दीर्घायु के लिए ज्ञान

प्राप्तिपूर्वक प्रयत्न करे। अपने पति के घर में रहे। अपने घर की स्वामिनी बनकर विराजे। परमात्मा इसको दीर्घायु करे।

७. **इह प्रियं प्रजायै ते समृध्यतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि।**
एना पत्या तन्वं सं स्पृशस्वाथ जिर्विर्विदथमा वदासि।।
–अथर्ववेद (१४/१/२१)

इस धर्मपत्नी के सन्तान उत्तम सुख में रहें। यह धर्मपत्नी अपना गृहस्थाश्रम उत्तम रीति से चलावे। यह धर्मपत्नी अपने पति के साथ सुख से रहे। जब इस तरह धर्ममार्ग से गृहस्थाश्रम चलाती हुई यह स्त्री वृद्ध होगी तब यह योग्य सम्मति देने योग्य होगी।

८. **इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम्।**
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि।।
–अथर्ववेद (१८/३/१)

पति के मर जाने पर सन्तान की कामना करने वाली स्त्री धर्मानुकूल दूसरे पुरुष को पति बनाकर धन व सन्तान प्राप्ति करे। वह पुरुष भी उसे पत्नी बनाकर सन्तान व धन से उसका पालन-पोषण करे।

९. **अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्।**
ताविह संभवाव प्रजामा जनयावहै।। –अथर्ववेद (१४/२/७१)

पुरुष प्राण है और स्त्री रयि है, पुरुष सामगान है और स्त्री मन्त्र है। पुरुष सूर्य है और स्त्री पृथ्वी है। ये दोनों मिलकर इस संसार में रहें और उत्तम सन्तान उत्पन्न करें।

१०. **सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात् सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्।।**
–ऋग्वेद (७/५६/५)

वही स्त्री श्रेष्ठ है, जो ब्रह्मचर्य से समस्त विद्याओं को पढ़कर वीर सन्तानों को जन्म देती है, जो सहनशील है और जो धनकोश वाली है।

११. **सम्राज्ञेधि श्वशुरेषु सम्राज्युत देवृषु।**
ननान्दुः सम्राज्ञेधि सम्राज्युत श्वश्रुवा।। –अथर्ववेद (१४/१/४४)

अपने ससुर आदि के बीच, देवरों के मध्य, ननंद के साथ, सास के साथ भी महारानी होकर रह। *(स्त्री का जितना समादर वैदिक धर्म में है अन्य किसी सम्प्रदाय में नहीं है।)*

२. बाईबल में गुलामप्रथा

१. जब तुम कोई इब्री दास मोल लो, तब वह छः वर्ष तक सेवा करता रहे, और सातवें वर्ष स्वतन्त्र होकर सेंतमेंत चला जाए। –निर्गमन (२१ : २)

२. यदि उसके स्वामी ने उसको पत्नी दी हो और उससे उसके बेटे वा बेटियाँ उत्पन्न हुई हों, तो उसकी पत्नी और बालक उस स्वामी के ही रहें, और वह अकेला चला जाए। –निर्गमन (२१ : ४)

३. यदि कोई अपने दास वा दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए। –निर्गमन (२१ : २०)

४. परन्तु वह दो-एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए; क्योंकि वह दास उसका धन है। –निर्गमन (२१ : २१)

५. तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। –व्यवस्थाविवरण (१५ : १७)

६. हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे उनकी भी आज्ञा मानो। –इफिसियों (६ : ५)

७. हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सिधाई और परमेश्वर के भय से। –कुलुस्सियों (३ : २२)

८. हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी।
–१ पतरस (२ : १८)

९. और तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे बाद होंगे उनके अधिकारी कर सकोगे, और वे उनका भाग ठहरें; उनमें से तुम सदा अपने लिए दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्राएली हों उनपर अपना अधिकार कठोरता से न जताना। –लैव्यव्यवस्था

(२५ : ४६)

देखिए बाईबल गुलाम प्रथा को न केवल मान्यता देता है अपितु उनके साथ अमानवीय बर्बरता पूर्ण क्रूर व्यवहार की अनुमति भी देता है।

वेदानुकूल स्वतन्त्र जीवनयापन करने का बाईबल में प्रमाण–

"यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर। –१ कुरिन्थियों (७ : २१)

वेदों में मानवता

१. **दृते दृंहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।**
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।
–यजुर्वेद (३६/१८)

वे ही धर्मात्मा जन हैं जो अपने आत्मा के सदृश् प्राणियों को मानें किसी से भी द्वेष न करें और मित्र के सदृश सबका सदा सत्कार करें।

२. **सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।**
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। –अथर्ववेद. (३/३०/१)

प्रेम पूर्वक हृदय के भाव, मन के शुभ विचार और आपस की निर्वैरता आप अपने घर में स्थिर कीजिए। तुम्हारे में से हरेक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ ऐसा प्रेमपूर्वक बर्ताव करे कि जिस प्रकार नए उत्पन्न हुए बछड़े से उसकी गौ माता प्यार करती है।

३. **समाना हृदयानि वः।** –ऋग्वेद (१०/१९१/४)

सभी प्राणीमात्र के प्रति आपके हृदय आदर व प्रेमभाव से भरे हों।

यहां तक कि मार्टिन लूथर किंग गुलाम प्रथा का समर्थन निम्नलिखित शब्दों में करते हैं।

1524: Luther – no friend of the downtrodden – encourages savagery of German princes in putting down the two-year Peasants' Revolt

"My advice... is: First, that their synagogues be burned down, and that all who are able toss sulphur and pitch; it would be good if someone could also throw in some hellfire.." Martin Luther ("On the Jews and their lies" 1543)

३. बाईबल में जातिवाद एवं भेदभाव

१. और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई। –उत्पत्ति (४ : ४,५)

२. तब यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, कि सारे मिस्र प्रदेश के मनुष्यों पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें। –निर्गमन (९ : २२)

३. पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भौंकेगा; जिससे तुम जान लो कि मिस्रियों और इस्राएलियों में मैं यहोवा अन्तर करता हूँ। –निर्गमन (११ : ७)

४. और तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे बाद होंगे उनके अधिकारी कर सकोगे, और वे उनका भाग ठहरें; उनमें से तुम सदा अपने लिए दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्राएली हों उनपर अपना अधिकार कठोरता से न जताना। –लैव्यव्यवस्था (२५ : ४६)

५. क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वीभर के सब देशों के लोगों में से तुझको चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे। –व्यवस्थाविवरण (७ : ६)

६. क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझको पृथ्वीभर के समस्त देशों के लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति होने के लिए चुन लिया है।
–व्यवस्थाविवरण (१४ : २)

७. सात वर्ष बीतने पर तुम छुटकारा दिया करना, अर्थात् जिस किसी ऋण देनेवाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपने पड़ोसी वा भाई से उसको बरबस न भरवा ले, क्योंकि यहोवा के नाम से इस छुटकारे का प्रचार हुआ है। परदेशी

मनुष्यों से तू उसे बरबस भरवा सकता है, परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसको तू बिना भरवाये छोड़ देना।

–व्यवस्थाविवरण (१५ : १,२,३)

८. तू परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा है, वहाँ जिस–जिस काम में अपना हाथ लगाए उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे। –व्यवस्थाविवरण (२३ : २०)

९. जिसके अण्ड कुचले गए वा लिंग काट डाला गया हो वह यहोवा की सभा में न आने पाए। –व्यवस्थाविवरण (२३ : १)

बाईबल का ईश्वर यहोवा इस्राएलवासियों से विशेष स्नेहवश अन्य मिस्र आदि देशवासियों से पक्षपातपूर्ण व्यवहार करता है। प्रान्तवाद, जातिवाद को पनपाता बाईबल का ईश्वर न्यायकारी नहीं हो सकता। जो विदेशी लोगों से सौतेला व्यवहार करने की प्रेरणा देता हो वह ईश्वर कैसा? किसी के कर्मों के फल स्वरूप अपाहिज बने व्यक्ति का क्या अपराध कि उसे ईश्वर के दरवाजे भी बन्द हो जाएँ?

वेदों में समानता

१. **अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।**
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।।

–ऋग्वेद (५/६०/५)

जिनमें कोई बड़ा नहीं है, जिनमें कोई छोटा नहीं है, ऐसे ये सब भाई एक जैसे हैं। ये सब उत्तम ऐश्वर्य के लिए मिलकर उन्नति का प्रयत्न करते हैं। इन सब का तरुण पिता उत्तम कर्म करनेवाला इश्वर है। इनके लिए उत्तम प्रकार का दूध देनेवाली माता प्रकृति है। यह प्रकृति माता न रोनेवाले जीवों के लिए उत्तम दिन प्रदान करती है।

१. **ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदो ऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः।**

–ऋग्वेद (५/५९/६)

वे सब बड़े नहीं हैं, छोटे नहीं हैं, और मध्य में भी नहीं हैं। परन्तु वे सब के सब उदय को प्राप्त करनेवाले हैं। इसलिए उत्साह के साथ विशेष रीति से बढ़ने का प्रयत्न करते हैं।

४. बाईबल एवं मांसाहार

१. तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ–कुछ लेकर वेदी पर होम बली चढ़ाया। –उत्पत्ति (८ : २०)

२. यहोवा ने उससे कहा, मेरे लिए तीन वर्ष की एक कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेंढ़ा, और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले। और इन सभों को लेकर, उसने बीच से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आम्हने–साम्हने रखा : पर चिड़ियाओं को उसने टुकड़े न किया। –उत्पत्ति (१५ : ९,१०)

३. कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चो ले आ; और मैं तेरे पिता के लिए उसकी रुचि के अनुसार उनके मांस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊँगी। –उत्पत्ति (२७ : ९)

४. उनके साथ बिन्यामिन को देख कर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारियों से कहा, उन मनुष्यों को घर में पहुंचा दो, और पशु मार के भोजन तैयार करो; क्योंकि वे लोग दोपहर को मेरे संग भोजन करेंगे। –उत्पत्ति (४३ : १६)

५. और जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब चाहे उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटी, वह होमबलि के लिए एक वर्ष का भेड़ी का बच्चा, और पापबलि के लिए कबूतरी का एक बच्चा वा पंडुकी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए। –लैव्यव्यवस्था (१२ : ६)

ऐसा ही कुछ वर्णन लैव्यव्यवस्था (८ : १–१९), (१ : १–९) में भी दिया गया है।

६. और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिससे प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए। –लैव्यव्यवस्था (४ : ३)

७. उन्होंने उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया। –लूका (२४ : ४२)

इस प्रकार के मांसाहार के विवरण बाईबल में अन्यत्र भी देखने को मिलते हैं।

क्या बलि देने से पाप क्षमा हो जाते हैं? क्या बलि देने से व्यक्ति शुद्ध हो सकता है? क्या निरीह प्रणियों की हत्या पाप नहीं है? होम में मांस डालने से तो दुर्गन्ध ही उत्पन्न होगी। मांसाहार के लिए हजार बहाने। बाईबल के ईश्वर की ऐसी अपरिपक्व सोच निश्चित रूप से खेदजनक है।

वेदानुकूल मांसभक्षण निषेध का बाईबल में प्रमाण-

१. **हे भाईयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। -१ कुरिन्थियों (१५ : ५०)**

२. **क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे -इब्रानियों (१० : ४)**

वेदों में मांस भक्षण निषेध

१. **इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुं सहस्राक्षो मेधाय चीयमानः।**
मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
मयुं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु।। -अथर्ववेद (१३/१/४७)

कोई भी मनुष्य सब के उपकार करनेहारे पशुओं को कभी न मारे, किन्तु इनकी अच्छे प्रकार रक्षा कर और इनसे उपकार लेके सब मनुष्यों को आनन्द देवे। जिन जंगली पशुओं से ग्राम के पशु खेती और मनुष्यों की हानी हो उनको राजपुरुष मारें और बन्धन करें।

२. **यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।**
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो ऽसो अवीरहा।।

-अथर्ववेद (१/१६/४)

हे चोर! यदि तू हमारी गाय, हमारा घोड़ा अथवा मनुष्य का वध करेगा, तुझ पर हम गोली चलावेंगे, जिससे तू हमारा नाश करने के लिए फिर जीवित न रह सकेगा।

३. **न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि।**
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।। -सामवेद (२/७/२)

हे देवों! हम हिंसा नहीं करते, और न अन्यथा अनुष्ठान ही

करते हैं। जो मन्त्र अर्थात् वेद में सुना है दसी का आचरण करते हैं।

४. **य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।**
गर्भान्खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि।। -अथर्ववेद (८/६/२३)

जो कच्चा मांस और अण्डों को खाते हैं उनको यहां से हम नाश करते हैं।

वेदों में निरामिष भोजन का विधान

१. **गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।**
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम।।

-ऋग्वेद (१०/४३/१०)

गौओं के दूध आदि द्वारा दुष्परिणामी मतिहीनता का हम अपनयन करें। हे बहुतों द्वारा पुकारे गए परमेश्वर! हम सब प्रकार की क्षुधा का जौ द्वारा (हम अपनयन करें)। राजाओं के सहयोग द्वारा हम प्रजानन, दुग्ध और यव रूपी मुख्य धनों को हम दोनों के बल अर्थात् प्रयत्न द्वारा जीतें।

२. **व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्। एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च।।**

-ऋग्वेद (६/१४०/२)

चावलों का भोजन कीजिए, जौ खाइए। उड़द अथवा तिल भक्षण कीजिए। रमणीयता के लिए आप सब लागों का यही भाग है। आपके दांत रक्षकों की तथा मान्यकर्त्ताओं की हिंसा न करे।

५. बाईबल और नरबलि

१. **परन्तु अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिए अर्पण करे, चाहे मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निजभूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिए परम पवित्र ठहरे। मनुष्यों में से जो कोई अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न जाए; निश्चय वह मार डाला जाए। -लैव्यव्यवस्था (२७ : २८,२६)**

२. **और तुमको अपने बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा।**

–लैव्यव्यवस्था (२६ : २६)

३. तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझको डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का मांस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देगा खाएगा। –व्यवस्थाविवरण (२८ : ५३)

४. तब यहोवा का आत्मा..... चार दिन तक जाया करती थी। –न्यायियों (११ : २६-४०)

५. उसके वंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएँ, और हम उन्हें यहोवा के लिए यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिवा नाम बस्ती में फांसी देंगे। राजा ने कहा मैं उनको सौंप दूंगा। –२ शमूएल (२१ : ६)

(यह नरबलि लगातार तीन वर्ष से पड़ रहे सूखे से निज़ात पाने के लिए दी गई थी।)

६. जो तुझ पर अन्धेर करते हैं उनको मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा, और, वे अपना लोहू पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नए दाखमधु से होते हैं। –यशायाह (४६ : २६)

७. और घिर जाने और उस सकेती के समय जिसमें उनके प्राण के शत्रु उन्हें डाल देंगे, मैं उनके बेटे-बेटियों का मांस उन्हें खिलाऊंगा और एक-दूसरे का भी मांस खिलाऊंगा। –यिर्मयाह (१६ : ६)

८. फिर राजा ने उससे पूछा, तुझे क्या हुआ? उसने उत्तर दिया, इस स्त्री ने मुझसे कहा था, मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूंगी, और हम उसे भी खाएंगी। तब मेरे बेटे को पकाकर हमने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैंने इससे कहा कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इसने अपने बेटे को छिपा रखा। –२ राजा (६ : २८,२६)

६. दयालु स्त्रियों ने अपने ही हाथों से अपने बच्चों को पकाया है। –विलापगीत (४ : १०)

१०. अर्थात् वे अपने सब पहिलौठों को आग में होम करने लगे। –यहेजकेल (२० : २६)

११. क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहिलौठे को

वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूं? –मीका (६ : ७)

१२. यीशू ने उनसे कहा; मैं तुमसे सच कहता हूं जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीयो, तुममें जीवन नहीं। –युहन्ना (६ : ५३)

अपने प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए बाईबल के ईश्वर को नरबलि से भी परहेज नहीं है। हजारों पशुओं की हत्या से भी वह तृप्त न हुआ इसलिए उसने नरबलि का विधान किया।

वेदों में नरबलि निषेध

१. **यत्पुरुषेण हविषा यज्ञं देवा अतन्वत।**
अस्ति नु तस्मादोजीयो यद्विहव्येनेजिरे।। –अथर्ववेद (७/५/४)

पुरुष की हवि द्वारा यज्ञ करने से तो, निश्चय से, बिना ही हवि के यज्ञ करना उत्तम है।

२. **इमं मा हिंसीर्द्विपादम्।** –अथर्ववेद (१३/१/४७)

तू दो पैर वाले अर्थात् मनुष्य के प्रति हिंसा मत कर।

३. **मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।** –अथर्ववेद (१०/१/२६)

तू गाय, घोड़े तथा मनुष्य का वध मत कर।

६. बाईबल और विज्ञान

"I can not imagine a god who rewards and punishes the objects of his creation, whose purposes are modeled after our own-a god, in short, who is but a reflection of human frailty. Neither can I believe that the individual survivors the death of his body, although feeble soules harbour such thoughts through fear or ridiculous egotism."

-Albert Einstein (Newyork Times, April 19,1955)

१. जब नूह की अवस्था के छः सौवें वर्ष के दूसरे महिने का सत्तरवां दिन आया; उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। –उत्पत्ति (७ : ११)

क्या आकाश में झरोखे होते हैं?

२. **इसके बाद मैंने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे। –प्रकाशित वाक्य (७ : १)**

वृत्ताकार पृथ्वी के कोने कल्पित करना बाईबल का अज्ञान है।

३. **और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है, पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई।**

बाईबल में अनुवांशिक विज्ञान (Genetic Science) का नितान्त अभाव है, जिसके अन्तर्गत एक ही परिवार में विवाहादि सम्बन्ध वर्जित हैं।

४. **और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से पलटा न लिया। –यहोशू (१० : १३)**

निरन्तर गतिमान् सूर्य एवं चन्द्रमा के रुक जाने के गप्प से बाईबल के विज्ञान की पोल खुल गई है।

५. **और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडलाता था। तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो; तो उजियाला हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया। –उत्पत्ति (१ : २–५)**

तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई; उनमें से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिए, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिए बनाया : और तारा गण को भी बनाया। –उत्पत्ति (१ : १६)

तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया। –उत्पत्ति (१ : १६)

चौथे दिवस सूर्य व चन्द्रमा का निर्माण करने वाले ईश्वर ने रात और दिन का निर्माण प्रथम दिन कैसे किया?

६. **और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। –प्रकाशितवाक्य (६ : १३)**

खेदजनक है कि बाईबल का ईश्वर पृथ्वी आदि ग्रहों के मध्य स्थित गुरुत्वाकर्षण शक्ति से अनभिज्ञ है।

देखिए ईसाई जगत के इतिहास में विज्ञान रूपी सत्य की बात करनेवाले को किस प्रकार दण्ड दिया गया–

In 1633 Galileo is brought before the Inquisition. Under threat of torture and death, he is forced from his knees to renounce all belief in Copernican theories. He is sentenced to life imprisonment. He dies in 1642 and the charges against him stand for another 350 years.

In 1600 After a seven year trail before the Inquisition, Giordano Bruno, who had the audacity to suggest that space was boundless and that the sun and its planets were not unique, is condemned and burned at the stake.

In 1553 John Calvin, the "Protestant Pope" of Geneva proves his Christian credentials by having Michael Servetus, the Spanish physician, burned at the stake for heresy. Servetus had opposed Trinitarianism and infant baptism.

वेदों में विविध विज्ञान

१. **इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।**
समूळ्हमस्य पांसुरे।। –ऋग्वेद (१/२२/१७)

परमेश्वर ने इस इस संसार में तीन प्रकार का जगत् रचा है। अर्थात् एक पृथ्वीरूप, दूसरा अन्तरिक्ष आकाश में रहनेवाला त्रसरेणूरूप और तीसरा प्रकाशमय सूर्य आदि लोक तीन आधाररूप हैं। इनमें से आकाश में वायु के आधार से रहनेवाला जो कारणरूप है वही पृथ्वी और सूर्य आदि लोकों का बढ़ानेवाला है। और इस जगत् को ईश्वर के बिना

कोई बनाने में समर्थ नहीं हो सकता।

२. **पूर्वे अर्द्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम्।**
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरुपस्था।।

-ऋग्वेद (१/१२४/५)

उषा से उत्पन्न हुआ प्रकाश आधे भूगोल में सदा प्रकाशित रहता है। भूगोल के दूसरे आधे भाग में सदा रात्रि होती है। उन दोनों के मध्य में सदा उषा विराजमान रहती है। इस प्रकार निरन्तरता से रात्रि उषा और दिन क्रमपूर्वक वर्तमान् रहते हैं। इससे क्या सार निकला कि भूगोल का जितना भाग सूर्य के सम्मुख रहता है उतने भाग में दिन तथा जितना भाग सूर्य से विपरीत होता है उतने में रात्रि और संधिवेला में रात्रि होती है। इस प्रकार लोकों के भ्रमण के कारण ये दिन आदि भी घूमते से दिखते हैं।

३. **अनेहो दात्रमदितेरनर्वं हुवे स्वर्वदवधं नमस्वत्।**
तद्रोदसी जनयतं जरित्रे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात्।।

-ऋग्वेद (१/१८५/३)

ये जो भूमि, सूर्य और अन्य प्रत्यक्ष पदार्थ दीखते हैं, वे विनाश रहित अनादि कारण (प्रकृति) से उत्पन्न हुए हैं ऐसा जानना चाहिए।

४. **आयं गौः पृश्नीरक्रमीदसदन् मातरं पुनः।**
पितरं च प्रयन्त्स्वः।। -यजुर्वेद (३/६)

मनुष्यों को जानना चाहिए कि जल और अग्नि के निमित्त से उत्पन्न हुआ यह भूगोल अन्तरिक्ष में अपनी कक्षा में आकर्षण के द्वारा अपने रक्षक सूर्य के चारों ओर प्रतिक्षण घूमता है, इसी से दिन-रात, शक्लपक्ष-कृष्णपक्ष, ऋतुएं और अयन आदि कालविभाग क्रमपूर्वक बनते हैं।

५. **इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। विगोभिरद्रिमैरयत्।।**

-ऋग्वेद (१/७/३)

सृष्टि रचने की इच्छावाले ईश्वर ने सब लोकों के बीच में दर्शन, धारण, आकर्षण और प्रकाश रूपी प्रयोजन के लिए प्रकाशमय सूर्यलोक

स्थापित किया है। इसी प्रकार का यह नियम प्रत्येक ब्रह्माण्ड (=सौर परिवार) के लिए समझना चाहिए। वह प्रतिक्षण जल को ऊपर खींचकर और वायु के द्वारा ऊपर रखकर उसे बार-बार नीचे पहुंचाता है, यही वर्षा का कारण है।

६. **क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो वन्धुरो ये सनीळाः।**
कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासनासत्योपयाथः।।

-ऋग्वेद (१/३४/९)

ऐश्वर्य के इच्छुक मनुष्यों को रथ (=यान) के अग्रभाग, मध्यभाग और अन्तिमभाग में सब कलाओं के बन्धन के आधार के लिए तीन विशेष बन्धन (=प्रकोष्ठ) बनाने चाहिएं। एक मनुष्यों के बैठने के लिए, दूसरा अग्नि रखने के लिए और तीसरा जल रखने के लिए बनाकर जब-जब जाने की इच्छा हो तब-तब उचित मात्रा में इन्धन रखकर उनमें अग्निसंयोग करके, कलायन्त्र (=पंखे) उत्पादित वायु से उसे प्रदीप्त करके उसे वाष्पवेग से संखलित यान से (मनुष्य) दूर के भी स्थान पर समीपस्थान के समान पहुंच सकते हैं। इस प्रकार के यान के बिना कोई भी निर्विघ्नरूप से दूसरे स्थान पर शीघ्र नहीं जा सकता है।

७. बाईबल का ईश्वर

१. हिंसा का समर्थक

१. और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फिरोन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सबके पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला। -निर्गमन (१२ : २९)

२. उसने उनसे कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाकर छावनी से एक निकास से दूसरे निकास तक घूम-घूम कर अपने अपने भाइयों, संगियों, और पड़ोसियों को घात करो। -निर्गमन (३२ : २७)

३. और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया, और हमने उसको पुत्रों और सारी सेना समेत मार डाला।

-व्यवस्थाविवरण (२ : ३३)

४. और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे, और तू उन पर जय प्राप्त कर ले; तब उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना; उनसे न वाचा बान्धना, और न उन पर दया करना।

–व्यवस्थाविवरण (७ : २)

५. तब यहोवा के सम्मुख से आग निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए। –लैव्यव्यवस्था (१० : २)

६. मांस उनके मुंह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे, कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। –गिनती (११ : ३३)

७. सो जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर पत्थरवाह किया, और वह मर गया। –गिनती (१५ : ३६)

८. और क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बुढ़े, वरन बैल, भेड़–बकरी, गदहे, और जितने नगर में थे, उन सभों को उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला। –यहोशू (६ : २१)

९. तब यहोवा ने यहोशू से कहा, उनसे मत डर, क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभों को इस्राएलियों के वश करके मरवा डालूंगा।

–यहोशू (११ : ६)

१०. और यहूदा ने चढ़ाई की, और यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उसके हाथ में कर दिया; तब उन्होने बेजेक में उन में से दस हजार पुरुष मार डाले। –न्यायियों (१ : ४)

उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि मारकाट करने कराने वाला बाईबल का ईश्वर कितना क्रूर, जंगली, असभ्य था।

२. बाईबल के ईश्वर का पछताना

और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सबको मिटा

दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ। –उत्पत्ति (६ : ६,७)

सृष्टि रचना करके पछताने वाला बाईबल का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है अपितु अज्ञानी सिद्ध हो जाता है।

३. वादविवाद का जन्मदाता

१. जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे; तब इन्हें देखने के लिए यहोवा उतर आया। और यहोवा ने कहा, मैं क्या देखता हूं, कि सब एक ही दल के हैं, और भाषा भी उन सबकी एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ उनके लिए अनहोना न होगा। इसलिए आओ हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक–दूसरे की बोली न समझ सकें। –उत्पत्ति (११ : ५–७)

२. यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। –मत्ती (१० : ३४,३५)

कहां मानवजाति को परस्पर प्रेम, मित्रता एवं संगठन में रहने की प्रेरणा देनेवाला ईश्वर और कहां लोगों में भ्रम उत्पन्न करके परस्पर लड़ानेवाला बाईबल का ईश्वर !

४. अग्निवर्षा, सर्पवर्षा एवं ओले बरसानेवाला ईश्वर

१. तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई। –उत्पत्ति (१९ : २४)

२. सो यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले सांप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। –गिनती (२१ : ६)

३. जब यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों, पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें। तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया; और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर

ओले बरसाए। –निर्गमन (९ : २२,२३)

अपने एवं भक्तों के विरोधियों पर आग, सांप एवं ओलों की वर्षा करनेवाला बाईबल का ईश्वर द्वेषी एवं असभ्य प्रतीत होता है।

५. झूठा ईश्वर

१. पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना; क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। –उत्पत्ति (२ : १६,१७)

सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़ कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गई, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं। –उत्पत्ति (३ : ६,७)

ईश्वर ने भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष के सम्बन्ध में असत्य भाषण करके आदम और हव्वा को धोखे में रखा।

६. अन्यायकारी ईश्वर

१. कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पाए; किन्तु दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा के सभा में न आने पाए। –व्यवस्थाविवरण (२३ : २)

२. इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। तब वह हीम सा श्वेत कोढ़ी होकर उसके साम्हने से चला गया। –२ राजा (५ : २७)

किसी के किए अपराध का दण्ड कोई और भोगे ऐसी व्यवस्था देनेवाला ईश्वर न्यायकारी नहीं हो सकता।

७. लोकैषणाग्रस्त ईश्वर

१. परन्तु सचमुच मैंने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ। –निर्गमन (९ : १६)

ऐसी कामना करनेवाला ईश्वर सर्वज्ञ तथा आनन्दादि गुणों से युक्त

कैसे हो सकता है?

८. ईर्ष्याग्रस्त ईश्वर

१. तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूं। –व्यवस्थाविवरण (५ : ९)

२. और मैं तुझ पर जलूंगा, जिससे वे जलजलाहट के साथ तुझसे बर्ताव करेंगे। वे तेरी नाक और कान काट लेंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा यह तलवार से मारा जाएगा। वे तेरे पुत्र-पुत्रियों को छीन ले जाएँगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा, वह आग से भस्म हो जाएगा। –यहेजकेल (२३ : २५)

३. फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हममें से एक के समान हो गया है। –उत्पत्ति (२२ : १)

ईर्ष्या करने के स्वभाव ने बाईबल के ईश्वर को सामान्य व्यक्तियों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

९. क्रोधी ईश्वर

१. तब यहोशू ने उससे कहा, तूने हमें क्यों कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा। तब सब इस्राएलियों नें उसको पत्थरवाह किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए। और उन्होंने उसके ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक बना है; तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शान्त हो गया। –यहोशू (७ : २५,२६)

२. मुझे अपने लोगों की चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है; क्या यहोवा सिय्योन में नहीं हैं? क्या उसका राजा उसमें नहीं? उन्होंने क्यों मुझको अपनी खोदी हुई मूरतों और परदेश की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा क्यों क्रोध दिलाया है? –यिर्मयाह (८ : १९)

क्रोध प्रतिशोध की भावनाएँ अल्पज्ञ जीवों में देखी जाती हैं सर्वज्ञ

ईश्वर में नहीं।

१०. विरोधियों का निन्दक ईश्वर

१. यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उसको पत्थरवाह करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए। –लैव्यव्यवस्था (२४ : १६)

२. यों इस्राएली बालपौर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; और यहोवा ने मूसा से कहा, प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिए धूप में लटका दे, जिससे मेरा भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर हो जाए।
–गिनती (२५ : ३,४)

३. यदि तेरा सगा भाई..... पीछे सब लोगों के हाथ उठे।
–व्यवस्थाविवरण (१३ : ६–९)

४. चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्त्वज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर (लूट) न कर ले,जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार हैं, पर मसीह के अनुसार नहीं। –कुलुस्सियों (२ : ८)

गैर मतानुयायियों के प्रति बाईबल के ईश्वर के विचार अशान्ति एवं धार्मिक उन्माद को फैलानेवाले हैं।

११. रोगोत्पादक ईश्वर

१. तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया। तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मरे कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। –गिनती (१२ : ९,१०)

२. और यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा, कि वह मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और अलग एक घर में रहता था। २ –राजा (१५ : ५)

३. मैंने तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी (Plague) से मारा होता; –निर्गमन (९ : १५)

इसी प्रकार दस बार मरी (Plague) के फैलने के उदाहरण निर्गमन

में पाए जाते हैं।

अपने व्यक्तिगत इर्ष्या–द्वेष से ग्रस्त होकर प्रतिद्वंद्वियों को रोगग्रस्त करना बाईबल के ईश्वर को अल्पज्ञ एकदेशी ही सिद्ध करता है।

१२. नीचा दिखाता ईश्वर

इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन कनान के राजा याबिन को इस्राएलियों के साम्हने नीचा दिखाया। –न्यायियों (४ : २३)

१३. ईश्वर का उकता जाना

यहोवा का कहना है, तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं ? मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं। –यशायाह (१ : ११)

१४. ईश्वर का विश्राम करना

और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशिष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया। –उत्पत्ति (२ : ३)

१५. ईश्वर का परतन्त्र होना

यीशू ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। –यूहन्ना (१४ : ६)

१६. बेईमान ईश्वर

और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष (ईश्वर) आकर पह फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। जब उसने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। –उत्पत्ति (३२ : २४,२५)

बाईबल वर्णित ईश्वर तो मानव से भी कमजोर निकला जो उसे मल्लयुद्ध में भी हरा नहीं पाया।

१७. ईश्वर का वृक्षों को शाप देना

दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसको भूख लगी।और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देख कर निकट गया, कि क्या जाने

उसमें कुछ पाए, पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था। इस पर उसने उससे कहा अब से कोई तेरा फल कभी न खाए। और उसके चेले सुन रहे थे। –मरकुस (११ : १२–१४)

बिनमौसम फलों की अपेक्षा करनेवाला ईश्वर कितना अज्ञानी है? भूख लगनेवाला ईश्वर शरीरधारी सिद्ध होता है। अंजीर के फल तो आज भी खाए जाते हैं। इससे बाईबल गपोड़ों की पुस्तक सिद्ध होती है।

१८. ईश्वर द्वारा अव्यवहारिक उपदेश

१. **अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। –मत्ती (६ : १९)**

क्या मसीही इस उपदेश का आदर करते हुए धनसंग्रह करना बन्द कर देंगे?

२. **यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। –मत्ती (५ : २९,३०)**

ऐसा ही विवरण मत्ती (१८ : ८,९) व मरकूस (९ : ४३–४७) में भी दिया गया है।

आज तक कितने बाईबल के माननेवालों ने अपनी आंख या हाथ आदि को काट कर बाईबल के ईश्वर की आज्ञा का पालन किया है?

३. **क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। –इब्रानियों (१२ : ६)**

१९. ईश्वर द्वारा पक्षपात

३. **फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून से कह, कि तेरे वंश की पीढ़ी–पीढ़ी में जिस किसी के कोई भी दोष हों वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिए समीप न आए। कोई क्यों न हो जिसमें दोष हो वह समीप न आए, चाहे वह अन्धा हो, चाहे लंगड़ा, चाहे नकचपटा हो, चाहे उसके कुछ अधिक अंग हों, वा उसका पांव, वा हाथ टूटा हो, वा वह कुबड़ा, वा बौना हो, वा उसकी आंख में दोष हो, वा उस मनुष्य के चाईं वा खजुली हो, वा उसके अंड पिचके हों; हारून याजक के वंश में से जिस किसी में कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने के लिए समीप न आए। –लैव्यव्यवस्था (२१ : १६–२१)**

देखिए मात्र शारीरिक कमियों के आधार पर बाईबल का ईश्वर मनुष्यों के साथ कैसा पक्षपातपूर्ण व्यवहार करता है।

२०. असफल ईश्वर

और यहोवा यहूदा के साथ रहा, इसलिए उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे। इसलिए यह उन्हें न निकाल सका। –न्यायियों (१ : १९)

परमात्मा को एकदेशी मानने पर तो यह दुर्गति होनी ही थी। बड़े–बड़े चमत्कार करनेवाले ईश्वर का लोहे के रथों के आगे असफल होना बुद्धिगम्य नहीं लगता।

वेदों में ईश्वर

१. **न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।।१६।।**
न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।।१७।।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।।१८।।
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव।।२०।।
सर्वे अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति।।२१।। –अथर्ववेद (१३/४)

परमेश्वर एक ही है। उससे भिन्न न कोई दूसरा, तीसरा, चौथा परमेश्वर है। न पांचवा, न छठा, न कोई सातवां ईश्वर है। न आठवां, न नवमां, न कोई दशवां ईश्वर है। इस प्रकार एक ईश्वर का निश्चय कराके वेदों में दूसरे ईश्वर के होने का सर्वथा निषेध किया है। वही ब्रह्म

सबको अन्तर्यामिता से प्राप्त होकर जड़ और चेतन दोनों प्रकार के सब जगत् को देखता है, उसका द्रष्टा कोई नहीं है। और न यह किसी का दृष्य हो सकता है। किन्तु वह सदा एक अद्वितीय ही है। उससे भिन्न दूसरा कोई भी नहीं। अर्थात् उसके एकपने में भी भेद नहीं, और वह शून्य भी नहीं। किन्तु जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त, एकरस परमात्मा है, वही सदा से सब जगत् में परिपूर्ण होके, पृथ्वी आदि सब लोकों को रचके अपने सामर्थ्य से धारण कर रहा है। तथा वह अपने काम में किसी का सहाय नहीं लेता। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है।

२. **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।**
यो ऽसावादित्ये पुरुषः सो ऽसावहम्। ओ ३ म् खं ब्रह्म।

–यजुर्वेद (४०/१७)

सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है- हे मनुष्यों जो मैं यहां हूंवही अन्यत्र सूर्यादि में और जो अन्यत्र सूर्यादि में हूं वही यहां हूं। सर्वत्र परिपूर्ण और आकाश के समान व्यापक मेरे से बड़ा अन्य कोई नहीं है। मैं ही सबसे महान् हूं। उत्तम लक्षणोंवाले पुत्र के समान मेरा प्राणप्रिय अपना नाम ओ३म् है। जो प्रेम और सत्याचरण के द्वारा मेरे शरण आता है, उसकी अविद्या को मैं अन्तर्यामी रूप से नष्ट करके, उसकी आत्मा को प्रकाशित करके, उसे श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाववाला बनाकर, उसमें सत्यमय आचरण स्थापित करके, उसे योग से उत्पन्न होने वाला शुद्ध विज्ञान देकर और सब दुःखों से पृथक् करके मोक्ष सुख प्राप्त कराता हूं।

३. **यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।**
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

–अथर्ववेद (१०/८/१)

जो परमेश्वर भूतकाल जो व्यतीत हो गया है, चकार से दूसरा जो वर्तमान है, और तीसरा भविष्यत् जो होनेवाला है, इन तीनों कालों के बीच में जो कुछ होता है, उन सब व्यवहारों को वह यथावत् जानता है। तथा जो सब जगत् को अपने विज्ञान से ही जानता, रचता, पालन, लय करता और संसार के सब पदार्थों का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी है, सब

कालों के ऊपर विराजमान है। जिसका सुख ही केवल स्वरूप है जो कि मोक्ष और व्यवहार सुख का भी देनेवाला है, जिसको लेशमात्र भी दुःख नहीं होता, जो आनन्दघन परमेश्वर है, ज्येष्ठ अर्थात् सबसे बड़ा, सब सामर्थ्य से युक्त ब्रह्म जो परमात्मा है, उसको हमारा नमस्कार प्राप्त हो।

४. **विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पवात्।**
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।

–ऋग्वेद (१०/१८/३)

जिसके आंख सर्वत्र हैं, और जिसके सर्वत्र मुख हैं, जिसके बाहु सर्वत्र कार्य कर रहे हैं, और सर्वत्र जिसके पांव हैं। वह पाप-पुण्यरूप बाहु के द्वारा उत्पन्न प्रापणीय फलों से जीवों को गति देता है। वही दिव्यगुणयुक्त प्रभु द्युलोक और पृथ्वी को उत्पन्न करता है। अर्थात् एक ही देव इस सब विश्व को उत्पन्न करके चला रहा है। उसकी सम्पूर्ण शक्तियां सर्वत्र एक जैसी हैं। सबको कर्मानुसार फल देती हैं।

५. **इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।**
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

–ऋग्वेद (१/१६४/४६)

एक ही ईश्वर इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, यम, मातरिश्वा आदि अनेक नामों से जाना जाता है। अर्थात् इन नामों से दस एक ईश्वर का ही ग्रहण होता है।

६. **यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे।।** –अथर्ववेद (१०/७/२७)

जिसके (परमात्मा के) सहारे से तैंतीस देवता (आठ वसु, एकादश रुद्र, बारह आदित्य, इन्द्र तथा प्रजापति) अपने-अपने शरीरों का सेवन करते हैं, अर्थात् अपनी-अपनी सत्ता लाभ करते हैं।

७. **न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।।** –यजुर्वेद (३२/३)

जिसका महान् नाम एवं प्रसिद्ध यश है उसकी कोई प्रतिमा नहीं है। अर्थात् एक अद्वितीय ब्रह्म निराकार है।

८. **न कि इन्द्र त्वदुत्तरं ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। नक्येवं यथा त्वम्।।**

–सामवेद पूर्वार्चिक (३/१/१०)

हे अज्ञान नाशक विज्ञानैश्वर्यसम्पन्न प्रभो ! न तो कोई तुझसे श्रेष्ठ है, और ना ही कोई ज्येष्ठ है। और ना ही कोई ऐसा है जैसा कि तू।

अर्थात् परमात्मा अनुपम है।

९. **अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवे ऽव तस्थे कदाचन।**
सोममिन्मा सुन्वतो याचता वसुन मे पूरवः सख्ये रिषाथन।
–ऋग्वेद (१०/४८/५)

मैं ऐश्वर्यसम्पन्न, सर्वप्रकाशक, कभी किसी से पराजय को प्राप्त नहीं होता। और ना ही कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं, अर्थात् अमर हूं। धनादि ऐश्वर्य का दाता मैं ही हूं। धनादि ऐश्वर्य के लिए यत्न करते हुए तुम विद्यादि धन को मुझ ईश्वर से ही मांगो। हे विज्ञानी भक्तों! मेरी मित्रता में तुम्हें कष्ट न होगा।

१०. **सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः।।** –अथर्ववेद (१०/८/२३)

विद्वान् लोग इस परमात्मा को सनातन कहते हैं। किन्तु वर्तमान में वह नया भी रहता है अर्थात् वह नित्य होता हुआ सदा युवा है।

८. ईश्वर के दूतों द्वारा नरसंहार

१. और उसने उसके रहनेवालों को निकालकर आरों से दो–दो टुकड़े कराया, और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाए, और लोहे की कुल्हाडियों से उन्हें कटवाया, और ईंट के पजावे में से चलवाया, और अम्मोनियों के सब नगरों से भी उसने ऐसा ही किया। तब दाऊद समस्त लोगों समेत यरूशलेम को लौट आया।
–२ शमूएल (१२ : ३१)

२. तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिश्तियों के दो सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी लड़कियों को ले आया, और वे राजा को गिन–गिन कर दी गई, इसलिए कि वह राजा का दामाद हो जाए। और शाऊल ने अपनी बेटी मीकल को उसे ब्याह दिया।
–१ शमूएल (१८ : २७)

३. तब अहाब के घराने के जितने लोग इस्राएल में रह गए, उन सभों को और उसके जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे, उन सभों को येहू ने मार डाला, यहाँ तक कि उसने किसी को जीवित न छोड़ा। –२ राजा (१० : ११)

४. और यहोवा ने उसको भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ में कर दिया; और यहोशू ने उसको और उसमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा; और उसमें से किसी को भी जीवित न छोड़ा; और उसके राजा से वैसा ही किया जैसा उसने यरीहों के राजा के साथ किया था। –यहोशू (१० : ३०)

५. तब गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को चढ़ आया; और यहोशू ने प्रजा समेत उसको भी ऐसा मारा कि उसके लिए किसी को जीवित न छोड़ा। –यहोशू (१० : ३२)

६. और उन्होंने उसे ले लिया, और उसको और उसके राजा और सब गावों को और उनमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा, जैसा यहोशू ने एग्लोन से किया था वैसा ही उसने हेब्रोन में भी किसी को जीवित न छोड़ा, उसने उसको और उसमें के सब प्राणियों को सत्यानाश कर ड़ाला। –यहोशू (१० : ३७)

७. और यहोशू ने कादेशबर्ने से ले अज्जा तक, और गिबोन तक के सारे गोशेन देश के लोगों को मारा। –यहोशू (१० : ४१)

८. एलिय्याह ने उनसे कहा, बाल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी छूटने न पाए; तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला।
–१ राजा (१८ : ४०)

९. तब उसने पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको शाप दिया, तब जंगल में से दो रीछिनियों ने निकलकर उनमें से बयालीस लड़के फाड़ डाले। –२ राजा (२ : २४)

१०. और उसी समय हमने उसके सारे नगर ले लिए, और एक–एक बसे हुए नगर का स्त्रियों और बाल–बच्चों समेत यहाँ तक सत्यानाश किया कि कोई न छूटा। –व्यवस्थाविवरण (२ : ३४)

११. शमूएल ने कहा, जैसे स्त्रियाँ तेरी तलवार से निर्वंश हुई हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी। तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के साम्हने टुकड़े–टुकड़े किया।
–१ शमूएल (१५ : ३३)

जिस ईश्वर के दूत इतने क्रूर हों, वह जाति कितनी हिंसक एवं बर्बर होगी इसकी पाठक ही स्वयं कल्पना कर लें।

वेदों में अहिंसा एवं भाईचारा

१. **दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।**
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।
–यजुर्वेद (३६/१८)

हे अविद्यारूपी अन्धकार के निवारक जगदीश्वर वा विद्वान्! जिससे सब प्राणि मित्र की दृष्टि से सम्यक् मुझको देखें, मैं मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को सम्यक् देखूं। इस प्रकार हम सब लोग परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। इस विषय में हमको दृढ़ कीजिए।

२. **सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।**
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। –अथर्ववेद (३/३०/१)

सहृदयता अर्थात् प्रेमपूर्ण हृदय, सांमनस्य अर्थात् मन शुभ विचारों से पूर्ण होना और परस्पर निवैरता तुम्हारे लिए मैं करता हूं। तुम्हारे में से हर एक परस्पर प्रीति करे, जैसे गौ उत्पन्न हुए बछड़े से प्यार करती है।

३. **सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।**
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु।।
–अथर्ववेद (३/३०/७)

परस्पर सेवा करने के भाव से तुम सबको साथ मिलकर पुरुषार्थ करनेवाले, उत्तम मनवाले और समान नेता की आज्ञा में कार्य करनेवाले बनाता हूं। अमृत की रक्षा करनेवाले देवों के समान सायंकाल और प्रातःकाल तुम्हारे प्रसन्नचित्त रहें।

४. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।। –ऋग्वेद (१०/१९१/२)

हे भक्तों तुम सब एक होकर प्रगति करो। उत्तम प्रकार से संवाद करो। तुम सबके मन उत्तम संस्कारों से युक्त हों तथा पूर्वकालीन उत्तम ज्ञानी और व्यवहारचतुर लोग जिस प्रकार अपने कर्तव्य का भाग करते

आए हैं, उसी प्रकार तुम भी अपने कर्तव्य करते जाओ।

५. **मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः। मा हृणानस्य मन्यवे।।**
–ऋग्वेद (१/२५/२)

ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! जो अल्पबुद्धि अज्ञानी जन अपनी अल्पज्ञता से तुम्हारा अपराध करें तुम उसको दण्ड ही देने को मत प्रवृत्त होवो। और वैसे ही जो अपराध करके लज्जित हो, अर्थात् तुमसे क्षमा करवावे तो उस पर क्रोध मत करो, किन्तु उसका अपराध सहो।

६. बाईबल और नियोग

१. **जब कई भाई संग रहते हों, और उनमें से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी करले, और उससे पति के भाई का धर्मपालन करे। और जो पहिला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे, जिससे कि उसका नाम इस्राएल में से मिट न जाए। –व्यवस्थाविवरण (२५ : ५,६)**

२. **अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी, और उसके हाजिरा नाम की एक मिस्री लौंडी थी। सो सारै ने अब्राम से कहा, देख यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है सो मैं तुझसे बिनति करती हूं कि तू मेरी लौंडी के पास जा, सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए। –उत्पत्ति (१६ : १,२)**

३. **और यहूदा ने तमार नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर का विवाह कर दिया। परन्तु यहूदा का वह जेठ एर यहोवा के लेखे में दुष्ट था, इसलिए यहोवा ने उसको मार डाला। तब यहूदा ने ओनान से कहा, अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न कर।**
–उत्पत्ति (३८ : ६,७)

४. शराब के प्रभाव में लूत द्वारा अपनी दोनों बेटियों को गर्भवती करना नियोग नहीं अपितु व्यभिचार है। सन्दर्भ –उत्पत्ति (१९ : ३०-३६)

वेदों में नियोगव्यवस्था

१. **विधवेव देवरं मर्य्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ।।**

–ऋग्वेद (१०/४०/२)

जैसे विधवा स्त्री देवर के साथ सन्तानोत्पत्ति करती है, वैसे तुम भी करो। विधवा का जो दूसरा पति होता है उसको देवर कहते हैं। इसमें यह नियम होना चाहिए कि द्विजों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों में दो–दो सन्तानों के लिए नियोग होना और शूद्रकुल में पुनर्विवाह मरणपर्यन्त के लिए होना चाहिए। परन्तु माता, गुरुपत्नी, भगिनी, कन्या, पुत्रवधू आदि के साथ नियोग करने का सर्वथा निषेध है। यह नियोग शिष्ट पुरुषों की सम्मति और दोनों की प्रसन्नता से हो सकता है। जब दूसरा गर्भ रहे तब नियोग छूट जाए, और जो कोई इस नियम को तोड़े उसको द्विजकुल में से अलग करके शूद्रकुल में रख दिया जाए।

२. **इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्।**
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि।।

–अथर्ववेद (१८/३/१)

जो विधवा नारी पतिलोक अर्थात् पतिसुख की इच्छा करके नियोग किया चाहे तो अर्थात् वह पति मर जाने के अनन्तर दूसरे पति को प्राप्त हो। इस मन्त्र में स्त्री और पुरुष को परमेश्वर आज्ञा देता है कि हे पुरुष! जो इस सनातन नियोग धर्म की रक्षा करनेवाली स्त्री है, उसके सन्तानोत्पत्ति के लिए धर्म से वीर्यदान कर, जिससे वह प्रजा से युक्त होके आनन्द में रहे। तथा स्त्री के लिए भी आज्ञा है कि जब किसी पुरुष की स्त्री मर जाए और वह सन्तानोत्पत्ति किया चाहे, तब स्त्री भी उस पुरुष के साथ नियोग करके उसको प्रजायुक्त कर दे। इसलिए मैं आज्ञा देता हूं कि तुम मन–कर्म–शरीर से व्यभिचार मत करो किन्तु धर्मपूर्वक विवाह और नियोग से सन्तानोत्पत्ति करते रहो।

३. **उदीर्ध्व नार्य्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि।**
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूव।

–ऋग्वेद (१०/१८/८)

हे स्त्री अपने मृतक पति को छोड़के इस जीवलोक में जो तेरी

इच्छा हो तो दूसरे पुरुष के साथ नियोग करके सन्तानों को प्राप्त हो। नहीं तो ब्रह्मचर्याश्रम में स्थिर होकर कन्या और स्त्रियों को पढ़ाया कर। और जो नियोगधर्म में स्थित हो तो जब तक मरण न हो तब तक ईश्वर का ध्यान और सत्यधर्म के अनुष्ठान में प्रवृत्त होकर जो कि तेरा हस्तग्रहण करनेवाला दूसरा पति है, उसकी सेवा किया कर और वह तेरी सेवा किया करे। और उसका नाम दिधिषु है। और वह तेरे सन्तान की उत्पत्ति करनेवाला हो और जो तेरे लिए नियोग किया गया हो वह तेरा सन्तान हो। और जो नियुक्त पति के लिए नियोग हुआ हो, तो वह सन्तान पुरुष का हो। इस प्रकार नियोग से अपने–अपने सन्तानों को उत्पन्न करके दोनों सदा सुखी रहो।

१०. निर्दोषों को सजा

१. **कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पाए; किन्तु दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए। – व्यवस्थाविवरण (२३ : २)**
२. **यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा।**
–२ शमूएल (१२ : ११)
३. **तौ भी तूने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा। –२ शमूएल (१२ : १४)**
४. **जो कोई मिले सो बेधा जाएगा, और जो कोई पकड़ा जाए, वह तलवार से मार डाला जाएगा। उनके बाल–बच्चे उनके साम्हने पटक दिए जाएँगे; और उनके घर लूटे जाएँगे, और उनकी स्त्रियाँ भ्रष्ट की जाएँगी। –यशयाह (१३ : १५,१६)**
५. **उनके पूर्वजों के अधर्म के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो, ऐसा न हों कि वे फिर उठकर पृथ्वी के अधिकारी हो जाएँ, और जगत् में बहुत से नगर बसाएँ। –यशयाह (१४ : २१)**

६. सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उनके विरुद्ध उठूंगा, और बाबुल का नाम और निशान मिटा डालूंगा, और बेटो-पोतों को काट डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है। -यशयाह (१४ : २२)

७. सामरिया दोषी ठहरेगा, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से बलवा किया है; वे तलवार से मारे जाएँगें, उनके बच्चे पटके जाएँगें, और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर डाली जाएँगीं। -होशे (१३ : १६)

८. प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं, और अपनी तलवार मियान में से खींच कर तुझ में से धर्मी और अधर्मी दोनों को नाश करूँगा। -यहेजकेल (२१ : ३)

दुनियाँ को शान्ति का सन्देश देने का दम्भ भरनेवाले ईसाइयों की पवित्र पुस्तक में मार-काट, आतंक, अन्याय एवं निर्दोषों को नाहक सजा देने की घटनाएँ यत्र-तत्र देखी जा सकती हैं।

छत्रपति शिवाजी ने अपने सैन्य द्वारा कल्याण के मुसलमान सुबेदार की बीबी युद्ध पश्चात् प्रस्तुत किए जाने पर उसे ससम्मान वस्त्राभूषणों के साथ वापस पतिगृह भेज दिया था। जबकि उसका पति शिवाजी का शत्रु था। इसी प्रकार वीर दुर्गादास राठौर ने अपने कट्टर विरोधी औरंगजेब के पोता-पोती को वापस कर दिया था। आर्य राजाओं का वेदानुकूल यह व्यवहार निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

वेदों में निरपराधों के प्राणों की रक्षा

१. अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।

-अथर्ववेद (१०/१/२९)

निरपराधी का वध करनेवाला भयंकर है। तू हमारे गाय, घोड़े और मनुष्यों का वध मत कर।

२. अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय।
मा नो अकृते पुरुहूत योनाविन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वय आसुतिं दाः।।

-ऋग्वेद (१/१०४/७)

न्यायाधीश आदि राजपुरुषों को चाहिए कि जिन्होने अपराध न किया हो उन प्रजाजनों को कभी ताड़ना न करे। सदा इनसे राज्यकर लेवे

तथा इनको अच्छी प्रकार पाल और उन्नत कर विद्या और पुरुषार्थ के बीच प्रवृत्त कराकर आनन्दित करावें। सभापति आदि के इस सत्य काम को प्रजाजनों को सदैव मानना चाहिए।

३. मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भेजनानि प्र मोषीः।
आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि।।

-ऋग्वेद (१/१०४/८)

हे सभापति ! तू अन्याय से किसी को न मारके, किसी भी धार्मिक सज्जन से विमुख न होकर, चोरी-चकारी आदि दोष रहित होकर जैसे परमेश्वर दया का प्रकाश करता है वैसे ही अपने राज्य के काम में प्रवृत्त हो। ऐसे वर्ताव के बिना प्रजा राजा से सन्तुष्ट नहीं हो पाती।

११. बाईबल की आज्ञा की अवहेलना

१. मेरे (यहोवा के) साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक-एक पुरुष का ख़तना हो। तुम अपनी-अपनी खलड़ी का ख़तना करा लेना, जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। पीढ़ी-पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिए जाएँ, ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जाएँ, तब उनका ख़तना किया जाए। -उत्पत्ति (१७ : १०-१२)

२. छः दिन तो काम-काज किया जाए, पर सातवां दिन परम विश्राम का दिन और यहोवा के लिए पवित्र है; इसलिए जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम-काज करे वह निश्चय मार डाला जाए।
-निर्गमन (३१ : १५)

३. छः दिन तो काम-काज किया जाए, परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिए पवित्र और यहोवा के लिए परम विश्राम का दिन ठहरे; उसमें जो कोई काम-काज करे वह मार डाला जाए। -निर्गमन (३५ : २)

ईसाई जगत कितना अवसरवादी हो गया है कि पवित्र बाईबल की

इन आज्ञाओं को वर्तमान में अनुपयोगी जान कर उन्हें छोड़ दिया गया है।

१२. बाईबल एवं मदिरापान

१. और नूह किसानी करने लगा, और उसने दाख की बारी लगाई। और वह दाखमधु (मदिरा) पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया। -उत्पत्ति (९ : २०,२१)

२. और अबशालोम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, कि सावधान रहो और जब अम्नोन दाखमधु पीकर नशे में आ जाए, और मैं तुमसे कहूं, अम्नोन को मारो, तब निडर होकर उसको मार डालना। क्या इस आज्ञा का देनेवाला मैं नहीं हूं? हियाव बांधकर पुरुषार्थ करना। -२ शमूएल (१३ : २८)

३. और वहाँ गाय-बैल, वा भेड़-बकरी, वा दाखमधु या मदिरा, वा किसी भाँति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रुपए से मोल लेकर अपने घराने समेत परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द करना। -व्यवस्थाविवरण (१४ : २६)

४. मैं तुमसे सच कहता हूं, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।
-मरकस (१४ : २५)

५. क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाखरस अब से कभी न पीऊँगा।
-लूका (२२ : १८)

६. मैं तुमसे कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ। -मत्ती (२६ : २९)

७. सेना का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिए ऐसी जेवनार करेगा जिसमें भाँति-भाँति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा। -यशायाह (२५ : ६)

देखिए बाईबल के अनुसार जीवन का सर्वोत्तम सुख शराब एवं

मांसाहार है। मानव की हर प्रकार की अधोगति का कारण मांसाहार एवं शराब है। उपरोक्त उदाहरणों से इसके समर्थक बाईबल की सभ्यता का हमें परिचय मिलता है।

न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। -१ कुरिन्थियों (६ : १०)

परस्पर विरोधी बातों को लिखना बाईबल की एक अन्य विशेषता है।

वेदों में मद्यपान निषेध

१. हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। उधर्न नग्ना जरन्ते।।
-ऋग्वेद (८/२/१२)

जैसे शराब दिल खोलकर पीनेवाले आपस में लड़ते है और जैसे वे नग्न होकर रातभर बड़बड़ाते हैं वे दुष्टबुद्धि लोग होते हैं।

२. अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरप्शिन्।
तनु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समह्यन् पीतये समस्मै।।
-ऋग्वेद (६/४०/२)

हे राजन्! जिसके खाने-पीने से बुद्धि और बल बढ़े, उसे तू खा और पी एवं खिला और पिला। उस वस्तु का पान मत करना और न कराना जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाए।

३. अयं मे पीत उदियर्त्ति वाचमयं मनीषामुषतीमजीगः।
अयं षडुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भवनं कच्चनारे।।
-ऋग्वेद (६/४७/३)

हे मनुष्यों! जिसके पीने से वाणी, बुद्धि और शरीर बढ़े तथा जिससे शास्त्रों का सम्यक् ग्रहण हो सके, उसी का सेवन करना चाहिए और बुद्धि आदि के नाशक पदार्थ का नहीं।

१३. पशुओं का बोलना

१. गदही ने बिलाम से कहा, क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझसे कभी ऐसा करती थी? वह बोला नहीं। -गिनती (२२ : ३०)

२. **यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था,और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? –उत्पत्ति (३ : १)**

बाईबल का ईश्वर इस साधारण से प्राकृतिक नियम से अनभिज्ञ है कि पशु–पक्षी मानव के समान बात नहीं कर सकते हैं। रामायण में सीता अपहरण के समय जटायु का वर्णन मिलता है। यह जटायु कोई पक्षी नहीं था अपितु मानव ही था। प्रमाण के लिए देखिए ....

१४. बाईबल में भूत–प्रेत व चुड़ैल आदि

१. **तू डाईन को जीवित न रहने देना। –निर्गमन (२२ : १८)**

२. **यदि कोई पुरुष वा स्त्री ओझाई वा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए; ऐसों का पत्थरवाह किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। –लैव्यव्यवस्था (२० : २७)**

३. **और मैं तेरे तन्त्र–मन्त्र का नाश करूंगा, और तुझमें टोनहे आगे न रहेंगे। –मीका (५ : १२)**

४. **यह सब उस अति सुन्दर वेश्या, और निपुण टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण हुआ, जो छिनाले के द्वारा जाति–जाति के लोगों को, और टोने के द्वारा कुल–कुल के लोगों को बेच डालती है। –नहूम (३ : ४)**

५. **जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा (भूत) थी उसके पास लाए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा; और भीड़ ने अचम्भा करके कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी देखा नहीं गया। –मत्ती (९ : ३२,३३)**

इस प्रकार भूत भगाने के कई उदाहरण बाईबल में यत्र–तत्र मिलते हैं।

ईसाइयों के चर्च द्वारा पिछले दो हजार वर्षों में हजारों निरपराधी स्त्रियों को पहले चुड़ैल कहकर प्रताड़ना दी गई फिर उन्हें जिन्दा जला दिया गया। मानवता के खिलाफ ऐसे नंगे नाच का उदाहरण इतिहास में

विरला ही मिलेगा। सन् १७९३ में जर्मनी के पोजनन नामक स्थान पर अन्तिम बार नारी को चुड़ैल के रूप में जलाया गया था।

भूतों का अस्तित्व ही सृष्टि के नियम के विरुद्ध है। मृतक शरीर का दाह करने पर उसकी संज्ञा भूत हो जाती है। अब उसका सप्रमाण शरीर लौटना असंभव है। सबसे ऊपर आज के सुशिक्षित ईसाई लोग इन गपोड़ों न केवल मानते हैं अपितु इनका प्रचार भी करते हैं। जिनके मन में भ्रम और भय होता है भूत केवल उनको ही दिखाई देते हैं अन्यों को नहीं। यह मनोविज्ञान का सिद्धान्त है– मन पर जैसे संस्कार होंगे, भयभीत होने पर अथवा मानसिक रोग की अवस्था में वैसा ही चित्र दिखाई देने लगेगा। अतः जादू–टोना, भूत–चुड़ैल आदि मनगढ़न्त गपोड़े हैं।

१५. बाईबल और मूर्तिपूजा

१. **और न तुम मूरत पूजनेवाले बना; जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने–पीने बैठे, और खेलने–कूदने लगे। –१ कुरिन्थियों (१० : ७)**

२. **इस कारण, हे मेरे प्यारो मूर्त्तिपूजा से बचे रहो।**
–१ कुरिन्थियों (१० : १४)

३. **क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी। –१ कुरिन्थियों (६ : ९)**

४. **तू अपने लिए कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।**
–व्यवस्थाविवरण (५ : ८)

बाईबल की आज्ञाओं को धत्ता बताकर वर्तमान में ईसाई मतानुयायी यीशू, मरियम तथा तमाम महिला एवं पुरुष संतों की मूर्तियों को गिरजे में पूजते हैं।

वेदों में मूर्तिपूजा निषेध

१. **न तस्य प्रतिमा अस्ति।।** –यजुर्वेद (३२/३)

जो सब जगत् में व्यापक है उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

२. **अज एकपात्**।। –ऋग्वेद (७/३५/१३)

परमात्मा जन्म-मरण आदि से रहित है।

३. **अकायमृस्नाविरं**।। –यजुर्वेद (४०/८)

परमात्मा स्थूल-सूक्ष्म-कारण किसी भी प्रकार के शरीरों को धारण नहीं करता, तथा नस-नाड़ियों के बन्धन में कभी नहीं आता।

४. **यत्त्वा तुरीयम्**।। –ऋग्वेद (१/१५/१०)

परमेश्वर स्थूल-सूक्ष्म-कारण नामक तीन प्रकार के जगत् से पृथक् वस्तु होने के कारण चौथा है।

१६. बाईबल एवं अप्रासंगिक दण्डव्यवस्था

१. यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उसको पत्थरवाह करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए। –लैव्यव्यवस्था (२४ : १६)

२. बाईबल में पराई स्त्री, सौतेली माता, पतोहू, सास, पशु, सगी अथवा सौतेली बहन, ऋतुमती स्त्री, मौसी, फूफी, चाची अथवा भयाहू आदि से व्यभिचार करनेवाले को न्यूनतम सजा मौत दी गई है।

सन्दर्भ –**लैव्यव्यवस्था (२० : ६-२१)**

३. जो अपने पिता वा माता को श्राप दे वह भी निश्चय मार डाला जाए। –निर्गमन (२१ : १७)

४. इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए; जो कोई उस दिन में कुछ काम-काज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किसा जाए। छः दिन तो काम-काज किया जाए, पर सातवां दिन परम विश्राम का दिन और यहोवा के लिए पवित्र है; इसलिए जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम-काज करे वह निश्चय मार डाला जाए। –निर्गमन (३१ : १४,१५)

५. छः दिन तो काम-काज किया जाए, परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिए पवित्र और यहोवा के लिए परम विश्राम का दिन ठहरे; उसमें जो कोई काम-काज करे वह मार डाला जाए। –निर्गमन (३५ : २)

६. और जब-जब निवास का कूच हो तब-तब लेविय उसको गिरा दें, और जब-जब निवास को खड़ा करना हो तब-तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। –गिनती (१ : ५१)

७. यदि कोई अपने दास वा दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए। परन्तु यदि वह दो एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए; क्योंकि वह दास उसका धन है। –निर्गमन (२१ : २०,२१)

८. जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके यहाँ पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।

–निर्गमन (२१ : १६)

९. और तीन महिने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला, कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया है; वरन् वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले आओ, कि वह जलाई जाए। –उत्पत्ति (३८ : २४)

१०. परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण को सन्ती (के बदले) प्राण का, और आंख की सन्ती आंख का, और दांत की सन्ती दांत का, और हाथ की सन्ती हाथ का, और पांव की सन्ती पांव का, और दाग की सन्ती दाग का, और घाव की सन्ती घाव का, और मार की सन्ती मार का दण्ड हो। –निर्गमन (२१ : २३-२५)

११. यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों, और उनमें से एक को पत्नी अपने पति को मारनेवाले के हाथ से छुड़ाने के लिए पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके गुप्त अंग को पकड़े तो उस स्त्री का हाथ काट डालना; उस पर तरस न खाना।

–व्यवस्थाविवरण (२५ : ११,१२)

जंगली, असभ्य, बर्बर प्रजातियों की सभ्यता ही ऐसे न्याय व्यवस्था

का विधान कर सकती है। उपरोक्त विवरण से सिद्ध है कि बाईबलकालीन सभ्यता निःसन्देह अशिक्षित, क्रूर एवं दानवीय लोगों की रही होगी।

१७. बाईबल और चमत्कार

१. **तब लोग अन्धे गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उसने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा। –मत्ती (१२ : २२)**

२. **तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो। और उनकी आंखे खुल गई और यीशू ने उन्हें चिताकर कहा, सावधान कोई इस बात को न जाने। –मत्ती (९ : २९)**

३. **और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तब तो गूंगा बोलने लगा और भीड़ ने अचंभा करके कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।। –मत्ती (९ : ३३)**

४. **और लड़की का हाथ पकड़कर उसने कहा, तलीता कूमी, जिसका अर्थ यह है कि हे लड़की, मैं तुझसे कहता हूं उठ। और लड़की तुरन्त उठकर चलने–फिरने लगी, क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए। –मरकुस (५ : ४१,४२)**

५. यीशु ने पांच रोटी और दो मछली से पांच हजार पुरुषों को भोजन कराया। सन्दर्भ **–मरकुस (६ : ३७–४४)**

६. **जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा, कि हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न कर। तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मरोड़कर, निकल आई, और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया। परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया।** –मरकुस (९ : २५–२७)

७. **और उनमें से एक ने महायाजक के दास पर चलाकर उसका**

दाहिना कान उड़ा दिया। इस पर यीशु ने कहा, अब बस करो, और उसका कान छूकर उसे अच्छा किया। –लूका (२२ : ५०,५१)

मरकुस (५ : २५–२९), मरकुस (१ : ३०,३१), मरकुस (६ : ३७–४४), मत्ती (१० : ८), मत्ती (८ : १६,१७) आदि स्थानों पर भूत भगाना, दुष्टात्मा निकालना, अन्धे को आंखे देना, मुर्दे को जीवित करना, रोगी को स्वस्थ करना आदि अनेकों चमत्कारों का वर्णन बाईबल में मिलता है।

यहां तक कि ईसाई जगत में तथाकथित संत की उपाधी भी तभी दी जाती है जब कोई भी ईसाई व्यक्ति किसी प्रकार के चमत्कार का दावा करता है। इतिहास साक्षी है कि झूठे दावे प्रस्तुत करके जनता को धोखा देकर कई ईसाई प्रचारकों को मरणोपरान्त संत की उपाधी दी गई है।

मोनिका बेसरा इसी प्रकार मदर टेरेसा के लिए चमत्कार का उदाहरण बन गईं थीं। जिसे धर्मान्तरण के कुचक्र को जारी रखने के लिए ईसाई जगत द्वारा खूब भुनाया जा रहा है।

अगर चमत्कार सम्भव है तो ईसाई देशों को सभी अस्पतालों को गिरजाघर में परिवर्तित कर देना चाहिए। जिससे सभी रोगी बिना दवा बिना ऑपरेशन बिना मंहगे एवं कष्टदायी इलाज के स्वस्थ हो सकें। जब कि ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण के लिए भारत जैसे देशों के पिछड़े इलाकों में अस्पतालों को प्रमुखता से उपयोग में ला रहे है। दूरदर्शन (टी.वी.) पर मसीही चैनलों द्वारा चमत्कार वाद का झूठा प्रचार करनेवालों के लिए ये अस्पताल अच्छी प्रयोग शालाएं हैं। क्या कोई पादरी अथवा बैनी हिन जैसे चमत्कार का दावा करनेवाले हमारे द्वारा निर्दिष्ट रोगी को यीशु के आशीर्वाद मात्र से स्वस्थ करने का साहस जुटा सकता है?

सृष्टिक्रम के नियमों के विरुद्ध किसी घटना को चमत्कार की संज्ञा दी जाती है। सृष्टिक्रम के नियमों का संस्थापक ईश्वर है। भला स्वयं ईश्वर अपने ही द्वारा स्थापित नियमों का उल्लंघन क्यों करेगा? इतना सा सच चमत्कारवाद की पोल खोल देता है।

१८. बाईबल की आपत्तिजनक बातें।

१. **और नूह किसानी करने लगा, और उसने दाख की बारी लगाई।**

और वह दाख मधु पीकर मतवाला हुआ। और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया। –उत्पत्ति (९ : २०,२१)

२. **और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है, पर मेरी माता की बेटी नहीं, फिर वह मेरी पत्नी हो गई। –उत्पत्ति (२० : १२)**

३. **इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुई। –उत्पत्ति (१९ : ३६)**

४. **जब इस्राएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ, कि रूबेन ने जाकर अपने पिता की रखेली बिल्हा के साथ कुकर्म किया, और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई। –उत्पत्ति (३५ : २२)**

५. ओनान ने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया। सन्दर्भ **–उत्पत्ति (३५ : ६–१०)**

६. बहु तमार द्वारा शेला ससुर से वेश्या समझकर व्यभिचार द्वारा गर्भवती होना। सन्दर्भ **–उत्पत्ति (३८ : १३–१८)**

७. **यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिए बेच डाले तो वह दासी की नाईं बाहर न जाए। यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्नी बनाए, और फिर उससे प्रसन्न रहे, तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे, उसका विश्वासघात करने के बाद उसे उपरी लोगों के हाथ बेचने का उसका अधिकार न होगा। –निर्गमन (२१ : ७,८)**

८. **और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उसमें के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना। परन्तु स्त्रियों और बाल–बच्चे, और पशु आदि जिनकी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिए रख लेना और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना। –व्यवस्थाविवरण (२० : १३,१४)**

९. **उसी वर्ष यहोवा ने अमोस के पुत्र यशायाह से कहा, जाकर अपनी कमर का टाट खोल और अपनी जूतियां उतार, सो उसने वैसा ही किया, और वह नंगा और नंगे पांव घूमता फिरता था। और यहोवा ने कहा, जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन वर्ष से उघाड़ा और**

नंगे पांव चलता आया है, कि मिस्र और कूश के लिए चिन्ह और चमत्कार हो। –यशयाह (२० : २,३)

१०. **क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे, और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हे मनुष्य ने नपुंसक बनाया, और कुछ नपुंसक ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने–आप को नपुंसक बनाया है, जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे। –मत्ती (१९ : १२)**

बाईबल की उपरोक्त घटनाओं को देखकर यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि बाईबल सभ्य लोगों के पढ़ने लायक पुस्तक नहीं है।

१९. बाईबल की असम्भव बातें।

१. यहोवा द्वारा मूसा की लाठी को सर्प में बदलना व उसकी छाती को कोढ़ के समान हिम सा श्वेत करना। सन्दर्भ– **निर्गमन (८ : २–७)**

२. सात मुहरों में से श्वेत, लाल, काला और पीले घोड़े का निकलना तथा छठवीं मुहर से एक बड़ा भूचाल आना और आकाश के तारे पृथ्वी पर गिनना। सन्दर्भ– **प्रकाशितवाक्य (६ : १–१३)**

३. सूर्य ओढ़े हुए व पांव तले चांद को रखी हुई स्त्री द्वारा प्रसव पीड़ा से चिल्लाना व सात सिर, दस सींग वाले बड़े लाल अजगर द्वारा बच्चे को निगलने के लिए खड़ा होना। सन्दर्भ– **प्रकाशितवाक्य (१२ : १–४)**

४. दाख रस के कुण्ड से इतना लोहू निकलना कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचना और सौ कोस तक बह जाना। सन्दर्भ– **प्रकाशितवाक्य (१४ : १९–२०)**

५. बाईबल के ईश्वर द्वारा स्वर्ग का सोने, बहुमूल्य पत्थर, माणिक, पुखराज एवं मोती आदि से निर्माण करना। सन्दर्भ– **प्रकाशितवाक्य (२१ : १८–२१)**

अगर स्वर्ग का यही लक्षण है तो धरती पर सर्वाधिक अमीरों को स्वर्गस्थ कहना चाहिए।

२०. बाईबल एवं ट्रिनिटी का सिद्धान्त

ईसाई जगत में ट्रिनिटी का सिद्धान्त प्रचलित है। जिसके अनुसार परस्पर विरुद्ध बातों को माना जाता है। जैसे ईश्वर एक है तथा तीन भी है। पिता पुत्र तथा पवित्र आत्मा इन तीनों की अलग सत्ताएं हैं फिर भी ईसाई जगत् अपने आप को एकेश्वरवाद का समर्थक बताता है। अगर हम इस सिद्धान्त के विषय में गहराई से विचारें तो हमारे समक्ष कुछ प्रश्न उपस्थित होते हैं-

१. तीनों में से सच्चा ईश्वर कौन है?
२. क्या ये शुरु में एक थे? अगर एक थे तो कब पृथक् हुए?
३. इन तीनों की अलग-अलग सत्ताएं कब से हैं?
४. अगर ईसा के जन्म के समय पृथक् हुए तो ईसा के मृत्यु पश्चात् एक हुए होंगे?
५. ये तीनों एक ही कार्य करते हैं या इनके काम बंटे हुए हैं?
६. परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को धरती पर भेजा, वह खुद क्यों नहीं आ सका? क्या इससे ईश्वर की सर्वव्यापकता संदिग्ध नहीं होती?
७. यदि ईसा परमेश्वर का इकलौता पुत्र था तो अन्य मानव क्या ईश्वर के सौतेले पुत्र हुए?
८. लोगों को स्वर्ग भेजने का अधिकार पुत्र को देकर क्या परमेश्वर इस बाबत परतन्त्र नहीं हुआ?
९. यहोवा इन तीनों में से एक है अथवा इनसे पृथक् है?

बाईबल के अनुसार इन प्रश्नों के उत्पत्ति के सन्दर्भ निम्न हैं-

ईश्वर एक है तीन नहीं- यशायाह (४५ : ५), (४६ : ९), २ इतिहास (६ : १४)।

ईश्वर तीन हैं एक नहीं- मरकुस (१० : २७), (१० : १८,१९), मत्ती (१६ : १७), (२८ : १९)।

यीशु ईश्वर का बेटा है- मत्ती (३ : १७), (१ : २७), मरकुस (५ : ७), (९ : ७)।

यीशु मनुष्य का बेटा है- मत्ती (११ : १९), (१२ : ४०), (१६ : १३)।

for there are the three that hear record in heavens . the father, the word and the holi ghost and these three are one. - john (5 : 7) and there three that bear witness in earth, the spirit and the water and the blood and these three agree in one. यह वाक्य पुराने बाईबलों में पाया जाता है जो नवीन संस्करणों में हटा दिया गया है क्योंकि यहां एक आत्मा स्वर्ग में व दूसरी धरती पर जिनकी दो अलग अलग सत्ताएं हैं, दर्शाया गया था।

खण्ड २

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।। यजुर्वेद (१६/७७)

अर्थ :- प्रजापति परमात्मा ने, सत्य जो धर्म और असत्य जो अधर्म है, जिसके प्रकट और गुप्त लक्षण हैं, उनको अपनी सर्वज्ञ विद्या के ठीक-ठीक विचार से देख के सत्य और झूठ को अलग-अलग किया है। सो तुम झूठ में अश्रद्धा और सत्य के आचरण में सब दिन प्रीति रखो।

-स्वामी दयानन्द सरस्वती

अंग्रेजी राज्य की अपेक्षा, स्वतन्त्र भारत में ईसाइयों के प्रचार को विशेष प्रगति से बढ़ता हुआ देख कर मैंने उनके धर्म ग्रन्थ बाईबल के परस्पर विरोधी वचन जनता के समक्ष रखकर यह दिखलाना चाहा है कि ईश्वरीय ज्ञान में तो क्या साधारण मनुष्य के भी वक्तव्य में भी ऐसा दोष नहीं होता है, जो कि ईसाइयों की मानी हुई धर्मपुस्तक में है। -लेखक

बाईबल के परस्पर विरोधी वचन

१. परमेश्वर अपने कार्यों से सन्तुष्ट है।

तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। -उत्पत्ति (१ : ३१)

मैं तुझे न छोडूंगा, मैं तुझ पर तरस खाऊंगा, न पछताऊंगा तेरे चाल-चलन और कामों ही के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। -यहेजकेल (२४ : १४)

परमेश्वर अपने कार्यों से असन्तुष्ट है।

और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। -उत्पत्ति (६ : ६)

२. परमेश्वर चुने हुए मन्दिरों में निवास करता है।

यों सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उसने बनाना चाहा,

उसमें उसका मनोरथ पूरा हुआ। -२ इतिहास (७ : ११)

परमेश्वर मन्दिरों में नहीं रहता।

परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा। -प्रेरितों के काम (७ : ४८)

३. परमेश्वर प्रकाश में रहता है।

और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति (प्रकाश) में रहता है, -१ तीमुथियुस (६ : १६)

परमेश्वर अन्धकार में रहता है।

तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अन्धकार में वास किए रहूंगा। -१ राजा (८ : १२)

बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं, उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है। -भजन संहिता (६७ : २)

४. परमात्मा को देखा व सुना जा सकता है।

फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा। -निर्गमन (३३ : २३)

और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। -निर्गमन (३३ : ११)

तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। -उत्पत्ति (३ : ८)

तब याकूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम पनीएल रखा कि परमेश्वर को आम्हने-साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।

-उत्पत्ति (३२ : ३०)

जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा। -यशायाह (६ : १)

तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनिए ऊपर गए, और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया।

-निर्गमन (२४ : ६,१०)

परमात्मा अदृष्य है और सुना भी नहीं जा सकता है।

परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा। -यूहन्ना (१ : १८)

और पिता जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है, तुमने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है।
-यूहन्ना (५ : ३७)

फिर उसने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।
-निर्गमन (३३ : २०)

और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है। -१ तीमुथियुस (६ : १६)

५. परमात्मा थक जाता है और विश्राम करता है।

क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवे दिन विश्राम करके अपना जी ठंडा किया। -निर्गमन (३१ : १७)

इसलिए मैं तुझ पर हाथ बढ़ाकर तेरा नाश करूंगा, क्योंकि, मैं तरस खाते-खाते उकता (थक) गया हूं। -यिर्मयाह (१५ : ६)

परन्तु तूने अपने पापों के कारण मुझ पर बोझ लाद दिया है, और अपने अधर्म के कामों से मुझे थका दिया है। -यशायाह (४३ : २४)

परमात्मा न थकता है और न विश्राम करता है।

यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वीभर का सिरजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।
-यशायाह (४० : २८)

६. ईश्वर सर्वव्यापक है और सब वस्तुओं को देखता जानता है।

यहोवा की आंखे सब स्थानों में लगी रहती हैं।
-नीतिवचन (३ : १५)

यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़करसमुद्र के पार जा बसूं, तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा। -भजन संहिता (१३६ : ६,१०)

क्योंकि ईश्वर की आंखे मनुष्य की चाल-चलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है। -अय्यूब (३४ : २१)

ईश्वर सर्वव्यापक नहीं है न तमाम वस्तुओं को देखता है और न जानता है।

जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे, तब इन्हें देखने के लिए यहोवा उतर आया। -उत्पत्ति (११ : ५)

इसलिए मैं उतरकर देखूंगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है, उन्होने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं, और न किया हो तो मैं उसे जान लूंगाा। -उत्पत्ति (१८ : २१)

तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। -उत्पत्ति (३ : ८)

७. ईश्वर मनुष्य के हृदय को जानता है।

हे प्रभु, तू जो सबके मन को जानता है। -प्रेरितों के काम (१ : २४)

क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है।
-भजन संहिता (४४ : २१)

तू मेरा उठना बैठना जानता है, और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल-चलन का भेद जानता है।
-भजन संहिता (१३६ : २,३)

ईश्वर लोगों के दिलों की बात जानने के लिए उनकी जांच करता है।

क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं? -व्यवस्थाविवरण (१३ : ३)

और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए,

और तेरी परीक्षा यह जान ले कि तेरे मन में क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं। -व्यवस्थाविवरण (८ : २)

८. ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

क्या मेरे लिए कोई भी काम कठिन है? -यिर्मयाह (३२ : २७)

हे प्रभु यहोवा, तूने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है, तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है।

-यिर्मयाह (३२ : १७)

यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सबकुछ हो सकता है। -मत्ती (१९ : २६)

ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है।

और यहोवा यहूदा के साथ रहा, इसलिए उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे। इसलिए यह उन्हें न निकाल सका। -न्यायियों (१ : १९)

९. ईश्वर अपरिवर्तनशील है।

क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उसपर छाया पड़ती है। -याकूब (१ : १७)

क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं, इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए। -मलाकी (३ : ६)

ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे? -गिनती (२३ : १९)

ईश्वर परिवर्तनशील है।

और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। -उत्पत्ति (६ : ५)

जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे

हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी और उनकी जो हानि करने की ठानी थी उसको न किया। -योना (३ : १०)

इसलिए इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि मैंने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूल पुरुष का घराना मेरे साम्हने सदैव चला करेगा, परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझसे दूर हो, क्योंकि जो मेरा आदर करे मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जाएंगे। -१ शमूएल (२ : ३०)

१०. ईश्वर न्यायी व पक्षपातरहित है।

जिस से यह प्रकट हो, कि यहोवा सीधा है, वह मेरी चट्टान है, और उसमें कुटिलता कुछ भी नहीं। -भजन संहिता (९२ : १५)

क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे? -उत्पत्ति (१८ : २५)

क्योंकि परमेश्वर किसी करा पक्ष नहीं करता। रामियो (२ : ११)

ईश्वर अन्यायी व पक्षपाती है।

क्योंकि जिसके पास है उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा, पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। -मत्ती (१३ : १२)

और अभी तक न तो बादल जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उसने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। इसलिए कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले पर बनी रहे। -रोमियो (९ : ११-१३)

तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं। और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं। -निर्गमन (२० : ५)

११. ईश्वर विपत्ति का निर्माता नहीं है।

क्योंकि परमेश्वर गड़बडी का नहीं परन्तु शान्ति का कर्ता है।

-१ कुरिन्थियों (१४ : ३३)

वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है।
–व्यवस्थाविवरण (३२ : ४)

क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। –याकूब (१ : १३)

ईश्वर विपत्ति पैदा करता है।

विपत्ति और कल्याण, क्या दानों परम प्रधान की आज्ञा से नहीं होते? –विलापगीत (३ : ३८)

मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं। –यशयाह (७ : ४५)

१२. जो मांगते हैं उन्हें ईश्वर उदारता से देता है।

पर यदि तुम से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सबको उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी। –याकूब (१ : ५)

ईश्वर अपनी देन रोक लेता है और उसकी प्राप्ति में रुकावट उत्पन्न करता है।

कि उसने उनकी आंखें अन्धी और उनका मन कठोर किया है, कहीं ऐसा न हो, कि वे आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं। –यूहन्ना (१२ : ४०)

क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दया न करे, वरन सत्यानाश कर डाले, इस कारण उसने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्राएलियों का साम्हना करके उनसे युद्ध किया। –यहोशू (११ : २०)

हे यहोवा, तू क्यों हमको अपने मार्गों से भटका देता, और हमारे मन ऐसे कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते?
–यशायाह (६३ : १७)

१३. ईश्वर जो उसे ढूंढते हैं उन्हें मिल जाता है।

क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो ढूंढता है वह

पाता है? –मत्ती (७ : ८)

और जो मुझको यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं वे मुझे पाते हैं।
–नीतिवचन (८ : १७)

ईश्वर जो उन्हें ढूंढते हैं उन्हें नहीं मिलता।

उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूंगी, वे मुझे यत्न से तो ढूंढेंगे, परन्तु न पाएंगे। –नीतिवचन (१ : २८)

जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुमसे मुख फेर लूंगा, तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तो भी मैं तुम्हारी न सुनूंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। –यशयाह (१ : १५)

उन्होंने दोहाई तो दी परन्तु उन्हें कोई भी बचानेवाला न मिला, उन्होंने यहोवा की भी दोहाई दी, परन्तु उसमें भी उनको उत्तर न दिया।
–भजन संहिता (१८ : ४१)

१४. ईश्वर शान्तिप्रिय है।

शान्ति का परमेश्वर तुम सबके साथ रहे। –रोमियो (१५ : ३३)

क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है,
–१ कुरिन्थियों (१४ : ३३)

ईश्वर लड़ाकू है।

वह मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है। –यशायाह (५१ : १५)

धन्य है यहोवा, जो मेरी चट्टान है, वह मेरे हाथों को लड़ने, और युद्ध करने के लिए तैयार करता है। –भजन संहिता (१४४ : १)

यहोवा योद्धा है, उसका नाम यहोवा है। –निर्गमन (१५ : ३)

१५. ईश्वर दयालु, कृपालु व नेक है।

जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।
–याकूब (५ : ११)

क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दुःख

देता है। -विलापगीत (३ : ३३)

क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।
-यहेजकेल (१८ : ३२)

यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है उसकी करुणा सदा की है। १ इतिहास (१६ : ३४)

यहोवा सभों के लिए भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है। -भजन संहिता (१४५ : ६)

वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें। -१ तिमुथियुस (२ : ४)

यहोवा भला और सीधा है, इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा। -भजन संहिता (२४ : ८)

हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है, और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। -१ योहन्ना (४ : ७)

ईश्वर निर्दयी, घातक व क्रूर है।

उनके विषय यहोवा यों कहता है कि मैं उनको उनकी भूमि में से उखाड़ डालूंगा, और यहूदा के घराने को भी उनके बीच में से उखाडूंगा।
-यिर्मयाह (१२ : १४)

मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊंगा, मैं तरस खाऊंगा और न दया करके उन को नष्ट होने से बचाऊंगा। -यिर्मयाह (१३ : १४)

और देश-देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सबों को सत्यानाश करना, उन पर तरस की दृष्टि न करना, और न उनके देवताओं की उपासना करना, नहीं तो तू फंदे में फंस जाएगा। -व्यवस्थाविवरण (७ : १६)

इसलिए अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश कर, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूधपिउवा, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊंट, क्या

गदहा सबको मार डाल। -१ शमूएल (१५ : ३)

फिर इस कारण से कि बेतशेनेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक के भीतर झांका था उसने उनमें से सत्तर मनुष्य, और फिर पचास हजार मनुष्य मार डाले, और वहां के लोगों ने इसलिए विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था। -१ शमूएल (६ : १९)

फिर जब वे इस्राएलियों के साम्हने से भागकर बेथोरोन की उतराई पर आए, तब अजेका पहुंचने तक यहोवा ने आकाश से बड़े-बड़े पत्थर उन पर बरसाए, और वे मर गए, जो ओलों से मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी। -यहोशू (१० : ११)

१६. ईश्वर का कोप क्षणिक व मन्द है।

यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है। -भजन संहिता (१०३ : ८)

क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षणभर का होता है।
-भजन संहिता (३० : ५)

ईश्वर का कोप बड़ा भयानक, बारबार होनेवाला और चिरकालीन है।

सो यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे-मारे फिराता रहा। -गिनती (३२ : १३)

और यहोवा ने मूसा से कहा, प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिए धूप में लटका दे, जिससे मेरा भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर हो जाए। -गिनती (२५ : ४)

और ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा। -निर्गमन (४ : २४)

१७. ईश्वर जली हुई भेटों की और पवित्र दिनों की आज्ञा देता है और प्रसन्न होता है।

अर्थात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिए प्रतिदिन चढ़ाना।
–निर्गमन (२९ : ३६)

उसी सातवें महिने का दसवां दिन प्रायश्चित्त का दिन माना जाए, वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा। और उसमें से तुम अपने-अपने जीव को दुःख देना और यहोवा का हव्य चढ़ाना।
–लैव्यव्यवस्था (२३ : २७)

और वह उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से धोए। तब याजक सबको वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि यहोवा के लिए सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे। –लैव्यव्यवस्था (१ : ९)

तब उस पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाना, वह तो यहोवा के लिए होम बलि होगा। वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिए हवन होगा।
–निर्गमन (२९ : १८)

ईश्वर पवित्र दिनों को व भेंटों को नापसन्द करता है।

तुम्हारे होमबलियों से मैं प्रसन्न नहीं हूं, और न तुम्हारे मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं। –यिर्मयाह (६ : २०)

क्या मैं बैल का मांस खाऊं, वा बकरों का लहू पीयूं? परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा, और परम प्रधान के लिए अपनी मन्नतें पूरी कर। भजन संहिता (५० : १४)

१८. ईश्वर मनुष्यों की बलि वर्जता है।

तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा व्यवहार न करना, क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घृणा करता है और वैरभाव रखता है, उन सभों को उन्होंने अपने देवताओं के लिए किया है, यहां तक कि अपने बेटे-बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिए अग्नि में डाल कर जला देते हैं। –व्यवस्थाविवरण (१२ : ३१)

ईश्वर मनुष्यों को भेंट की आज्ञा देता है और स्वीकार करता है।

उसने कहा, अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होम बलि करके चढ़ा।
–उत्पत्ति (२२ : २)

१९. ईश्वर किसी को परखता नहीं है।

क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। –याकूब (१ : १३)

ईश्वर मनुष्यों को परखता है।

इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, इब्राहीम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, कि हे इब्राहीम, उसने कहा, मैं यहां हूं।
–उत्पत्ति (२२ : १)

और यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का, और उसने दाऊद को इनकी हानि के लिए यह कहकर उभारा, कि इस्राएल और यहूदा की गिनती ले। –२ शमूएल (२४ : १)

२०. ईश्वर झूठ नहीं बोल सकता।

ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। –गिनती (२३ : १९)

ईश्वर झूठ बोलता है।

तब मैंने कहा, हाय, प्रभु यहोवा, तूने तो यह कहकर कि तुमको शान्ति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यरूशलेम को भी बड़ा धोखा दिया है। –यिर्मयाह (४ : १०)

तो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्तओं के मुंह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है। और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है। –१ राजा (२२ : २३)

तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी, सो शकेम के मनुष्य अबीमेलेक का विश्वासघात करने लगे। –न्यायियों (९ : २३)

और यदि भविष्यद्वक्ता ने धोखा खाकर कोई वचन कहा हो, तो

जानो कि मुझ यहोवा ने उस भविष्यद्वक्ता को धोखा दिया है।
–यहेजकेल (१४ : ९)

२१. ईश्वर मनुष्य को उसकी दुष्टता से नष्ट करता है।

तब यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं। –उत्पत्ति (६ : ७)

ईश्वर मनुष्य को उसकी दुष्टता के लिए नष्ट नहीं करेगा।

इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, कि मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है, तो भी जैसा मैंने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूंगा।
–उत्पत्ति (८ : २१)

२२. ईश्वर केवल एक ही है।

हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।
–व्यवस्थाविवरण (६ : ४)

और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं।
–१ कुरिन्थियों (८ : ४)

ईश्वर अनेक है।

फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले–बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। –उत्पत्ति (३ : २२)

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया।
–उत्पत्ति (१ : २७)

२३. चोरी की आज्ञा।

वरन तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी–अपनी पड़ोसिन, और अपने–अपने घर की पाहुनी से सोने चांदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम

उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना, इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे। –निर्गमन (३ : २२)

और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया, कि उन्होने जो–जो मांगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया। –निर्गमन (१२ : ३५)

चोरी का निषेध।

तुम चोरी न करना, और एक दूसरे से न तो कपट करना, और न झूठ बोलना। –लैव्यव्यवस्था (१९ : ११)

तू चोरी न करना। –निर्गमन (२० : १५)

२४. सारी धर्मपुस्तक ईश्वर प्रेरित है।

हरेक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। –२ तीमुथियुस (३ : १६)

धर्मपुस्तक का कुछ भाग ईश्वरप्रेरित नहीं है।

इस बेधडक घमण्ड से बोलने में जो कुछ मैं कहता हूं वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानों मूर्खता से ही कहता हूं।
–२ कुरिन्थियों (११ : १७)

२५. वध की आज्ञा।

उसने उनसे कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि अपनी–अपनी जांघ पर तलवार लटका कर छावनी से एक निकास से दूसरे निकास तक घूम–घूम कर अपने–अपने भाइयों, संगियों, और पड़ोसियों को घात करो। –निर्गमन (३२ : २७)

वध का निषेध।

तू खून न करना। –निर्गमन (२० : १३)

जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।

–१ युहन्ना (३ : १५)

२६. खून बहाने वाला जरूर मारा जाएगा।

और निश्चय मैं तुम्हारा लोहू अर्थात् प्राण का पलटा लूंगा, सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूंगा, मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक-एक के भाई-बन्धु से लूंगा। –उत्पत्ति (९ : ५)

खून बहाने वाला न मारा जाएगा।

तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया। और यहोवा ने कैन के लिए एक चिन्ह ठहराया ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले। –उत्पत्ति (४ : ८,१५)

२७. मूर्तियों का बनाने का निषेध।

तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।

–निर्गमन (२० : ४)

मूर्तियों को बनाने की आज्ञा।

और सोना ढालकर दो करूब बनाकर.... प्रायश्चित्त कर ढकना उनसे ढंपा रहे, और उनके मुख आम्हने-साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर है। –निर्गमन (२५ : १८-२०)

२८. दासता और अत्याचार की आज्ञा।

इसलिए उसने कहा कनान शापित हो, वह अपने भाई-बन्धुओं के दासों का दास हो। –उत्पत्ति (९ : २५)

मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूंगा, और वे उनको शबाइयों के हाथ बेच देंगे जो दूर देश के रहनेवाले हैं, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है। –योएल (३ : ८)

दासता और अत्याचार का निषेध।

जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके यहां पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।

–निर्गमन (२१ : १६)

२९. क्रोध का अनुमोदन।

तब उसने पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको शाप दिया, तब जंगल में से दो रीछिनियों ने निकलकर उनमें से बयालिस लड़के फाड़ डाले। –२ राजा (२ : २४)

क्रोध तो करो पर पाप मत करो। –इफिसियों (४ : २६)

क्रोध का निषेध।

क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना। –नीतिवचन (२२ : २४)

अपने मन में उतावली से क्रोधित न हो, क्योंकि क्रोध मूर्खों ही के हृदय में रहता है। –सभोपदेशक (७ : ९)

३०. मनुष्यों के अच्छे कर्म दिखाई देने चाहिएं।

उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। –मत्ती (५ : १६)

मनुष्यों के अच्छे कर्म दिखाई न दे।

तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। –मत्ती (६ : १)

३१. यीशु ने सहिष्णुता की शिक्षा दी।

परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। –मत्ती (५ : ३९)

क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।

–मत्ती (२६ : ५२)

यीशु ने असहिष्णुता सिखाकर स्वयं उसका प्रदर्शन किया।

जिसके पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले।

–लूका (२२ : ३६)

और रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसा बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया। –यूहन्ना (२ : १५)

३२. यीशु की अनुयायियों को उपदेश कि मरने से न डरो।

परन्तु मैं तुमसे जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो। –लूका (१२ : ४)

यीशु स्वयं मारे जाने से डरता फिरा।

इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिए वह यहूदिया में फिरना न चाहता था। –यूहन्ना (७ : १)

३३. सबथ के रोज (सातवें रोज) कोई काम न किया जाए।

छः दिन तो कामकाज किया जाए पर सातवां दिन परम विश्राम का दिन और यहोवा के लिए पवित्र है, इसलिए जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम–काज करे वह निश्चय मार डाला जाए। –निर्गमन (३१ : १५)

यीशु ने सबथ के दिन काम किया।

इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे–ऐसे काम सबथ के दिन करता था। –यूहन्ना (५ : १६)

३४. बप्तिस्मे की आज्ञा।

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बप्तिस्मा दो। –मत्ती (२८ : १६)

बप्तिस्मे का निषेध।

क्यों कि मसीह ने मुझे बप्तिस्मा देने को नहीं वरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है। –१ कुरिन्थियों (१ : १७)

३५. हर प्रकार के जानवर को खाने की आज्ञा।

सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे, जैसा तुमको हरे–हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सबकुछ देता हूं। –उत्पत्ति (९ : ३)

जो कुछ कस्साइयों के यहां बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो। –१ कुरिन्थियों (१० : २५)

हर प्रकार के जानवरों को खाने की आज्ञा नहीं है।

परन्तु पागुर करनेवाले वा चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को, अर्थात् ऊंट, खरहा और शापान को न खाना, क्योंकि ये पागुर तो करते हैं परन्तु चिरे खुर के नहीं होते, इस कारण वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। –व्यवस्थाविवरण (१४ : ७)

३६. शपथ खाने की आज्ञा।

कि जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने, वा अपने आप को वाचा से बांधने के लिए शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले, जो कुछ उसके मुंह से निकला हो उसके अनुसार वह करे। –गिनती (३० : २)

और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर के नाम से शपथ खाएगा। –यशायाह (६५ : १६)

और परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा। –इब्रानियों (६ : १३)

शपथ खाने का निषेध।

परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। –मत्ती (५ : ३४)

३७. विवाह का अनुमोदन व आज्ञा।

कि इस कारण मनुष्य अपने माता–पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एकतन होंगे। –मत्ती (१९ : ५)

और परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे (आदम और

हव्वा) कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ। -उत्पत्ति (१ : २८)

फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए। -उत्पत्ति (२ : १८)

विवाह सब में आदर की बात समझी जाए। -इब्रानियों (१३ : ४)

विवाह का निषेध।

परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं के विषय में कहता हूं, कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूं। -१ कुरिन्थियों (७ : ८)

३८. स्त्री के त्याग की आज्ञा।

यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह लें, और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिए त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में लेकर उसको अपने घर से निकाल दे। -व्यवस्थाविवरण (२४ : १)

फिर यदि वह (सुन्दर स्त्री) तुझको अच्छी न लगे, तो जहां वह जाना चाहे वहां उसे जाने देना। -व्यवस्थाविवरण (२१ : १०)

स्त्री के त्याग का विरोध।

परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उससे व्यभिचार करवाता है, और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है। -मत्ती (५ : ३२)

३९. व्यभिचार की आज्ञा।

परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुंह न देखा हो उन सभों को तुम अपने लिए जीवित रखो। -गिनती (३१ : १८)

जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले पहिल बात की, तब उसने होश से यह कहा, जाकर एक वेश्या को एक पत्नी बना ले, और उसके कुकर्म के लड़केवालों को अपने लड़केवाले कर ले। -होशे (१ : २)

व्यभिचार का निषेध।

तू व्यभिचार न करना। -निर्गमन (२० : १४)

विवाह सबमें आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। -इब्रानियों (१३ : ४)

४०. बहन से विवाह व व्यभिचार की निन्दा।

शापित हो वह जो अपनी बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उससे कुकर्म करे। -व्यवस्थाविवरण (२७ : २२)

और यदि कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी सगी बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, और उसकी बहिन भी उसका नग्न तन देखे, तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आंखों के साम्हने नाश किए जाएं। -लैव्यव्यवस्था (२० : १७)

भाई-बहन के विवाह में ईश्वर का आशीर्वाद।

और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है, पर मेरी माता की बेटी नहीं, फिर वह मेरी पत्नी हो गई। -उत्पत्ति (२० : १२)

४१. अपने भाई की विधवा से विवाह की आज्ञा।

जब कई भाई संग रहते हों, और उनमें से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए, उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी करले, और उससे पति के भाई का धर्म पालन करे। और पहिला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे। -व्यवस्थाविवरण (२५ : ५)

अपने भाई की विधवा से विवाह का निषेध।

और यदि कोई अपनी भौजी वा भयाहू को अपनी पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम जानना। -लैव्यव्यवस्था (२० : २१)

४२. कुटुम्बियों से नफरत करने की आज्ञा।

यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केवालों और भाइयों और बहिनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। -लूका (१४ : २६)

कुटुम्बियों से घृणा का विरोध।

अपनी माता और पिता का आदर कर। -इफिसियों (६ : २)

हे पतियों अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो। -इफिसियों (५ : २५)

जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है।

-१ यूहन्ना (३ : १३)

४३. नशा पीने की आज्ञा।

और वहां गाय-बैल, वा भेड़-बकरी, वा दाख-मधु, या मदिरा, वा किसी भांति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रूपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द करना। -व्यवस्थाविवरण (१४ : २६)

दाख लता ने उनसे कहा, क्या मैं अपने नए मधु को छोड़, जिससे परमेश्वर और मनुष्य दोनों को आनन्द होता है। -न्यायियों (९ : १३)

नशा पीने का विरोध।

दाख-मधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है, जो कोई उसके कारण चूक करता है वह बुद्धिमान नही।

-नीतिवचन (२० : १)

जब दाख-मधु लाल दिखाई देता है, और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है, और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता है, और करैत के समान काटता है। -नीतिवचन (२३ : ३१,३२)

४४. राजा की आज्ञा मानना कर्तव्य है।

शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिए वे तुमसे जो कुछ कहें वह करना, और मानना। -मत्ती (२३ : २,३)

प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हरेक प्रबन्ध के अधीन में रहो,

राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। -१ पतरस (२ : १३)

राजा की आज्ञा न मानने का उपदेश।

शद्रक, मेषक, और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमको उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है, वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। -दानिय्यल (३ : १६,१७)

४५. नारी के अधिकारों का निषेध।

और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझपर प्रभुता करेगा। -उत्पत्ति (३ : १६)

स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। -१ कुरिन्थियों (१४ : ३४)

नारी के अधिकारों का समर्थन।

वरन मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंग, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

-प्रेरितों के काम (२ : १८)

उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा जो नबिया थी इस्राएलियों का न्याय करती थी। -न्यायियों (४ : ४)

४६. स्वामी की आज्ञा का आदेश।

हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के पर कुटिलों के भी।

-१ पतरस (२ : १८)

हे सेवकों, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और और परमेश्वर के भय

से। –कुलुस्सियों (३ : २२)

केवल ईश्वर ही की आज्ञा माननी चाहिए।

तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। –मत्ती (४ : १०)

और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है अर्थात् मसीह। –मत्ती (२३ : १०)

४७. एलिय्याह स्वर्ग पर चढ़ गया।

और एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया।
–२ राजा (२ : ११)

यीशु के अतिरिक्त कोई भी स्वर्ग पर नहीं गया।

और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। –यूहन्ना (३ : १३)

४८. मनुष्य अन्य जानवरों के पश्चात उत्पन्न हुआ।

सो परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया, और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं। –उत्पत्ति (१ : २५,२६)

मनुष्य अन्य जानवरों के पूर्व उत्पन्न हुआ।

और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें। –उत्पत्ति (२ : १९)

४९. मूसा बड़ा नर्म मनुष्य था।

मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। –गिनती (१२ : ३)

मूसा बड़ा क्रूर मनुष्य था।

सो अब बाल-बच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन सभों को घात करो। –गिनती (३१ : १८)

५०. बोना और काटना बन्द न होगा।

अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठंड और पतन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे। –उत्पत्ति (८ : २२)

बोना और काटना सात वर्ष तक बन्द रहा।

और यूसुफ के कहने के अनुसार सात वर्षों के लिए अकाल आरम्भ हो गया। –उत्पत्ति (४१ : ५४)

क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है, और अब पांच वर्ष और ऐसे ही होंगे, कि उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। –उत्पत्ति (४५ : ६)

५१. ईश्वर ने फिरौन के हृदय को कठोर कर दिया।

परन्तु मैं उसके मन को हठीला करूंगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। –निर्गमन (४ : २१)

फिरौन ने अपना हृदय स्वयं कठोर किया।

परन्तु जब फिरौन ने देखा कि अब आराम मिला है तब यहोवा के कहने के अनुसार उसने फिर अपने मन को कठोर किया, और उनकी न सुनी। –निर्गमन (८ : १५)

५२. मिस्र के तमाम पशु मर गए।

दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा। –निर्गमन (९ : ६)

मिस्र के तमाम पशु नहीं मरे।

पर फिरौन के सब घोड़ों, और रथों, और सवारों समेत मिस्री सेना ने उनका पीछा करके उन्हें, जो पीहाहीरोत के पास, बालसपोन के

साम्हने, समुद्र के तीर पर डेरे डाले पड़े थे, जा लिया।

–निर्गमन (१४ : ९)

५३. मरियम के पति यूसुफ का पिता याकूब था।

और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था। जिससे यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ। –मत्ती (१ : १६)

मरियम के पति का पिता एली था।

जब यीशु आप उपदेश करने लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और यूसुफ का पुत्र था और वह एली का। –लूका (३ : २३)

५४. बालक यीशु को मिस्र ले गए।

वह रात ही को उठ कर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया। –मत्ती (२ : १४)

बालक यीशु को मिस्र नहीं ले गए।

और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यरूशलेम में ले गए। –लूका (२ : २२)

५५. दो अन्धों ने यीशु से विनती की।

जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और देखो दो अन्धे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकार कर कहने लगे, कि हे प्रभु, दाऊद की सन्तान हम पर दया करे। –मत्ती (२० : २९,३०)

एक अन्धे ने यीशु से विनती की।

जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था। तब उसने पुकार के कहा, हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। –लूका (१८ : ३५,३८)

५६. दो आदमी कब्र से निकलकर यीशु से मिले।

जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिनमें

दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकलते हुए उसे मिले। –मत्ती (८ : २८)

एक आदमी कब्र से निकलकर यीशु से मिला।

और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे, और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी कब्रों से निकलकर उसे मिला। –मरकुस (५ : १,२)

५७. सुबेदार ने दास को निरोग करने की प्रार्थना की।

और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सुबेदार ने उसके पास आकर उससे विनती की, कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुःखी पड़ा है। –मत्ती (८ : ५,६)

सुबेदार के नौकरों ने दास को निरोग करने की प्रार्थना की।

जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में आया। और किसी सुबेदार का एक दास जो उसका प्रिय था बीमारी से मरने पर था। उस ने यीशु की चर्चा सुनकर यहूदियों के कई पुरनियों को उससे यह विनती करने को उसके पास भेजा, कि आकर मेरे दास को चंगा कर। –लूका (७ : १–३)

५८. यीशु को तीसरे घण्टे फांसी दी गई।

और पहर (तीसरे घण्टे) दिन चढ़ा था, जब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया। –मरकुस (१५ : २५)

यीशु को छठे घण्टे फांसी दी गई।

यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घण्ट के लगभग था। तब उसने यहूदियों से कहा, देखो, यही है तुम्हारा राजा। परन्तु वे चिल्लाए, कि ले जा ! ले जा ! उसे क्रूस पर चढ़ा। –यूहन्ना (१९ : १४,१५)

५९. केवल एक ने यीशु की निन्दा की।

जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निन्दा करके

कहा। –लूका (२३ : ३९)

उन दोनों ने यीशु की निन्दा की।

और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे। –मरकुस (१५ : ३२)

६०. यहूदा ने चांदी के रुपए वापिस कर दिए।

जब उसके पकड़नेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। –मत्ती (२७ : ३)

यहूदा ने चांदी के रुपए वापिस नहीं किए।

उसने (यहूदा) अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया।
–प्रेरितों के काम (१ : १८)

६१. यहूदा ने अपने को आप ही फांसी दी।

तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फैंक कर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी। –मत्ती (२७ : ५)

यहूदा फांसी से नहीं मरा।

और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ी। –प्रेरितों के काम (१ : १८)

६२. महायाजकों ने कुम्हार के खेत को खरीदा।

सो उन्होंने (महायाजकों) सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिए कुम्हार का खेत मोल ले लिया। –मत्ती (२७ : ७)

यहूदा ने कुम्हार के खेत को खरीदा।

उसने (यहूदा) अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया।
–प्रेरितों के काम (१ : १८)

६३. केवल एक स्त्री कब्र पर आई।

सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अन्धेरा रहते ही

कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ ड़ेखा। –यूहन्ना (२० : १)

दो स्त्रियां कब्र पर आईं।

सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। –मत्ती (२८ : १)

६४. तीन स्त्रियां कब्र पर आईं।

जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उस पर मलें। –मरकुस (१६ : १)

तीन से अधिक स्त्रियां कब्र पर आईं।

जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उनके साथ की और स्त्रियां भी थीं।
–लूका (२४ : १०)

६४. कब्र के निकट दो फरिश्ते दिखाई दिए।

जब वे इस बात से भौचक्की हो रही थी तो देखो, दो पुरुष झलकते वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। –लूका (२४ : ४)

कब्र के निकट एक फरिश्ता दिखाई दिया।

और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया। और उस पर बैठ गया। –मत्ती (२८ : २)

६५. दो फरिश्ते कब्र के अन्दर दिखाई दिए।

परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते-रोते कब्र की और झुककर, दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा। –यूहन्ना (२० : ११,१२)

केवल एक फरिश्ता कब्र के अन्दर दिखाई दिया।

और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने

हुए दहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुई। -मरकुस (१६ : ५)

कब्र के बाहर एक फरिश्ता दिखाई दिया।

और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया। और उस पर बैठ गया। -मत्ती (२८ : २)

६६. स्त्रियों ने यीशु के चेलों को खबर दी।

और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं। -मत्ती (२८ : ८)

और कब्र से लौटकर उन्होंने उन ग्यारहों को, और, और सबको, ये सब बातें कह सुनाईं। -लूका (२४ : ६)

स्त्रियों ने यीशु के चेलों को खबर न दी।

और वे निकलकर कब्र से भाग गईं, क्योंकि कपकपी और घबराहट उन पर छा गई थी। और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं। -मरकुस (१६ : ८)

६७. पतरस के कब्र देखने के बाद फरिश्ते दिखाई दिए।

सन्दर्भ -युहन्ना (२० : ३,६,१०,१२)

फरिश्ते दिखाई देने के बाद पतरस ने कब्र को देखा।

सन्दर्भ- लूका (२४ : ४,८,६,१२)

६८. मरियम मकदालीन को यीशु पहले दिखाई दिया।

यह कहकर वह (मरियम) पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है। -युहन्ना (२० : १४)

दो मरियम को यीशु पहले दिखाई दिया।

और देखो, यीशु उन्हें (मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम) मिला और कहा, सलाम और उन्होंने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया। -मत्ती (२८ : ६)

६९. यीशु ने गलील के पहाड़ पर पहले दर्शन दिए।

और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को सन्देह हुआ। -मत्ती (२८ : १६,१७)

यीशु ने यरूशलेम में पहले दर्शन दिए।

वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए, और उन ग्यारहों और उनके साथियों को इकट्ठे पाया। वे ये बातें कर ही रहे थे, कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ। -लूका (२४ : ३३,३६)

७०. उसके साथियों ने आवाज सुनी पर किसी को न देखा।

जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए, क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। -प्रेरितों के काम (६ : ७)

उसके साथियों ने आवाज नहीं सुनी पर ज्योति को देखा।

और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी परन्तु जो मुझसे बोलता था उसका शब्द न सुना। -प्रेरितों के काम (२२ : ६)

७०. इब्राहिम के केवल एक बेटा था।

और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा, वह अपने एकलोते को चढ़ाने लगा। इब्रनियो (११ : १७)

इब्राहिम के दो बेटे थे।

यह लिखा है कि इब्राहिम के दो पुत्र हुए, एक दासी से, एक स्वतन्त्र स्त्री से। -गलतियों (४ : २२)

७१. कतूरा इब्राहीम की पत्नी थी।

तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था। -उत्पत्ति (२५ : १)

कतूरा इब्राहीम की रखेल थी।

फिर कतूरा जो इब्राहीम की रखेल थी। -१ इतिहास (१ : ३२)

७२. मीकल निःसन्तान थी।

और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान न हुआ। -२ शमूएल (६ : २३)

मीकल के पांच बच्चे थे।

और शाऊल की बेटी मीकल के पांचों बेटे। -२ शमूएल (२१ : ८)

७३. इस्राइल के आठ लाख लड़ाका थे और यहूदा के पांच लाख।

सन्दर्भ- २ शमूएल (२४ : ६)

इस्राइल के ग्यारह लाख लड़ाका थे और यहूदा के चार लाख सत्तर हजार।

सन्दर्भ- १ इतिहास (२१ : ५)

७४. दाऊद ने सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला।

सन्दर्भ- २ शमूएल (१० : १८)

दाऊद ने सात हजार रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला।

सन्दर्भ- १ इतिहास (२० : १८)

७५. दाऊद ने खलिहान को चांदी के पचास शेकेल में खरीदा।

सन्दर्भ- २ शमूएल (२४ : २४)

दाऊद ने खलिहान को सोने के छः सौ शेकेल में खरीदा।

सन्दर्भ- १ इतिहास (२१ : २४)

७६. यीशु ईश्वर के समान है।

मैं और पिता एक हैं। -यूहन्ना (१० : ३०)

यीशु ईश्वर के समान नहीं है।

मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है। -यूहन्ना (१४ : २८)

७७. यीशु न्याय करता है।

और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। -यूहन्ना (५ : २२)

यीशु न्याय नहीं करता है।

मैं (यीशु) किसी का न्याय नहीं करता। -यूहन्ना (८ : १५)

७८. यीशु सर्वशक्तिमान है।

यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। -मत्ती (२७ : १८)

पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं। -यूहन्ना (३ : ३५)

यीशु सर्वशक्तिमान नहीं है।

और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। -मरकुस (६ : ५)

७९. व्यवस्था रद्द की गई।

और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थी, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। -इफिसियों (२ : १५)

व्यवस्था कायम रहेगी।

लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

–मत्ती (५ : १८)

८०. यीशु का उद्देश्य शान्ति था।

कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिन से वह प्रसन्न है शान्ति हो। –लूका (२ : १४)

यीशु का उद्देश्य शान्ति न था।

यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं, मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। –मत्ती (१० : ३४)

८१. यीशु मनुष्य से गवाही नहीं चाहता।

परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता।
–यूहन्ना (५ : ३४)

यीशु मनुष्य से गवाही चाहता है।

और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।
–यूहन्ना (५ : ३४)

८२. यीशु की अपने लिए गवाही अच्छी है।

एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूं, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा। –यूहन्ना (८ : १८)

यीशु की अपने लिए गवाही झूठी है।

यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।
–यूहन्ना (५ : ३१)

८२. यीशु को मारना यहूदियों की व्यवस्थानुसार था।

यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है। क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया। –यूहन्ना (१९ : ७)

यीशु को मारना यहूदियों की व्यवस्थानुसार नहीं था।

पीलातुस ने उनसे कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो, यहूदियों ने उससे कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें। –यूहन्ना (१८ : ३१)

८३. बच्चे अपने माता पिता के कर्मों का दण्ड भोगेंगे।

क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं, और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं। –निर्गमन (२० : ५)

बच्चे अपने माता पिता के कर्मों का दण्ड नहीं भोगेंगे।

जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का। –यहेजकेल (१८ : २०)

८४. केवल व्यवस्था से मनुष्य जांचा जाएगा।

क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे। –रोमियों (२ : १३)

केवल व्यवस्था से मनुष्य नहीं जांचा जाएगा।

क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा। –रोमियों (३ : २०)

८५. कोई भी पाप नहीं करता।

जों कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है और वह पाप कर ही नहीं सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है। १ यूहन्ना (३ : ९)

पाप से कोई नहीं बच सकता।

निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिससे पाप न हुआ हो। – सभोपदेशक (७ : २०)

८६. कर्मों का फल यहीं दिया जाएगा।

देख धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा। –नीतिवचन (११ : ३१)

कर्मों का फल स्वर्ग में मिलेगा।

मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हरेक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। –मत्ती (१६ : २७)

८७. सांसारिक समृद्धि अभिशाप है।

धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। –लूका (६ : २०)

सांसारिक समृद्धि अभिशाप नहीं है।

उसके घर में धन–सम्पत्ति रहती है, और उसका धर्म सदा बना रहेगा। –भजन संहिता (११२ : ३)

८८. दुष्ट लोगों का समृद्ध और लम्बी आयु का होना।

कोई धर्मी अपने धर्म का काम करते हुए नाश हो जाता है, और दुष्ट बुराई करते हुए दीर्घायु होता है। –सभोपदेशक (७ : १५)

समृद्धि और लम्बी आयु दुष्टों की नहीं होती।

परन्तु दुष्ट का भला नहीं होने का, और न उसकी जीवन रूपी छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता। –सभोपदेशक (८ : १३)

८९. निर्धनता ईश्वर की देन है।

धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। –लूका (६ : २०)

धन ईश्वर की देन है।

धनी का धन उसका दृढ़ नगर है, परन्तु कंगाल लोग निर्धन होने

के कारण विनाश होते हैं। –नीतिवचन (१० : १५)

९०. बुद्धि शोक और क्लेश का कारण है।

क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है, और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दुःख भी बढ़ाता है। –सभोपदेशक (१ : १८)

बुद्धि प्रसन्नता का कारण है।

क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे, क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चांदी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है। –नीतिवचन (३ : १३,१४)

खण्ड ३

१. पाप क्षमा होते हैं या नहीं ?

ईसाई मतानुयायी पापों का क्षमा होना मानते हैं। उनका यह भी विश्वास है कि प्रभु यीशु पापों को क्षमा करनेवाला है। बाईबल में इस विषय में स्पष्ट प्रमाण इस प्रकार है-

परन्तु इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। -मत्ती (९ : ६)

ईसाई लोग यहां तक मानते हैं धार्मिकता का आधार यीशु में विश्वास है न कि कर्मानुसार व्यवस्था। सन्दर्भ- रोमियो (३ : २६,२७)।

पापों के प्रायश्चित्त के लिए पशु जैसे बछड़ा, कबूतर आदि को वेदी पर बलि देने की कहानियां देखी जा सकती हैं। जैसे कि- लैव्यव्यवस्था (८ : १४,१५)।

ईश्वर पापों को क्षमाकरता है या नहीं इस विषय में महर्षि दयानन्द जी के साथ २७ अगस्त १८७९ ई. में पादरी टी.जी.स्काट साहिब का लिखित शास्त्रार्थ हुआ था। इसे पाठकों के विचार के लिए यहां दे रहे हैं-

पादरी टी.जी.स्काट- मेरा यह दावा नहीं है कि ईश्वर दण्ड नहीं देता, दण्ड भी वह अवश्य ही देता है। परन्तु समय समय पर, जब भी और जैसा भी उसको उचित प्रतीत होता है, मनुष्य के कल्याण के लिए पाप क्षमा कर सकता है। क्योंकि ईश्वर सर्वगुणसम्पन्न सेतन है। वह हमें देखता है, चिन्तन करता है, हमारा कल्याण तथा सुधार भी चाहता है। अतः ईश्वर के पाप क्षमा करने का दावा झूठा नहीं है।

बहुत सी बातों में ईश्वर से जीवों की समानता है, जैसे कि न्याय प्रेम दया इत्यादि। ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध ऐसा है कि जैसे हम आपस में रखते हैं। अर्थात् ईश्वर हमारा शासक, पिता, उत्पत्तिकर्त्ता, पालक, संरक्षक है। वेदों में तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में भी ईश्वर का शासक, पिता आदि होना स्वीकारा है। अब विचारना यह है कि शासक के क्या-क्या कार्य होते हैं। दण्ड का उत्तम उद्देश्य है कि अपराधर, सन्तान वा प्रजा का सुधार किया जाए। इस प्रकार दूसरों को भी शिक्षा

मिले। दण्ड बदले की भावना से न दिया जाए। फिर भी पिता वा शासक यदि चाहे तो क्षमा कर दे, और इसलिए क्षमा होती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती- पादरी साहब का यह पक्ष था कि ईश्वर पापों को क्षमा भी करता है। क्षमा करता है, ऐसा पक्ष नहीं। फिर पादरी सहाब ने दूसरी प्रकार से क्यों कहा कि दण्ड भी अवश्य देता है। यह तो परस्पर विरोधी कथन है। क्या आधा दण्ड देता है, और आधा क्षमा कर देता है, या कुछ कम-अधिक करता है ? जैसे ईश्वर सब बातें जानता है, क्या जीव लोग भी वैसे ही जानते हैं या कम अधिक जानते हैं ? जैसे हमारे बीच न्यायधीश न्यायकारी भी होता है और अन्यायकारी भी होता है, क्या ईश्वर वैसा ही है, अथवा ईश्वर केवल न्यायकारी है ? जो न्यायकारी है तो फिर क्षमा करना कहां रहा ? क्योंकि न्याय उसका नाम है जिसने जितना जैसा काम किया, उसको उतना वैसा ही फल देना।

जो ईश्वर को थोड़ा बहुत कुछ न कुछ जानते हैं, तो मैं पूछता हूं कि ईश्वर की सब बातों में ऐसी ही रीति है, या कुछ कम अधिक ? यह मैं भी मानता हूं कि ईश्वर के साथ हमारा राजा और पिता का सा सम्बन्ध है। परन्तु यह सम्बन्ध क्या अन्याय करने के लिए है ? ऐसा कभी नहीं हो सकता। वेद आदि पुस्तकों में क्षमा करना कहीं नहीं लिखा है। ईश्वर के न्याय करने का क्या अर्थ है ? न्यायाधीश और सभा आदि के दण्ड और पुरस्कार आदि सुधार आदि के लिए होते हैं वा इनका कुछ और अर्थ है ? और जो क्षमा करता है तो किस-किस काम पर क्षमा करता है, और किस-किस पर नहीं ? जब क्षमा करता है तब तो ईश्वर पाप का बढ़ानेवाला होता है। क्योंकि वह जीवों को पाप करने के लिए उत्साहित करता है।

जब ईश्वर सर्वज्ञ है, तो उसके न्यायादि गुण और कर्म भी भूल और भ्रान्ति आदि सब दोषों से रहित हैं। इसलिए जब ईश्वर अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य कभी नहीं कर सकता, तो फिर न्याय के प्रतिकूल क्षमा वह कैसे कर सकता है ? और ईश्वर दयालु है, तो दया का भी वही अर्थ है, जो कि न्याय का है। क्षमा करना दया नहीं है। जैसे कि एक डाकू पर कोई दयाकरे अर्थात् क्षमा करे तो क्या वह दयालु गिना जाएगा ? कभी

नहीं, क्योंकि हजारों जीवों को उसने दुःख दिया है। जब डाकू क्षमा कर दिया जाएगा, तब तो वह साहस के साथ और भी खूब डाके मारेगा। इसलिए दया का मतलब भी और ही है, जो पादरी साहब जानते हैं वह नहीं।

पादरी टी.जी.स्काट– निस्सन्देह आज का विषय तो यही है कि वह क्षमा करता है। हम यह नहीं कह सकते कि वह कहां तक दण्ड देता है, और कहां तक क्षमा करता है। यह उसका काम है हमारा नहीं। ईश्वर सर्वज्ञ होने से हम लोगों के समान कभी भूल नहीं करता। उसके क्षमा करने में भी अवश्य ही कोई भेद है, क्योंकि क्षमा करना सदा ही एक सूक्ष्म विवेक का कार्य होता है। ईसाई लोग दृढ़तापूर्वक कहा करते हैं कि वह बिना किसी सिफारिस के और बिना किसी न्याय के क्षमा किया करता है।

परन्तु वह दयालु है और न्यायकारी भी है, तो वह सर्वथा एक ही बात है। परन्तु जरा न्यायकारी बनकर सोचिए दया में कुछ न कुछ मतलब ऐसा भी जरूर होगा जो कि न्याय में नहीं है। वेद में यह जरूर लिखा है कि– "ईश्वर पापों को क्षमा करता है"

अब मैं यहां पर एक पुस्तक म्यूर साहब की कि जिसमें लिखा है– "अदिति पाप को क्षमा करती है"। पण्डित जी कहेंगे कि यह अर्थ गलत है। अब अंग्रेजी जाननेवालों का यह काम है कि म्यूर साहब की पुस्तक देखकर न्याय करें। मैं यह पूछना चाहता हूं कि– क्या क्षमा शब्द का विचार वेदवालों को कभी नहीं सूझा? क्या वे क्षमा का अर्थ नहीं जानते थे? और क्या क्षमा करना भूल है?

मैं यह सिद्ध करूंगा कि समय-समय पर क्षमा करना बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है। यदि इसे हटा दिया जाए तो संसार की अवस्था बहुत ही बिगड़ जाएगी। और यह तो अनुमान से प्रत्येक व्यक्ति जान सकता है कि क्षमा से संसार में बहुत अच्छे-अच्छे परिणाम होते हैं। कौन जानता है कि माता-पिता के बीच में और बेटा-बेटी के बीच में क्या वास्ता है? और परस्पर एक दूसरे से तथा मित्र का मित्र से क्या सम्बन्ध है? यदि इन सबके बीच में क्षमा करने का भाव सर्वथा कभी न आवे, तो ये सम्बन्ध जरा भी न चलें।

और यह कहना कि क्षमा करने से पाप बढ़ते हैं, तो यह ठीक है। यदि क्षमा सदा ही क्षमा हो, और वह कभी किसी भी रूप में दण्ड न हो। और यह भी ठीक है कि कुछ अवस्थाएं ऐसी भी होती हैं कि जिनमें किसी को कभी भी क्षमा नहीं करना चाहिए, जैसा कि डाकुओं के विषय में। संसार में सभी बातें इस प्रकार की नहीं हैं कि हम क्षमा को संसार से सदा के लिए सर्वथा दूर कर दें। जो अनादि और न्यायकारी है वह भी जानता है कि कब और किस पर क्षमा और दया आदि का व्यवहार किस प्रकार करना चाहिए। आगे चलकर मैं यह भी बताऊंगा कि क्षमा करने से पापवासना का अन्त हो जाता है। और साथ ही यह भी कि दण्ड देने से पाप की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। इस प्रकार मनुष्य और भी अधिक निडर तथा बड़ा शैतान बन जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती– जो शास्त्रार्थ का विषय है, और जिसको सिद्ध करने की प्रतिज्ञा प्रथम पादरी साहब ने की थी, उससे दूसरा कथन करना न्यायशास्त्र के अनुसार पराजय का सूचक है। इस प्रकार की पराजय को दार्शनिक भाषा में 'प्रतिज्ञान्तर' कहा जाता है। पादरी सहाब ने कहा कि– असल विषय वही है कि ईश्वर पापों को क्षमा भी करता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि ऐसे अवसर पर पादरी साहाब को अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए विशेष बल देना चाहिए था। जब पूर्ण निश्चय से नहीं जानते तो उसका प्रतिपादन या समर्थन कैसा?

मैं पूछता हूं कि जितने अंश में क्षमा करना पादरी साहाब मानते हैं उसको भी ठीक-ठीक जानते हैं, या नहीं? क्या आपके मत में ईश्वर डाकू आदि को क्षमा नहीं करता? आप डाकू आदि को क्षमा करने का उपदेश नहीं करते? और ईश्वर किसी के वसीले से क्षमा करता है, तब तो वह पराधीन ठहरता है। और भी बताएं कि ईश्वर किसके वसीले से क्षमा करता है? वह वसीला आपका है, या किसी दूसरे का? यदि कहो कि अपने आप का वसीला है, तो झूठ है। और यदि कहो कि किसी दूसरे का है, तो फिर ईश्वर स्वतन्त्र नहीं रहा।

और जो पादरी साहब ने कहा कि कि– अदिति माता क्षमा करती है, यह वेद में लिखा है। तो मैं पूछता हूं कि अदिति किसका नाम है?

और क्षमा करना तो चारों वेदों में कहीं भी नहीं लिखा। जब क्षमा करना है ही व्यर्थ, तो फिर ऐसी मिथ्या बातों का उपदेश वेदों में क्यों कर हो सकता है? यह बड़े आश्चर्य की बात है कि अंग्रेजी जाननेवाले वेदों के सिद्धान्तों का निर्णय करें।

और जो माता-पिता क्षमा करते हैं, ऐसा पादरी साहब का कथन है। सो वे भी पूर्णतया क्षमा करते हैं, या कुछ-कुछ? जो कहें कि कुछ-कुछ तब भी ठीक नहीं है। क्योंकि पाप करने से क्या माता-पिता अपने अन्तरात्मा में अपने सन्तान के प्रति प्रसन्न होते हैं? यदि हां, तो फिर वे बालकों की ताड़ना क्यों करते हैं? यही तो दण्ड है। जब बालक कुछ समर्थ हो जाते हैं, और जब पांच वर्ष से बड़े हो जाते हैं तब माता-पिता बालकों के साधारण पाप या अपराध भी क्षमा नहीं किया करते। और जो क्षमा करते हैं तो कभी-कभी माता-पिता और सन्तान में वैर-विरोध क्यों होता है? इससे पादरी साहब का दृष्टान्त गलत ठहरता है।

हां, यदि सब माता-पिता क्षमा करते, तब तो पादरी साहब का दृष्टान्त भी ठीक होता। और कथन भी आपके मत के अनुसार शैतान ने बहुत अपराध किए हैं। परन्तु ईश्वर ने उसको आज तक कोई दण्ड दिया कि नहीं, और भविष्य में भी उसको कोई दण्ड देगा वा नहीं? जब शैतान को बनाया, तब तो वह पवित्र था। फिर जब उसने पाप किया, ईश्वर ने उसे क्षमा क्यों नहीं किया? और आगे भी करेगा या नहीं?

पादरी टी.जी.स्काट– हमारे सुयोग्य विद्वान् और प्रिय मित्र स्वामी दयानन्दजी घबराएं नहीं मैं विषय से बचकर न चलूंगा। परन्तु यह मुझे अधिकार है कि मैं जिस प्रकार भी उचित समझूं, उसी प्रकार अपनी युक्ति का आधार स्थिर करूं। पहले मैं यह बुद्धि से सिद्ध कर रहा हूं कि क्षमा की सम्भावना है। फिर आगे चलकर देख लेना, मैं शास्त्रीय प्रमाणों से भी यह सिद्ध करूंगा कि- ईश्वर पाप क्षमा करता है।

मेरी युक्ति तीन प्रकार की है- बुद्धिपूर्वक है, शास्त्रसिद्ध है और अनुभव से भी पुष्ट है। वह डाकू का उदाहरण इस प्रकार से है कि अनुशासन को स्थिर रखने के लिए छाकू को क्षमा करना अच्छा नहीं है। परन्तु कौन नहीं जानता कि कभी-कभी डाकुओं को क्षमा करने के भी

बड़े उत्तम-उत्तम परिणाम निकलते हैं। एक उदाहरण है-

योहन्ना रसूल ने एक आदमी को ईसाई धर्म में दीक्षित किया। वह डाकू था। बाद में वह धर्म से बहिष्कृत किया गया और जंगल में भाग गया। तथा बड़े-बड़े डाकुओं का काम करने लगा। योहन्ना उसकी खोज करने जंगल गया। पहले तो डाकू ने उसे मार डालना चाहा। परन्तु योहन्ना बूढ़ा था। वह उससे न डरा, और पास जाकर बोला कि मैं तो बूढ़ा आदमी हूं, मुझे क्यों मारते हो? डाकू का हृदय परिवर्तन हो गया उसने डाकुओं का साथ छोड़ दिया, और योहन्ना के साथ चला आया। फिर वही डाकू बहुत उत्साही प्रचारक और साधु पुरुष बन गया। उसने फिर कभी कोई अपराध नहीं किया और अपना जीवन बहुत पवित्रता से व्यतीत किया।

डाकुओं आदि के विषय में, जब कि मनुष्य भी क्षमापूर्ण व्यवहार करते ही हैं, तब यह भी सम्भावना है कि ईश्वर भी क्षमा कर देता है। और यह पूर्णतया सम्भव है। ईश्वर तो मनोगत बातों को भी जाननेवाला है। ईसाइयों का सिद्धान्त यह है कि वह वसीला, जिससे क्षमा प्राप्त होती है, निष्कलंक अवतार ईसामसीह का इस संसार में पैदा होना है।

मैं पण्डित जी से पूछता हूं अदिति का क्या अर्थ है? म्यूर साहब की पुस्तक का जो जिकर मैंने किया है, सो स्वामी जी जल्दी में किसी बात को उल्टी न समझें। मैं कोई मूर्ख नहीं हूं। म्यूर साहब की पुस्तक अंग्रेजी में है, परन्तु उसके साथ ही संस्कृत श्लोक भी वेद के भरे हुए हैं। अंग्रेजी जाननेवाले सज्जन म्यूर साहब के प्रमाणों और युक्तियों को अंग्रेजी में भी देख सकते हैं। और अपनी संस्कृत में भी समझ सकते हैं।

शैतान का जो हाल है सो हम नहीं जानते। शायद उसको बीस बार क्षमा मिल चुकी है, और अब उसको क्षमा मिलने की कोई आशा नहीं है। फिर भी कौन जानता है? हां, इतना हम जानते हैं कि आज शैतान का विषय नहीं है। मैं पण्डित जी से पूछता हूं कि क्या क्षमा कभी भी नहीं होनी चाहिए? क्या मनुष्य के हृदय में क्षमा करने वा क्षमा चाहने का कुछ भी विचार कभी नहीं होता? क्या क्षमा शब्द का संसार में कुछ भी काम नहीं है? पण्डितजी इस बात पर विचार करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती– मैं कब घबराया हूं? जो आपने कहा घबरावें नहीं। जब पहिले कहा कि ईश्वर पापों को माफ भी करता है, और अब कहा कि कर सकता है। तो क्या ये दोनों परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं? और क्या इस प्रकार आप प्रतिज्ञा-हानि नहीं कर रहे? तर्क शास्त्र-प्रमाण और अनुभव-प्राप्त पुरुषों का ही सत्य होता है, प्रत्येक जनसाधारण का नहीं। जब डाकू का कहीं-कहीं क्षमा करना अच्छा हैतो आज-कल की सरकार को भी चाहिए कि किसी अवसर पर छाकुओं को क्षमा करे।

योहन्ना के क्षमा करने से क्या प्रत्येक अपराधी क्षमा के योग्य हुआ? उसने भाग्यवश या स्वार्थवश क्षमा किया होगा। तो क्या उसने यह कोई अच्छा काम किया? और जब तक उसने डाका मारना न छोड़ा था, तब तक अपने साथ क्यों न रखा? और जो कहो कि क्षमा करने से लिया, तो यह बात सत्य नहीं है। क्योंकि जब उसने डाके का काम छोड़ दिया, और अच्छे काम करके अच्छा आदमी बना, तब साथ रखा। भले और बुरे दोनों प्रकार के कामों का फल ईश्वर यथायोग्य देता है। जब पादरी साहब का सिद्धान्त यह है कि-ईश्वर पापों को क्षमा भी करता है। फिर उसके विरुद्ध पादरी साहब ने कथन किया कि जब कभी हम क्षमा करते हैं, तो ईश्वर क्षमा नहीं करता। और जब हम क्षमा नहीं करते तो ईश्वर क्षमा करता है।

पादरी सहाब ने मुझ से अदिति का अर्थ पूछा है। सो पृथिवी, अन्तरिक्ष, माता, पिता और ईश्वर आदि अर्थ हैं। जैसे किसी हल जोतनेवाले के सामने रत्नों की या और-और विद्याओं की बात करे, तो क्या वह व्यर्थ नहीं है? जो शैतान का पाप क्षमा न किया जाएगा, तब तो शैतान के विषय में आपका सिद्धान्त अटक गया। क्षमा शब्द किसी और मुहावरे के लिए है। दण्ड तो दिया जाना है, परन्तु समर्थ को जैसा दण्ड दिया जाता है, वैसा असमर्थ को नहीं। जैसे कि पागलों को पागलखाने में भेजा जाता है। यदि ईश्वर ईसा के वसीले से क्षमा करता है, तो क्या वह खुशामदी नहीं है? क्या आप ईश्वर के सामने भी वकील आदि की आवश्यकता समझते हैं? क्या आप उसे सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् नहीं मानते? और यदि आप ईसा के वसीले से पापों का क्षमा होना मानते हैं, तो ईसा ने जो पाप किए, उनको क्षमा करने का वसीला क्या है?

पादरी टी.जी.स्काट– अब यहां पर कुछ विचार करना उचित है। क्षमा करना और बात है, तथा दिल को पवित्र करना और बात है। इसलिए मनुष्य की क्षमा और ईश्वर की क्षमा में बहुत भेद है। जब मनुष्य तौबा करे और उस नियम पर चले जो कि उसके लिए नियत और विहित है, तब ईश्वर उसको क्षमा कर देता है, और उसके हृदय को भी पवित्र कर देता है। और मेरा भाव यह है कि ईश्वर ने किसी को क्षमा किया और उसके हृदय को भी पवित्र किया, इसकी पूर्ण सम्भावना है। परन्तु मनुष्य की स्वतन्त्रता और धर्मशास्त्र के कारण नियम के अनुसार वह क्षमा नहीं होता। यह मेरा अभिप्राय है।

और क्षमा का लाभ इसमें प्रतीत होता है कि बीसियों विचारवान् युक्ति-तर्क-विशेषज्ञ भली प्रकार जानते हैं कि क्षमा का परिणाम बहुत उत्तम निकलता है। कोई हठ वा दुराग्रहवश इस सिद्धान्त से इन्कार करे, तो करे। पण्डित जी का सिद्धान्त यह है कि ईश्वर किसी को बिना दण्ड दिए नहीं छोड़ता। परन्तु योहन्ना ने उस डाकू को दण्ड नहीं दिलाया, क्षमा कर दिया। और हमारा यह सिद्धान्त है कि ईश्वर उसे जब भी उचित प्रतीत होता है, क्षमा कर देता है, जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है।

पण्डित जी ने अदिति के अर्थ परमेश्वर भी लिखे हैं। और म्यूर साहब का दावा है कि अदिति वेद के प्रमाण से पापों को क्षमा भी कर देती है। यदि शैतान अभी तक माफ नहीं किया गया, तो यह किसी प्रकार भी मेरे दावे के विरुद्ध नहीं है। क्योंकि आज के विषय में एक शब्द 'भी' मौजूद है, और यह 'भी' अवस्था और परिस्थिति के अनुसार कभी दण्ड और कभी क्षमा इन दोनों को बताता है।

पण्डित जी का दावा है कि ईश्वर कभी भी क्षमा नहीं करता, अतः क्षमा शब्द को संसार से हटा दो। इसके प्रतिकूल यदि ईश्वर किसी एक पाप को क्षमा भी करता है, तो केवल दसी से मेरा पक्ष सिद्ध हो जाता है। मेरा पक्ष यह नहीं कि ईश्वर क्षमा ही करता है; अपितु यह मेरा पक्ष है कि ईश्वर क्षमा भी करता है। इस 'भी' पर विशेष ध्यान दीजिए।

ईसा के वसीले का विषय आज नहीं है, इसलिए इस विषय में आज कुछ नहीं कहता। हमारे लिए आज यह जान लेना ही बहुत है कि किस वसीले से क्षमा होता है। उदाहरण के लिए देखिए- दवाई से दर्द हट जाता है। हम दवाई के विषय में विशेष कुछ नहीं जानते, परन्तु न जानने से क्या भेद पड़ता है? दर्द तो दूर हो ही जाता है। इसी प्रकार क्षमा होने की भी एक शर्त तो है।

अब शास्त्रीय प्रमाण आरम्भ होता है। इसमें मैं अधिक कुछ नहीं लिखता जो लोग इस विषय में कुछ विशेष जानना चाहें, और प्रमाण पूछें, वे कल की लिखित पर विचार करें। तथा तौरेत में "खरूज की किताब" अध्याय ३४, आयत ८, और "गिनती की किताब" अध्याय १४, आयत १८ को पढ़ें एवं विचार करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती– क्षमा करना, पवित्र होना है या नहीं? क्या क्षमा करना पवित्र होने के लिए है? जो कहें कि पवित्र होने के लिए है, तो ठीक नहीं। क्योंकि क्षमा करने से पाप की निवृत्ति संसार में देखने में नहीं आती। और जो अशुद्ध होने के लिए क्षमा कहा जाए, तब तो क्षमा करना ही सर्वथा व्यर्थ हो जाए। जब हमारे क्षमा करने और ईश्वर के क्षमा करने में भेद है, तो आपने पहले क्यों कहा था कि हम भी दयालु हैं और ईश्वर तुल्य हैं? और ईश्वर के सामने क्षमा करानेवाला योहन्ना मौजूद है। तब तो ईश्वर भी खुशामद को पसन्द करनेवाला तथा बेसमझ सिद्ध होता है। क्या योहन्ना मनुष्य नहीं था कि जिसने क्षमा किया? क्या योहन्ना कोई राजा था? वह राजा या ईश्वर नहीं था, यह मैं जानता हूं।

न्याय दण्ड देने से छोड़ता नहीं है और छोड़ता भी है, यह बात परस्पर विरुद्ध है। जो पादरी साहब ने यहां मनुष्यों के राज के विषय में कहा कि- कानून की पाबन्दी करनी आवश्यक है, अतः डाकुओं को क्षमा नहीं किया जा सकता। तो मैं पूछता हूं कि क्या ईश्वर के घर में कानून की पाबन्दी नहीं है? क्या कोई कह सकता है कि ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है? यदि नहीं, तो फिर योहन्ना के कहने फुसलाने और खुशामद करने से वह क्षमा करने को राजी क्यों हो गया? ऐसी बातों से तो ईश्वर की सर्वज्ञता

नष्ट होती है।

और जो पादरी साहब ने कहा कि ईश्वर कभी दण्ड देता है और कभी क्षमा भी करता है। यह बात ऐसी ही मिथ्या है, जैसी अग्नि कभी गर्म होती है और कभी ठण्डी हो जाती है। और जो यह बात कि- आज ईसा मसीह का विषय नहीं है; सो आपने ही आज ईसा का विषय बीच में छेड़ा है। क्योंकि आपने कहा कि ईश्वर ईसा के वसीले से पापों को क्षमा करता है। मैं यहां पूछता हूं कि ईयस जीव था या ईश्वर? जो कहें कि जीव था, तो सभी आदमी जीव हैं। सभी ईश्वर के सामने क्षमा करनेवाले हुए। फिर आप एकमात्र ईसा का नाम ही क्यों लेते हैं? और जो कहो कि ईसा ईश्वर था, तो अपने आप ही वह वसीला अथवा साक्षी कभी नहीं बन सकता। जो कहें कि उसमें जीवात्मा और परमात्मा दोनों थे, तो दानों के क्या-क्या काम थे? और दोनों साथ-साथ थे या पृथक्-पृथक्?

जो कहो कि पृथक् थे तो व्याप्य-व्यापकता न रही। जो कहें कि व्याप्य-व्यापकता है, तो ईसा में और इन सब जीवों में क्या भेद है? जो कहें कि विद्या पढ़े थे, सो भी ठीक नहीं। क्योंकि इंजिल के लेख से मालूम होता है कि वह विद्वान् नहीं था, परन्तु एक साधु पुरुष था।

जो लोग ईसा को मानते हैं, उनके सिद्धान्तानुसार जब यहूदियों ने ईसा को फांसी पर चढ़ाया, तो उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि- हे ईश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? ऐसी बातों से उसमें कोई साधारण जीव ही गति करता था, ईश्वर नहीं। किन्तु ईश्वर तो जैसे सबमें व्यापक है, वैसे ही उसमें था। जो कहें कि- उसने मुर्दों को जीवित किया, अन्धों को आंख दी, और कोढ़ियों को चंगा किया, भूत निकाले इसलिए वह ईश्वर था। यहां मैं कहता हूं कि ये बातें प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों और सृष्टिक्रम आदि से विरुद्ध होने से विद्वानों के माननेयोग्य न कभी थीं, न हैं और न कभी होंगी। हां ये बातें पौराणिकों के अनुसार हैं।

पक्षी बोला, पशु हाथी आदि आदमी की बोली में बोले, जैसा कि तौरेत में लिखा है कि- गदहे आदमी की बोली में बोले। क्या इन बातों को कोई विद्वान् मान सकता है? अथवा किसी विद्वान् से इन बातों को

कोई मनवा सकता है?

और जो यह कहा कि- दवा खाने से रोग छूट जाते हैं, वैसा भी यह पापों को क्षमा करना भी है। तो क्या दवा का नियम से सेवन करना, परहेज करना, वैद्य के कहने के अनुसार चलना, अपनी मर्जी से न चलना यह सब दण्ड नहीं है?

अब तीन दिन से मुझ से और पादरी साहब से जो वार्तालाप हुआ है, उसके विषय में मैं अपनी बुद्धि के अनुसार यह समझता हूं कि मैंने पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिद्ध कर दिया। पादरी साहाब उसका खण्डन नहीं कर सके। और पादरी साहब अपने सिद्धान्तों का मण्डन करने में तथा उसके विषय में मेरे प्रश्नों के युक्ति और प्रमाण से उत्तर देने में भी समर्थ नहीं हुए।

पादरी टी.जी.स्काट– अब यह विचार करनेवाले भाई विचार करें। क्योंकि इस लिखाई के बीच में शास्त्रार्थ के नियमों के विरुद्ध बहुत सी बातें कही गई हैं, और वे लिखी नहीं गईं। इसका परिणाम वही हुआ है कि जिसके ऊपर झगड़ा हुआ। अर्थात् केवल अर्थ मिलाने के लिए मैं एक वाक्य सुनाना चाहता था, परन्तु मैंने यह आवश्यक न समझा कि लिखनेवाले से उसे लिखनेके लिए भी कहूं। अब मैं केवल उस प्रमाण का ही उल्लेख करता हूं। भाषा के शब्दों का विचार मैं न करूंगा। जो चाहें वे पुस्तक में स्थल को निकालकर देख लें। हां, यह मैं लिखवा दूंगा कि मैं प्रमाण किस उद्देश्य से देता हूं। पण्डित जी का यह कहना कि मेरी दलील पक्की नहीं है, और मैंने यूं सिद्ध किया है इत्यादि। इसमें कुछ भी सार नहीं है। मैं भी इस प्रकार कह सकता हूं। अब यह सुननेवालों का काम है कि वे विचार करके स्वयमेव निर्णय करें। और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मैं यह नहीं चाहता कि इस विषय में किसी प्रकार का पक्षपात किया जाए।

पण्डित जी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया कि- क्षमा शब्द को संसार से क्यों नहीं बहिष्कृत किया जाता? यह एक व्यर्थ और हानिकारक शब्द है। इससे सदा सबको हानि ही होती है। यदि पण्डित जी के कथनानुसार यही बात है, तो बहिष्कार जरूरी है। मैं तो निस्सन्देह यह कहता हूं कि क्षमा करने से भगवान की महिमा का प्रकाश होता है।

ईश्वर की बढ़ाई इसी में है कि वह मनुष्य को क्षमा करे। क्योंकि मैंने कहा कि वह सब गुप्त भेदों को भी यथावत जानता है। और क्षमा करने के देश, काल तथा पात्र को भी भली प्रकार जानता है, और क्षमा करने के कारणों को भी पूर्णतया जानता है। ईश्वर के घर में न तो कुछ कमी है, और न ही किसी प्रकार की भूल या भ्रान्ति की कोई सम्भावना है। ये सब कमियां और त्रुटियां इस संसार में ही हैं।

देखो, संसार में कितना पाप, अन्याय घमण्ड और रक्तपात तथा और भी अनेकविध अनाचार दृष्टिगोचर हो रहा है। पण्डित जी इसे स्वीकार नहीं करेंगे; परन्तु प्रत्यक्ष ही इस संसार में भारी कमी और त्रुटि देखने में आ रही है। जैसा कि अंग्रेजी सरकार ने इसका यथोचित प्रबन्ध किया है, ईश्वर भी इसका प्रबन्ध करेगा।

मैं निःसन्देह मसीह के विषय में कोई वार्ता न चलाऊंगा। मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि इस पवित्र धर्म-ग्रन्थ में जिसको क्षमा करने का उल्लेख है, वह उसी वसीले से है। यह दर्द का जिक्र तो है, परन्तु दर्द का निवारण यह नहीं है कि कहां-कहां, कैसे-कैसे है?

जब कभी इस विषय पर वार्ता चलेगी; तब आप इसे यथार्थ रूप में देख लेंगे। युक्ति और प्रमाण के आधार पर मेरा निवेदन यही है कि क्षमा होती है।

और तौबा के सिद्धान्त से भी यही प्रमाणित होता है, कि क्षमा होती है। उपाय को खूब जानना और ईश्वरीय पुस्तक के विषय में इस प्रकार से हंसी ठट्ठा करना यदि पण्डित जी को उचित प्रतीत होता है, और वे प्रत्येक बात को उलटे रूप में ही समझना चाहते हैं, तो वे जानें। वेद की अनेकानेक बातें हैं; परन्तु यहां उनके विषय में मैं कुछ नहीं कहना चाहता। अब आप मेरे इन उत्तरों को कृपया देख लीजिए-

"गिनती की पुस्तक" अध्याय १४, आयत १८ का अर्थ इस प्रकार है कि- ईश्वर पापों को क्षमा करता है। "लूका की इंजील" अध्याय ६, आयत ४ तथा अध्याय १५, आयत १०, इसी प्रकार "योहन्ना का पहला पत्र" अध्याय १, आयत ६। इनका अर्थ यह है कि- पापों को क्षमा किया जाता है। फिर मसीह ने अपने चेलों को समझाया कि अपनी प्रार्थना में

इस प्रकार से बोलो– "हे ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर"।

अब अनुभसवसिद्ध प्रमाणों पर भी विचार कीजिए। अनुभव के आधार पर सत्य को जानना बहुत बड़ी बात है, और अपना अनुभव सत्यासत्य का निर्णय करने की सबसे बड़ी कसौटी है। मनुष्य कह सकता है कि मेरा पाप क्षमा किया जाए। और इसके साथ ही ऐसा कथन निराधार है। क्योंकि जैसा पण्डित जी ने स्वयं भी एक उदाहरण में बताया है कि– प्रत्येक पापी को दण्ड अवश्य ही मिलेगा। वह पाप भी है। फिर जब तौबा–तौबा कहा तब भी वही पाप मौजूद है। फिर खुदा के बेटे का नाम लिया, तब भी पाप वर्तमान है। मैं यह मान लेता हूं कि मनुष्य मिथ्या कथन करें।

कल्पना करो कि वे सच्ची तौबा करके सन्मार्ग पर आ जावेंगे, और प्रत्यक्ष देख भी लें कि अब वह पहले जैसी बात नहीं है। अब मन में सन्तोष है और शान्ति है। प्रकाश ही प्रकाश है, न कोई सन्देह है, न चिन्ता है, और न ही कोई आशंका है। अब देख लीजिए कि ऐसे हजारों आदमी संसार में हैं कि जिनका यही अनुभव है। और उन्होंने अपने अनुभव से भली प्रकार जान लिया है कि ईश्वर ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया है। वे अब पूर्णतया सन्तुष्ट हैं। उनके हृदय पर न तो पाप की छाप शेष है, और न ही पाप का कोई भार है। पापाचरण की किसी प्रकार की इच्छा वा कल्पना भी नहीं है। एक क्षणमात्र में हृदय परिवर्तन हो गया है।

मेरी ओर से इंजील के अनुसार प्रमाण मिल चुका है। यह कहना बहुत ही आसान है कि यह मिथ्या है, ऐसा है तो ऐसा नहीं। परन्तु जाननेवाले जानते हैं, जिसका दर्द सर्वथा चला गया है, वह जानता है। परन्तु मेरे धर्म के माननेवाले इकतालीस करोड़ ईसाई संसार में हैं। उनमें से बहुत से तो झूठे ही हैं, यह मैं स्वीकार करता हूं। उनका कथन भी झूठ ही है। परन्तु सच्चे आदमी भी बहुत ही हैं, और उनका कथन भी पूर्णतया यथार्थ है, सत्य है। उनकी जीवनचर्या से यह भली भांति प्रमाणित हो जाता है कि उनके सब पाप सर्वथा लुप्त हो चुके हैं। उनके पापों को क्षमा किया गया है। हां, इसको जानने और समझने के लिए अपना अनुभव होना भी आवश्यक है। यह कार्य अभ्यास से होगा।

मैं फिर कहता हूं कि वह अपने अनुभव का प्रमाण सबसे बढ़कर और पक्का प्रमाण है। युक्ति और तर्क की पुष्टि से भी बढ़कर यह पुष्टि है, कि जिसको अपने अनुभव के आधार पर अपना अन्तरात्मा भी पुष्ट करता है। यह बात नहीं है कि हम केवल मौखिक कथनमात्र ही करते हैं, ऐसा कथन तो मिथ्या भी हो सकता है। परन्तु जिसके पाप तौबा करने के बाद अपना अस्तित्व सर्वथा खो चुके हैं, कि वह नहीं जानता कि जैसे कि कोई पिता अपने पुत्र से क्षमा का वचन कहे, तो क्या वह पुत्र यह नहीं समझता कि पिता ने उसे क्षमा कर दिया है, और अब चिन्ताओं की कोई आवश्यकता नहीं है। मानव–हृदय की भी इस प्रकार अवस्था है।

मैंने तर्क, युक्तियों और शास्त्रीय प्रमाणों के द्वारा तथा मनुष्यों के अपने प्रत्यक्षअनुभव के आधार पर यह सिद्ध कर दिया है कि ईश्वर पापों को क्षमा करता है।

२. पुनर्जन्म होता है या नही?

पुनर्जन्म से अभिप्राय है अविनश्वर, शाश्वत जीवात्मा का एक शरीर को छोड़कर दूसरे को प्राप्त होना। वैदिक धर्म का मूलभूत सिद्धान्त है पुनर्जन्म। सभी वैदिक ग्रन्थों में इसके प्रमाण मिल जाते हैं। इस में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि २५०० वर्षों से पूर्व आर्यावर्त तथा आर्यावर्त से भिन्न देश के सभी ऋषि, मुनि, दार्शनिक, मनीषी, चिन्तक एवं विद्वान् इस विषय में एकमत थे।

अन्य प्राचीन मत–मतान्तरों के आचार्यों ने भी इस सिद्धान्त को स्वीकारा है। पारसी मत में जीव को एक सत्पदार्थ कहा गया है, तथा उसका एक शरीर से दूसरे में जाना स्वीकारा है। बौद्ध मत के आचार्य भी आवागमन से मुक्ति (निर्वाण) पाने के सिद्धान्त पर स्थिर हैं। इतना ही नहीं यूनान एवं मिस्र के प्राचीन दार्शनिक भी इसे खुले हृदय से स्वीकारते हैं।

जब से संसार में वेदविद्या का प्रकाश कम होना शुरु हुआ तो इस सम्बन्ध में शंकाएं उठनी शुरु हुई। विश्व की बहुत बड़ी जनसंख्या इस समय ईसाई एवं इस्लाम मत को माननेवालों की है। इन सम्प्रदायों में यह

सिद्धान्त प्रचलित है कि जीव (रूह) को एक बार शरीर में आने के पश्चात् दूसरा शरीर प्राप्त नहीं होता। कयामत के दिन जब उनका न्याय होता है, तब वे शव जी उठते हैं। ईमान लानेवालों को अनन्तकाल के लिए बहिश्त, हेवन (स्वर्ग) तथा ईमान न लानेवालों के लिए अनन्त काल तक दोजख, हेल (नर्क) मिलता है।

कर्मफल सिद्धान्त के धरातल पर उपरोक्त मान्यता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाता है। यदि जीव पहली और आखरी बार शरीरों को धारण करते हैं तो सृष्टि में असंख्यात जीवों में जो सुख-दुःख की न्यूनाधिक्यता देखने में आती है उसका कारण क्या है? उपरोक्त मान्यता के अनुसार जीवों का जन्मदाता परमात्मा पक्षपाती होने से न्यायकारी नहीं रह जाता। मुक्ति होने के लिए किए गए सीमित कर्मों का फल असीमित अर्थात् अनन्त काल के लिए स्वर्ग दिया जाना क्या पक्षपातपूर्ण न्याय व्यवस्था नहीं कहलाएगी? उधर ईमान न लानेवाले जीवों के भी मात्र वर्तमान जन्म के कर्मों के लिए अनन्तकाल तक नर्क में दुःख भुगाना सरासर अन्याय नहीं होगा?

वस्तुतः कर्मफल सिद्धान्त और पुनर्जन्म दानों परस्पर सम्बन्धित विषय हैं। पुनर्जन्म को समझने के लिए कर्मफल सिद्धान्त को जानना बहुत जरूरी है। वैदिक मान्यता के अनुसार जीव की सत्ता अनादि है तथा जीवात्माओं की मुक्ति एवं आवागमन या पुनर्जन्म प्रवाह से अनादि है। स्पष्ट है इस मान्यता के अनुसार किसी जीव का कोई प्रथम जन्म या अन्तिम जन्म नहीं होता है। अनादि काल से जीव अपनी स्वतन्त्रता से कर्म करते आ रहे हैं। अनादि काल से सकाम शुभाशुभ कर्मों के फल स्वरूप परमात्मा की ओर से न्यायपूर्वक विभिन्न योनियों में जन्म पाते आए हैं, तथा निष्काम शुभकर्मों के द्वारा सामित किन्तु लम्बी अवधी के लिए मोक्ष को प्राप्त होते आए हैं। ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्षों तक मुक्तिसुख भोगने के पश्चात् जीव पुनः साधारण मनुष्य योनी में जन्म प्राप्त करता है। इस विषय में महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में ऋग्वेद के दो मन्त्रों का प्रमाण देते हैं जो पाठकों के लिए हम यहां दे रहे हैं-

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।
-ऋग्वेद (१/२४/१,२)

(प्रश्न) हम लोग किसका नाम पवित्र जानें? कौन नाशरहित पदार्थों के मध्य में वर्तमान देव सदा प्रकाश स्वरूप है, जो हमको मुक्ति का सुख भुगाकर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता तथा पिता के दर्शन कराता है?।।१।। (उत्तर) हम इस स्वप्रकाश स्वरूप अनादि आदि मुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हमको मुक्ति का आनन्द भुगाकर पृथ्वी में पुनः माता-पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है। -सत्यार्थ प्रकाश (नवम समुल्लास) इसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में निम्न वेद मन्त्रों द्वारा पुनर्जन्म सिद्ध किया है-

पुनर्नो असुं पृथवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्न सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः।। -ऋग्वेद (१०/५९/७)

हे सर्वशक्तिमन्! आपके अनुग्रह से हमारे लिए वारंवार पृथिवी प्राण को, प्रकाश चक्षु को, और अन्तरिक्ष स्थानादि अवकाश को देते रहें।पुनर्जन्म में सोम अर्थात् औषधियों का रस हमको उत्तम शरीर देने में अनुकूल रहे। तथा पुष्टि करनेवाला परमेश्वर कृपा करके सब जन्मों में हमको सब दुःख निवारण करनेवाला पथ्यरूप स्वस्ति को देवे।

आ यो धर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि।
धास्युर्योनिं प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदितां चिकेत।। -अथर्व. (५/१/२)

जो मनुष्य पूर्वजन्म में धर्माचरण करता है, उस धर्माचरण के फल से अनेक उत्तम शरीरों को धारण करता, और अधर्मात्मा मनुष्य नीच शरीर को प्राप्त होता है। जो पूर्वजन्म में किए हुए पाप-पुण्य के फलों को भोग करने के स्वभावयुक्त जीवात्मा है, वह पूर्व शरीर को छोड़ के वायु के साथ रहता है, पुनः जल औषधी वा प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य्य में प्रवेश करता है। तदनन्तर योनि अर्थात् गर्भाशय में स्थिर होके पुनः

जन्म लेता है। जो जीव अनुदित वाणी, अर्थात् जैसी ईश्वर ने वेदों में सत्यभाषण करने की आज्ञा दी है वैसा ही यथावत् जानके बोलता है, और धर्म ही में यथावत् स्थिर रहता है, वह मनुष्ययोनि में उत्तम शरीर धारण करके अनेक सुखों को भोगता है। और जो अधर्माचरण करता है, वह अनेक नीच शरीर अर्थात् कीट पतङ्ग पशु आदि के शरीर को धारण करके अनेक दुःखों को भोगता है।

"प्रश्न :- इसमें अनेक मनुष्य ऐसा प्रश्न करते हैं कि जो पुनर्जन्म होता है तो हमको इसका ज्ञान इस जन्म में क्यों नहीं होता?

उत्तर :- आंख खोलकर देखो कि जब इसी जन्म में जो-जो सुख-दुःख तुमने बाल्यावस्था में अर्थात् जन्म से पांच वर्ष पर्यन्त पाए हैं, उनका ज्ञान नहीं रहता, अथवा जो कि नित्य पठन-पाठन व्यवहार करते हैं उनमें से भी कितनी ही बातें भूल जाते हैं, तथा निद्रा में भी यही हाल हो जाता है कि अब के किए का भी ज्ञान नहीं रहता। जब इसी जन्म के व्यवहारों को इसी शरीर में भूल जाते हैं, तो पूर्व शरीर के व्यवहारों का कब ज्ञान रह सकता है?

प्रश्न :- तथा ऐसा भी प्रश्न करते हैंकि जब हमको पूर्व जन्म के पाप-पुण्य का ज्ञान नहीं होता, और ईश्वर उनका फल सुख वा दुःख देता है, इससे ईश्वर का न्याय और जीवों का सुधार कभी नहीं हो सकता।

उत्तर :- ज्ञान दो प्रकार का होता है- एक प्रत्यक्ष, दूसरा अनुमानादि से। जैसे एक वैद्य और दूसरा अवैद्य, इन दोनों को ज्वर आने से वैद्य तो इसका पूर्ण निदान जान लेता है, और दूसरा (अवैद्य) नहीं जान सकता। परन्तु उस पूर्व कुपथ्य का कार्य जो ज्वर है, वह दोनों को प्रत्यक्ष होने से वे जान लेते हैं कि किसी कुपथ्य से ही यह ज्वर हुआ है, अन्यथा नहीं। इसमें इतना विशेष है कि विद्यान् ठीक-ठीक रोग के कारण और कार्य को निश्चय करके जानता है, परन्तु कारण में उसको यथावत निश्चय नहीं होता। वैसे ही ईश्वर न्यायकारी होने से किसी को विना कारण से सुख वा दुःख कभी नहीं देता। जब हमको पाप-पुण्य का कार्य सुख वा दुःख प्रत्यक्ष है, तब हमको ठीक निश्चय होता है कि पूर्वजन्म के पापपुण्यों के बिना उत्तम मध्यम और नीच शरीर तथा बुद्ध्यादि पदार्थ कभी नहीं मिल

सकते। इससे हम लोग निश्चय करके जानते हैं कि ईश्वर का न्याय और हमारा सुधार ये दोनों काम यथावत बनते हैं।" ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका-पुनर्जन्म विषय (महर्षि दयानन्द)

'कुलियात आर्य मुसाफिर' ग्रन्थ में पुनर्जन्म पर ईसाइयों द्वारा किए गए आक्षेपों का उत्तर **स्वर्गीय पं.लेखराम जी** ने दिए हैं। पाठकों के विचार के लिए यहां हम दे रहे हैं-

प्रश्न :- पुनर्जन्म का सिद्धान्त प्रत्यक्ष प्रमाण के प्रतिकूल है। पुनर्जन्म का मूल जो कर्म कहा जाता है तथा पुनर्जन्म दोनों के विषय में प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद नहीं है। कोई कहे कि लंगड़ा, कोढ़ी, गूंगा, बहिरा कर्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है तो उसकी बात झूठ है, हां अनुमान प्रमाण तो हो सकता है। कर्म और पुनर्जन्म दोनों ही प्रत्यक्ष नहीं इसलिए अंग्रेज और अरब देशों में उसे कोई भी नहीं मानता। प्रत्यक्ष प्रमाण के प्रतिकूल कोई अनुमान प्रमाण का ग्रहण न करेगा। अतः व्यवहार की रीति से आवागमन का होना असम्भव है।

उत्तर :- आवागमन प्रत्यक्ष के प्रतिकूल नहीं अपितु प्रत्यक्ष के अनुसार है। न्यायदर्शन में प्रत्यक्ष का लक्षण इस प्रकार है- **इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।** (१/१/४) जो श्रोत्र आदि इन्द्रियों का शब्दादि अर्थों के साथ आवरण रहित सम्बन्ध होता है इन्द्रियों के साथ मन और मन के साथ आत्मा के संयोग से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं। कर्म शारीरिक मानसिक भेद से दो प्रकार का है जिसे समझने के लिए कर्ता को किसी अनुमान की आवश्यकता नहीं। मनुष्य कर्म करने में स्वाधीन है तथा फल भोगने में ईश्वराधीन है। यदि ऐसा न होता तो कोई भी प्राणी दुःखी न होता। कर्मफल का एक रूप आवागमन भी है। जिस प्रकार व्यवस्थित संसार को देख इसके व्यवस्थापक का, गर्भ को देख सन्तान का, वायु और मेघ को देख वर्षा का अनुमान होता है, इसी प्रकार जन्म से ही होनेवाले रोगों को देखकर बुद्धिमान् पुनर्जन्म का भी अनुमान करते हैं। यदि इसे न माना जाए तो ईश्वर की दया और उसके न्याय पर प्रश्न खड़ा होता है। ईश्वरवाद का आधार ही हिल जाता है।

अंग्रेज और अरब यदि पुनर्जन्म को नहीं मानते तो यह उनके अज्ञान का सूचक है। अरब के निवासी इस्लाम के प्रचार से पूर्व इसे मानते थे। मुहम्मदी बन जाने पर भी मुसलमानों के कई वर्ग इसे मानते हैं, तथा इस मन्तव्य को अपने ईमान का अंग समझते हैं। अंग्रेज ईसाई होने से पूर्व सभी इसे मानते थे। अब भी जो ईसाई मत छोड़ चुके हैं इसे पवित्र एवं आवश्यक सिद्धान्त मानते हैं। योरुप के सभी देशों के विद्वानों ने विशेष रूप से इसे स्वीकारा है। स्वीडन, रूस, जर्मनी व इटली तक आजकल इसका प्रचार है। सुप्रसिद्ध विद्वान मोक्षमूलर ने हाल ही में इस सिद्धान्त को स्वीकारा है। (देखो मासिक पत्र इण्डिया, अंग्रजी, लन्दन से प्रकाशित, बाबत सन १८६४ ई.) इसके अलावा थियोसोफिकल सोसाइटि के लगभग सभी सदस्य इस सिद्धान्त को मानते हैं।

प्रश्न :- पारमार्थिक रीति से भी पुनर्जन्म नहीं हो सकता। क्योंकि केवल ब्रह्म को छोड़कर और कुछ भी परमार्थ नहीं है। अतः कर्म प्रतिभासिक रीति से ही हैं। जो उसको मानता है, सो माने। जो देखकर सांप के भ्रम से भगता है सो भागे।

उत्तर :- आपका उदाहरण ठीक नहीं है। क्योंकि शुभ कर्म ही परमार्थ का साधन है। और केवल शुभ कर्मों के परिणाम से ही ज्ञान और मोक्ष होता है। यथार्थ वस्तु तो कर्म ही है न कि प्रकृति। प्रातिभासिक अर्थात् भ्रम या छल भी परमार्थ में साधन होते हैं। हां, सांप के झूठे विचार से सांप के वास्तविक अस्तित्व का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार जो भ्रम है वह तो भ्रम है और जो वास्तविकता है वह तो वास्तविकता है। आप बाईबल से भी अपरिचित प्रतीत होते हैं, वहां स्पष्ट लिखा है- "प्रत्येक को वही फल मिलता है, जो उसने कमाया। याद रखो, खुदा ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता।"

प्रश्न :- स्मरण के अनुसार भी पुनर्जन्म की कुछ साक्षी नहीं है। क्या तुम्हें पुनर्जन्म का स्मरण है? यदि नहीं तो इसका प्रमाण कहना असम्भव है। जब तक तुम प्रमाण नहीं देते इस पर भरोसा करना अनुचित है।

उत्तर :- तुम्हारी दलील बहुत ही कमजोर है। नौ माह तक गर्भ में रहने का हाल ही किसी को ज्ञात नहीं है, क्या इससे सिद्ध किया जा सकेगा

कि कोई व्यक्ति नौ माह तक गर्भ में रहा ही नहीं? पांच वर्ष तक की आयु का वृत्तान्त बुढ़ापे में प्रायः याद नहीं रहता, तो क्या हम मान लेवें कि किसी की शैशवावस्था कभी हुई ही नहीं? शराब पीने के बाद मनुष्य को अपनी बेटी और पत्नी के भेद का भी ज्ञान नहीं रहता, क्या इस भेद से इन्कार किया जा सकता है? क्लोरोफार्म सुँघाने से मनुष्य की अनुभव करने की शक्ति का लोप हो जाता है, क्या आपको यह विश्वास नहीं? विस्मृति आदि कई रोग भी हैं जिससे मनुष्य की याददाश्त घट जाती है, या लुप्त हो जाती है। बेहोश होने पर भी उसे कुछ भी याद नहीं रहता। जिस प्रकार छोटी आयु की बहुत सी बातें जवानी बुढ़ापे में याद नहीं रहती हैं, उसी प्रकार पुनर्जन्म की बातें इस जन्म में याद नहीं रहती हैं। इसलिए किसी बात के स्मरण न रहने से पुनर्जन्म के सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया जा सकता।

प्रश्न :- यह सिद्धान्त एक प्रकार से ईश्वर की निन्दा करनेवाला है। क्योंकि ईश्वर न्यायकारी है। यह भी असम्भव है कि किसी एक व्यक्ति के पाप का दण्ड उससे भिन्न किसी दूसरे मनुष्य को देवे। यदि वह ऐसा करता है तो उसका न्याय का सिंहासन शून्य हो जाता है। जिसको पुनर्जन्म की बातों का स्मरण न रहे, (और स्मरण रहता ही नहीं) उसको दण्ड देना बहुत बड़ा अन्याय है।

उत्तर :- इस सिद्धान्त के मानने से ईश्वर की कुछ भी निन्दा नहीं होती न ही उसके न्यायकारिता और दया पर बट्टा लगता है। हां, इसके न मानने से तो कई दोष हैं। जैसे बिना पाप के ही हमें वह दण्ड देता है, बिना चोरी के ही हमें कैद करता है, निर्दोष होने पर भी हम पर क्रोध किया जाता है। बिना किसी कारण के ही हमको आंखों से रहित किया जाता है। ये और ऐसे और कई आक्षेपों के उत्तर बिना पुनर्जन्म सिद्धान्त के माने नहीं मिल सकते। जो लोग पुनर्जन्म सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते, वे मानों ईश्वर के निन्दक हैं। ईश्वर किसी एक व्यक्ति के पापों का दण्ड किसी दूसरे को कभी नहीं देता है। वह बिना किसी कारण के, अथवा बुरों के बदले में सज्जनों को शिकंजे में नहीं कसता है। बाईबल के अनुसार तो आदम के पापों के बदले में सारे ही मनुष्यों को पापी बना

दिया गया। और आदम के पापों का दण्ड सभी मनुष्यों को दे दिया। फिर भी मिथ्यावाद के आधार पर पापों के क्षमा होने का प्रपंच भी रच डाला।

यदि बाईबल एक सच्चा ग्रन्थ है तो ऐसे खुदा को जिसने अन्य लोगों के पापों के बदले में निर्दोष ईसा मसीह को फांसी पर चढ़ा दिया आपके कथनानुसार न्याय के सिंहासन से अवश्य ही उतार देना चाहिए। क्योंकि किसी भी मनुष्य को आदम के पापों का कुछ भी स्मरण है, न हो सकता है।

प्रश्न :- पुनर्जन्मवाद का सिद्धान्त नीतिशास्त्र के भी विरुद्ध है। जो पाप और पुण्य करते हैं तो वे दोनों ही बराबर ठहरते हैं। हाय-हाय यह आवागमन सन्तों का नहीं अपितु दुष्टों का मत है।

उत्तर :- बड़े खेद की बात है कि आप सत्य को छिपाना और मिथ्यावाद को फैलाना चाहते हैं। नीतिशास्त्र का यह सिद्धान्त है कि जो करे, वही भरे। ऐसा नहीं है कि अपराध तो तूने किया और उसका दण्ड भोगने के लिए तेरे पिता को वध-स्थल पर पहुंचा दिया। बाईबल की शिक्षा ही ऐसी है जो नीतिशास्त्र के विपरीत है। जिसने एक तरफ बिना कारण सारी दुनियां को पापी ठहरा दिया। दूसरे निर्दोष ईसा को फांसी पर भी चढ़ा दिया। करे मूसा और मारा जाए इब्राहीम, व्यभिचार करे दाऊद और मारा जाए एक निष्पाप शिशु, चोरी तो करे बनी इस्राइल और तूफान में बरबाद कर दिए जाएं मिस्र देश के सा निवासी। जहांखुदाके भी घर में धोखा और फरेब चल सकता हो, वहां अदालत का क्या ठिकाना? यही कारण है कि इंजिलों की शिक्षा का प्रसार होने से संसार में पापों और अपराधों का प्रसार बहुत अधिक बढ़ गया है। कोई मनुष्य चाहे कितना ही बदचलन हो ईसा पर विश्वास करना ही जब बहिश्त में जाने का प्रमाण पत्र बन जाता है, और वह पापी अपने को मुक्ति का अधिकारी समझने लगता है। व बेचारा करे भी क्या उसे तो यह पट्टी पढ़ा दी गई कि तुम्हारे पापों के बदले में ईसा पहले ही फांसी पर चढ़ चुका है। मोक्ष की प्राप्ति शुभकर्मों से नहीं अपितु ईसा पर ईमान से होती है तथा पापों के क्षमा होने के सिद्धान्त आपके मत का आधार है। हाय-हाय ऐसा अंधेर और अत्याचार जिनके मत में हो वह मत दुष्टों का ही हो सकता

है, सन्तों का नहीं।

प्रश्न :- यदि जन्म-मरण, खेद और आनन्द, सुख-दुःख ये सबके सब कर्म हैं तो क्या कर्म अनादि हैं? या इनका कभी आरम्भ हुआ है? सर्वप्रथम दोष का क्या वर्णन मिलता है? कुछ भी नहीं, लो, आवागमन सर्वथा ही मूलरहित और निराधार है।

उत्तर :- कोई कर्म स्वरूप से अनादि नहीं है। कर्म प्रवाह से अनादि है। क्योंकि यह अनादि चेतन आत्मा का कार्य है। हम आप से पूछते हैं किसि को खेद होना, किसी को अप्रसन्नता होना, इसी प्रकार सुख-दुःख का मिलना यदि ये कर्म के अनुसार नहीं हैंतो क्या अन्धाधुन्ध मिलते हैं? क्या ईश्वरीय न्याय का इनके साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं? क्या इस सिद्धान्त के विषय में आपका यही मन्तव्य है कि एक आदम के पाप से ही सारी दुनियां पापी हो गई? या किसी तथाकथित शैतान के बहकाने से सारी दुनियां के निवासी विपद्‌जाल में फंस गए?

३. ईसा का अज्ञात जीवन

(आयु १४ वर्ष से २६ वर्ष तक)

ईसा के १६ वर्ष अर्थात् १४ वर्ष से २६ वर्ष की आयु तक का जीवन वृतान्त बाईबल में नहीं है। ईसा के समकालीन इतिहासकारों ने तो ईसा के विषय में एक अक्षर भी नहीं लिखा। जिससे यही निष्कर्ष निकलता है कि उन इतिहासकारों की दृष्टि में ईसा का जीवन इतिहास में स्थान पाने योग्य नहीं था।

इतिहास में इस शून्यता का भाव कुछ विद्वान इस प्रकार लेते हैं कि ईसा नाम का कोई व्यक्ति जन्मा ही नहीं। परन्तु सभी जनसाधारण का वृतान्त तो इतिहास में उल्लिखित नहीं होता। विशिष्ट घटनाओं और शासकों व पुरुषों का वर्णन इतिहास में हुआ करता है। अतः यही समझा जा सकता है कि ईसा का जीवन इतना सरल और सामान्य रहा कि इतिहास ने उसकी उपेक्षा की।

बाईबलकर्ता ईसा के १६ वर्षों का अज्ञात जीवनवृत्त नहीं बता सके। क्योंकि ईसा उन वर्षों में इस्राएल से बाहर अज्ञात रूप में भ्रमण करता

रहा। ईसा के इस अज्ञात जीवन का रहस्य एक रूसी यात्री निकोलस नोनोविच ने अपनी पुस्तक "दी अन्नोन लाईफ ऑफ जीजस" में प्रकाशित किया था। यह रूसी यात्री सन १८७७-७८ के रूसी तुर्किस्तान के लड़ाई के बाद सन १८७८ में हिन्दुस्तान की ओर चल दिया। उसकी आकांक्षा थी कि वह इस महान देश के निवासियों के रहन-सहन, रस्म-रिवाज और आदतों को जाने और इस आश्चर्यजनक देश की पुरानी बातों की असलियत और इसके महत्व को समझ सके।

अतः वह बोलनदर्रे से होकर सिन्धु नदी पार करके रावलपिंडी आया। पंजाब के भिन्न-भिन्न स्थानों को देखते हुए वह अमृतसर गया। इसके पश्चात् वह लाहोर में महाराजा रणजितसिंह की समाधि देखकर कश्मीर और वहां से लद्दाख पहुंचा। लद्दाख के बड़े लामा ने उसे बताया कि ल्हासा के पुस्तकालय में बहुत सी पुरानी पुस्तकें हैं जिनमें से ईसा और पाश्चात्य जातियों के वृतान्त लिखे हुए हैं। वह लद्दाख की राजधानी लोह में पहुंचने के बाद हंस मठ को देखने गया और मठ के लामा से उसने हस्तलिखित पुस्तकों को देखने तथा ईसा के जीवनचरित्र सुनने की इच्छा प्रकट की। तब लामा ने उसे वह सब वृतान्त सुनाया। अपनी याख से लौटकर नोनोविच ने इस वृतान्त को ईसाई पादरियों को सुनाया और प्रकाशित करना चाहा। परन्तु पादरियों के कुचक्र से वह सफल न हो सका।

अन्त में कुछ वर्षों के पश्चात इस वृतान्त को फ्रांस में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित करायासम्भवतः उस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी व उर्दू में भी हुआ था। पर वे अनुवाद नहीं मिलते। नानोविच के वृतान्त के अनुसार ईसा जगन्नाथपुरी, काशी तथा दूसरे तीर्थों में छः वर्ष रहकर ब्राह्मणों से शास्त्रों का अध्ययन किया। उसके पश्चात् वह बौद्धों के पहाड़ी इलाके में जहां शाक्य मुनि गौतम ने जन्म लिया था, वहां जाकर रहने लगा और बौद्ध धर्म का अध्ययन छः वर्ष तक किया।

बाईबल के एक प्रकरण में मिलता है कि ईसा प्रचार करता हुआ अपने नगर नासरत वापिस लौटा। वह एक मन्दिर में उपदेश करने लगा। वहां एकत्रित लोगों ने पूछा, उसको यह ज्ञान कहां से मिला और चमत्कार

करना कैसे पाया? क्या वह यूसुफ बढ़ई का पुत्र नहीं है? क्या उसकी मां मरियम नहीं है? और उसके जेम्स, जोसफ, साईमन और यहूदा भाई नहीं हैं? उसकी सब बहिनें भी हमारे बीच में रह रही हैं। तब उसने यह सब कहां से पाया? सन्दर्भ- मत्ती (१३ : ५३-५८)

उसके नगर के लोग जानते थे कि ईसा एक साधारण परिवार का व्यक्ति है, उसके परिवार में कोई विद्वान नहीं है और न ईसा ही अपने बाल्य काल में अप्रतिम प्रतिभाशाली था। अतः उनका यह सन्देह उचित ही था कि ईसा उस ज्ञान और चमत्कार की कला को कहीं और से प्राप्त किया है।

ईसा के प्रचारशैली और उसके धर्मोपदेशों पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः उपरोक्त विवरण से यह मानना होगा कि ईसा ने अपने १६ वर्षों के अज्ञातकाल में भारत में रहकर ज्ञान अर्जन किया और बौद्ध धर्म की भांति निर्बल, दुःखी और निम्न वर्ग के लोगों की सेवा का व्रत लिया। भारत में ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ईसा अपने देश को लौट गया।

ईसाई चर्च ईसा के इस अज्ञात जीवन वृतान्त को स्वीकार नहीं करता। क्योंकि उससे ईसा का ईश्वरपुत्र होंने का दावा निरस्त हो जाता है। ईसा भारत का शिष्य रहा था, इस तथ्या को स्वीकार करने से ईसाइयों की श्रद्धा को क्षति पहुंचेगी, परन्तु सत्य को स्वीकार करना ही महानता है।

४. ईसाई और बौद्ध मत की तुलना

ईसाई मत यहूदी मत का संशोधित रूप है, जिस पर बौद्ध धर्म का खोल चढ़ा हुआ प्रतीत होता है। अतः पाठकों के निर्णय के लिए नीचे ईसाई मत और बौद्ध मत के कुछ सिद्धान्तों की तुलना की गई है।

१. बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद आदि में बहुत सी सदाचार सम्बन्धी बाते लिखीं हैं।

   इन्जील में भी वह सब तो नहीं, किन्तु उनमें से बहुत सी वही सदाचार सम्बन्धी बातें पाई जाती हैं।

२. बुद्ध देव ने अपने धर्म का आधार इन तीन बातों अर्थात् बुद्ध धर्म और संघ पर रखा था।
ईसाई मत ने भी अधिकतर इन तीन बातों अर्थात् पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के मानने पर जोर दिया था।

३. बुद्ध देव ने जाति-पांति का विचार न करते हुए सबको गले लगाने का आदेश दिया था।
यीशु ने भी इसी प्रकार लंगड़े, लूले, कोढ़ी, अंगहीन और अधिक अंग वालों को धार्मिक संस्कारों में सम्मिलित होने की आज्ञा दी।

४. बुद्धदेव ने अपनी शरण में आए हुए चोरों, डकैतों और दूसरे सभी प्रकार के दुष्टों को निर्वाण प्राप्त करा देने का आदेश दिया।
यीशु ने भी अपनी शरण में आए हुए चोरों, डकैतों और दूसरे सभी प्रकार के दुष्टों को यह निश्चय कराया, जो मुझपा ईमान लाकर मेरा भक्त बन जाएगा, मैं उसे अमर जीवन प्रदान करूंगा और उसकी सिफारिश अपने बाप से करूंगा।

५. बुद्ध देव ने जनता को यह शिक्षा दी कि गृहस्थ में रहकर ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है, वरन् घरबार छोड़का और संसार से मुंह मोड़कर तथा भिक्षु बनकर ही निर्वाण प्राप्त हो सकता है।
यीशु ने भी इसी प्रकार लोगों को यह शिक्षा देकर कहा कि जिसको अमर जीवन प्राप्त करने की अभिलाषा हो, वह घर-बार छोड़कर और पत्नी तथा बाल-बच्चे त्यागकर मेरा भक्त बन जाए।

६. बुद्ध देव ने बहुत से भिक्षु तैयार करके इधर-उधर धर्मप्रचार के लिए भेजे।
यीशु ने भी उसी तरह अपने शिष्यों को इधर-उधर प्रचार के लिए जाने का आदेश दिया।

७. बुद्ध देव ने अपने भिक्षुओं को सादा जीवन बिताने और एक विशेष प्रकार का चोगा पहनने तथा अपने पास बहुमूल्य सामान अर्थात् सोना-चांदी न रखने का आदेश दिया।
यीशु ने भी अपने शिष्यों को ठीक इसी प्रकार की शिक्षाएं देकर ऐसा ही लम्बा चोगा पहनने का आदेश दिया।

८. बुद्ध देव ने सब प्राणियों पर दया करने और उनके साथ अहिंसा का व्यवहार करने की शिक्षा दी।
यीशु ने भी स्पष्ट शब्दों में यही उपदेश दिया कि मैं पशु-पक्षियों का वध नहीं चाहता, वरन् उन पर दया दृष्टि रखना उत्तम समझता हूं।

९. बुद्ध देव ने जब अपने धर्म प्रचार का निश्चय किया तो वह स्वप्न में सर्प से डरकर मोह जाल में फंसने लगे थे। उस मोह जाल से निकलने के लिए उन्होने ४६ दिन का व्रत किया।
जब यीशु ने अपने मत का प्रचार करने का निश्चय किया तो उन्हें शैतान ने भ्रम में डालने की चेष्टा की। तब उन्होंने उसके जाल से निकलने के लिए ४० दिन का उपवास रखा।

१०. बुद्ध देव अपने धर्म में सम्मिलित करने के लिए प्रथम स्नान कराकर दीक्षा संस्कार कराया करते थे।
यीशु ने भी अपने मत में सम्मिलित करने के लिए बिल्कुल यही ढंग कायम रखा।

११. भिक्षु बनने और संघ में सम्मिलित होने के लिए प्रत्येक पुरुष को प्रथम दस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। इसके पश्चात् यदि उचित समझा जाता था तो संघ का सभासद बना लिया जाता था, नहीं तो निकाल लिया जाता था।
ईसाई मत के प्रारम्भिक काल में ऐसा होता था कि जो ईसाई बनना चाहता था, प्रथम उसे सुननेवालों में रखा जाता था। इसके बाद परीक्षा लेकर उसे दीक्षा संस्कार अर्थात् बप्तिस्मा दिया जाता था। तब वह चर्च का सभासद हो जाता था। सभासदों के भी पद होते थे। एक साधारण सभासद और दूसरे विशेष सभासद। विशेष सभासद वह कहलाते थे जो पवित्र जीवन बिताकर उच्च कोटि की शिक्षा पाने के भागी बन जाते थे।

१२. बौद्ध भिक्षु स्वास्तिक का चिन्ह पवित्र समझकर हर समय अपने पास रखते हैं।
पादरी लोग सूली का चिन्ह यीशु की स्मृति में पवित्र समझकर हर समय अपने पास रखते हैं।

१३. बुद्ध देव के निर्वाण के पश्चात् उनके शिष्यों न बुद्ध देव की मूर्ति की पूजा और उनकी भक्ति को धर्म का अंग समझकर प्रचार किया। और अपने एक अलग महायान पन्थ बना लिया था।
इसी प्रकार यीशु की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों ने यीशु और उनकी माता मरियम की पूजा और भक्ति को सम्मिलित करके अपना एक अलग रोमन कैथोलिक चर्च बना लिया था।

१४. बौद्धों में अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा, सन्तों की यादगार, माला जपने, घण्टा बजाने और धूप आदि जलाने की प्रथाएं प्रचलित हैं। कैथोलिक चर्च में भी यह प्रथाएं प्रचलित हैं।

५. भारत में ईसाई मत

सन् १४९७ ई. में पुर्तगालवाले कालिकट के बन्दरगाह पर उतरे। सन् १५०२ ई. में उन्होंने कोचीन के राजा से मिलकर अरब के समुद्री बेड़े को नष्ट कर दिया। सन् १५१० ई. में उन्होंने गोवा पर अधिकार कर लिया। सन् १६०० ई. में इंग्लैण्ड की मलिका एलीज़बेथ ने लन्दन के व्यापारियों की एक कंपनी को पूर्वी देशों में व्यापार करने की आज्ञा दे दी। सन् १६१२ ई. में अंग्रेजों ने मोसलीपट्टम् और सूरत में अपनी कोठियां बनाकर व्यापार करना आरम्भ कर दिया। इसके पश्चात् बम्बई में भी वह कोठियां बनाकर व्यापार करने लगे। सन् १६०२ ई. में डचों ने एक कंपनी बनाई। सन् १६२३ ई. में उन्होंने अपना व्यापार भारत के साथ आरम्भ कर दिया। भारत से पश्चिमी किनारे पर सूरत, पूर्वी किनारे पर मोसलीपट्टम् और चिनसुरा में वे अपनी कोठियां बनाकर व्यापार करने लगे। १७ वीं शताब्दी में फ्रांसवालों ने पांडेचरी आदि पर अपना अधिकार कर लिया।

सन् १५४२ ई. में पुर्तगाल का एक पादरी सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर अपने मत के प्रचार के लिए भारत में आया। उस समय यहां के धर्म और कर्म की दशा बिगड़ी हुई थी। अन्धविश्वास, गुरुसिद्धि और करामात आदि में लोग डूबे हुए थे

उस पादरी ने यहां आकर हिन्दुओं की दशा को कुछ दिनों तक

ध्यानपूर्वक जांचा। जब उसने यह समझ लिया कि इनमें ईसाई मत का प्रचार आसानी से हो सकता है तो उसने हिन्दुस्तानी भाषा सीखी। और फिर एक पाठशाला खोली। उस पाठशाला में बाईबल का पढ़ना अनिवार्य कर दिया। सायंकाल को वह पादरी अपने मत के प्रचार के लिए जनता में आने लगा। उसने अपने प्रचार का तरीका यह बनाया कि वह किसी ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर प्रथम कोई अच्छा भजन गाकर लोगों को एकत्रित कर लेता और जब काफी संख्या में लोग एकत्रित हो जाते तो फिर इंजील की कुछ सदाचारी बातों का प्रचार करने लगा। इसके बाद वह अपनी जेब से सूली का चिन्ह निकालकर प्रथम उसको स्वयं श्रद्धा से चूमता और फिर दूसरे लोगों को चूमने के लिए दे दिया करता। इसी प्रकार अपना प्रचार करते-करते उसने बहुत से अपने अनुयायी बना लिए।

गोवा के आस-पास के क्षेत्रों में बहुत से लोग ईसाई बनते चले गए। उसके काम में यदि कोई रुकावट पैदा करता तो उसको गोवा के हाकीम से सख्त दण्ड दिलवा दिया करता। इसी प्रकार लगभग १०० वर्षों तक पुर्तगाल के पादरी आ आकर अपने मत का प्रचार करके लोगों को ईसाई बनाते रहे। बहुत से लोग तो पादरियों की चिकनी चुपड़ी और नर्म बातों में आकर, बहुत से लोग किसी दबाव या लालच में डूबकर और बहुत से अपने धार्मिक सिद्धान्तों को न जानने के कारण ईसाई मत ग्रहण करते चले गए।

पुर्तगाल के ज्युइस्ट को सम्प्रदाय के पादरियों की इस सफलता को देखकर अंग्रेजों और दूसरे देशों के ईसाइयों के सम्प्रदायों के मुंह में भी पानी भर आया। उनके पादरी भी अपन-अपने ईसाई सम्प्रदायों का प्रचार करनें की इच्छा से इस देश में आने-जाने लगे। उन सब पादरियों ने भी बहुधा अपने प्रचार का ढंग वही रखा जो पुर्तगाल के पादरी अपना चुके थे। उन्होंने भी यहां की भाषा सीखी, हिन्दुओं के कुछ शास्त्रों और प्रचलित रीतिरिवाजों से जानकारी प्राप्त की। यहां के अवतारों और ऋषिमुनियों के जीवनचरित्र याद किए। वह अपना भेष भी ब्राह्मणों और सन्यासियों जैसा

रखने लगे। उनमें से बहुत सों ने तो अपने नाम भी हिन्दुओं जैसे रख लिए। उनके कुछ नाम यह थे- तनोबोध, प्रेमस्वामी और वैराम मुनि इत्यादि। वह अपने माथे पर चन्दन के टीके लगाया करते और गले में रुद्राक्ष की माला पहना करते थे। वह लोगों के सामने श्रीराम, श्रीकृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु और महेश इत्यादि के विषय में अच्छे-अच्छे भजन गाकर उन्हें आकर्षित करने लगे। सायंकाल को प्रतिदिन वे टोलियां बनाकर उपदेश देने लगे। उनके उपदेशों में भीड़ होने लगी। वे लोगों से बड़े प्रेम से मिलते, मीठा बोलते और अपने दूसरे नम्र व्यवहारों से उन्हें आकर्षित करने की अनेकानेक चेष्टाएं करने लगे।

भजन गाने के पश्चात् उनमें से एक पादरी खड़ा होकर अपना उपदेश आरम्भ कर देता। पहले तो वह हिन्दुओं के अवतारों और ऋषिमुनियों की प्रशंसा के पुल बांधता और फिर उनके साथ यीशु मसीह को जोड़कर उनकी प्रशंसा में जमीन और आसमान के क़लाबे मिलाने लगता। वे अधिकतर इस बात पर जोर दिया करते कि यीशु ईश्वर का इकलौता बेटा है। ईश्वर ने बादशाही का काम उनके सुपुर्द कर रखा है। वह लोगों को उनके पापों से छुड़ाकर मोक्ष दिलानेवाला है। उस पर ईमान लाए बिना किसी को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। कहां तक कहा जाए इसी प्रकार कुछ समय तक उनके प्रचार करने का यह प्रभाव हुआ कि लोगों को उनकी बातें अच्छी लगने लगी। और वे उनके अनुयायी बनते चले गए। अब उन पादरियों का बड़ा आदर सम्मान होने लगा। लोग उन्हें पालकियों, सजे हुए घोड़ों और रथों आदि में बिठाकर बड़ी सज-धज और बाजे-गाजे के साथ बजारों और गली-कूचों में से जुलूस के रूप में निकालने लगे।

उन पादरियों ने भीतरी तौर पर अपने-अपने प्रचार और उपदेश के कार्यों को बांट रखा था। उनमें से कुछ ऊंची जाति के लोगों में काम करते थे और कुछ नीची जाति वालों से ही सम्बन्ध रखते थे। नीची जाति के लोगों की ओर उनका विशेष ध्यान रहता था। वेश्याओं से भी उन्होंने अपना जोड़-तोड़ कर रखा था। उनके द्वारा वे रईसों, अमीरों और

तमाशबीनों को ईसाई मत ग्रहण कराने की चेष्टा किया करते थे।

अंग्रेज और फ्रांसिसी पादरियों ने अनेकों स्कूल और कॉलिज खोलकर भारतियों को मुफ्त शिक्षा बाईबल की शिक्षाओं के साथ दीं। इन पादरियों ने भी अपने हिन्दू नाम रखकर बहुत सी धार्मिक पुस्तकें बनाईं। जैसे मंगल समाचार, सुन्दर पुराणी कथा, धर्म का सार, गुरु ज्ञान, जैसी करनी वैसी भरनी, गीता की पोथी, ईसा कलंग की मृत्यु इत्यादि। यहां तक कि अंग्रेज सरकार मिशन के लिए बहुत सा रुपया देने लगी।

अंग्रेजों ने हिन्दू शास्त्रों के उलट-पुलट अर्थ किए सन् १७६१ ई. में राबर्ट-डी-नोबलि नामक पादरी ने एक पंडित को रुपया देकर पुराण और बाईबल के मिश्रित विचारों को लेकर संस्कृत में एक पुस्तक तैयार कराई जिसका नाम यजुर्वेद रखा। इस पुस्तक का भेद मैक्समूलर ने इन शब्दों के साथ खोल दिया- "यह समस्त पुस्तक बच्चों का खेल है।"

कालान्तर में सर्व प्रथम स्वामी दयानन्द व आर्य समाज ने धर्मान्तरण के इस कुचक्र को रोकने का प्रयास किया। एक तरफ महर्षि दयानन्द ने अपने समय में ईसाई बने हिन्दुओं की शुद्धि करके सदियों से वापसी के लिए बन्द दरवाजे खोल दिए। दूसरी तरफ अपने असंख्य प्रवचनों, ईसाई पादरियों से किए गए शास्त्रार्थों एवं सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों के माध्यम से धर्मान्तरित हो रहे हिन्दुओं को बचाने का सफल प्रयास किया।

महर्षि निर्वाण के पश्चात् इस शुद्धि आन्दोलन को और तेज किया। स्वामी श्रद्धानन्द पं.लेखराम लाला लाजपत राय आदि आर्य समाज के प्रमुखों ने अपनी जानें गंवाकर भी इस कार्य को तत्परता से किया। वर्तमान समय में आर्य समाज के इस आन्दोलन की महत्ता को समझकर विश्वहिन्दू परिषद एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने राष्ट्रव्यापी अभियान का रूप दे दिया है।

६. सेंट जेवियर्स एवं गोवा में ईसाई धर्मान्तरण

(यह अध्याय उन धर्म, संस्कृति तथा जाति की रक्षा हित प्रताड़ित एवं शहीदों को समर्पित किया जाता है।)

गोवा पर पुर्तगालियों का कब्जा हो जाने के बाद वहां ईसाईकरण का दुश्चक्र प्रारम्भ हो गया। जेवियर नामक पादरी के १५४२ में गोवा पहुंचने के बाद अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गई। १५६० में इन्क्वीजीशन गोवा में प्रारम्भ हुआ। जिसका घोषित उद्देश्य तो ईसाई बन गए लोगों पर ईसाई कानून लागू करना था, परन्तु इस ने ईसाई न बननेवालों को दण्डित करना प्रारम्भ कर दिया। गोवा में किसी भी गैर ईसाई को सम्पत्ति का अधिकार नहीं रहा। परिवार के एक सदस्य के ईसाई बनने पर अन्य सभी को ईसाई बनना पड़ता था, न बनने पर वे दण्डित किए जाते थे। घर में छिपाकर रखे भगवान की मूर्ति से लेकर तुलसी का पौधा तक मृत्यु दण्ड का कारण था। हिन्दू रीति रिवाज से विवाह करना, विवाह के अवसर पर गाना बजाना, तला हुआ भोजन जैसे पूरी आदि बनाना, मसाला पीसना, अनाज कूटना, मण्डप या तोरण लगाना अपराध था। विवाह के अवसर पर उपस्थित लोगों का पान के बीड़े से स्वागत भी दण्डनीय था।

मृत्यु के अवसर पर भी घर में सामूहिक भोज अथवा गरीबों को खाना बांटने पर रोक थी। पितृविहीन बालक-बालिका को पादरी को न सौंपकर अपने घर में रखना जैसी बातें भी दण्ड का कारण बन जाती थीं। हिन्दू पुजारी गोवा से निकाल दिए या मार दिए गए। हिन्दू रीति से धोती या यज्ञोपवीत पहनना, चन्द्रग्रहण-एकादशी पर व्रत रखना और अपने नाम के साथ जाति लगाना भी दण्डनीय था। हिन्दुओं को जबरन ईसाई पादरियों के प्रवचन सुनने पड़ते थे। हिन्दुओं को घोड़े पर बैठने की अनुमति न थी। ईसाई बनने पर जमीन का लगान माफ कर दिया जाता था। हिन्दू होने पर अपमान, दण्ड और मृत्युभय था।

इन्क्वीजीशन के अन्तर्गत मृत्युदण्ड देने के ढंग थे। जिनमें क्रास पर बांध कर जीवित जलाना, सिर काट लेना आदि सामान्य था। **एक दिन**

में छः हजार लोगों के सिर कटने पर जेवियर ने सन्तोष व्यक्त किया था और १५४२ में कहा- जब सब ईसाई बन जाएंगे, तब झूठे देवताओं के मन्दिर नष्ट किए जाएंगे, तब मेरी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं होगी।

-(सेंट जेवियर्स- ए मैन एण्ड हीज मिशन से)

हजारों व्यक्तियों की हत्या, हजारों महिलाओं को क्रास से बांधकर जीवित जला दिया गया। विश्व का जघन्यतम हत्याकाण्ड और अत्याचार का यह क्रम १८१२ तक गोवा में जारी रहा।

पंथ न्यायधिकरण की न्यायप्रक्रिया

पन्थ के नाम पर न्याय का ढोंग कर मत परिवर्तन को जबरन थोपने के चर्च के क्रूर हथकण्डे का नाम था इन्क्वीजीशन, जिसके लिए एक प्रक्रिया भी चर्च ने निश्चित की थी। सर्वप्रथम अभियुक्त को न्यायधिकरण के सम्मुख आरोप स्वीकार न करने पर, उसको प्रताड़ना कक्ष (टॉर्चर रूम) में ले जाने का आदेश सुनाया जाता था।

वहां उपस्थित नोटरी अभियुक्त को सूचित करता था कि प्रताड़ना के इस क्रम में यदि वह मर जाता है, उसके हाथ-पैर या कोई अंग क्षतिग्रस्त या नष्ट हो जाते हैं, तो यह उसकी स्वयं की जिम्मेवारी होगी। यदि वह इस स्थिति से बचना चाहता है, तो आरोप स्वीकार करले।

कुछ तरीके प्रताड़ित करने के

१. आरोप स्वीकार न करने पर प्रताड़ना प्रारम्भ की जाती थी। सर्वप्रथम दोनों हाथ पीछे कलाई से बांधकर इस प्रकार ऊपर टांगना कि उसके पैर जमीन से ऊपर उठे रहें और कुछ-कुछ क्षण बाद झटका देते रहना।
२. बांस की सीढ़ी पर अभियुक्त को बांध कर इस प्रकार पानी के कुण्ड पर बांधना कि बार-बार पानी में सिर डुबाया जा सके।
३. हाथ पैर की नसें काटना।
४. हाथ पैर साथ-साथ बांध कर लटकाना।
५. मुख में लोहा डालकर मुख खुला रखना और रुई के टुकड़ों में मिला पानी डालना जिससे श्वास रुक जाए।

६. यन्त्रणा देने के यन्त्र भी विकसित किए गए थे। जैसे थम्ब स्क्रू, लैग क्रशर, स्पेनिश बूट।
७. उबलते तेल में हाथ-पैर डालकर जलाना।
८. जलते हुए गन्धक से जलाना।
९. हाथ-पैर बांधकर मोमबत्ती से लगातार मांस जलाना।
१०. गले में मछली डाल कर ऊपर से पानी न पीने देना न उल्टी करने देना।
११. चक्रवाली कुर्सी पर बेहोश होने तक गोल घुमाना।
१२. ऊंगली जितनी लम्बे कांटोंवाली कुर्सी पर निर्वस्त्र बिठाना।
१३. पीछे की ओर मोड़कर रीढ़ की हड्डी तोड़ना।
१४. धर्मभ्रष्ट करने के लिए जबरिया गाय या सुअर का मांस खिलाना। ऐसे अनेकों अत्याचारों का वर्णन है। सामान्यतः १० में से ९ निर्दोष बन्दी तो इन क्रूर अत्याचारों के कारण ही बिना अपराध स्वीकार किए मर जाते थे। स्त्रियों को भी इसी प्रकार के दण्ड देने का विधान था।
१५. न्यायाधिकरण में न्यायाधीश के अतिरिक्त जो दो अन्य व्यक्ति नियुक्त होते थे, वे भी चर्च के प्रतिनिधि होते थे।
१६. अभियुक्त ही नहीं गवाहों को भी गवाही देने के लिए इसी प्रकार प्रताड़ित कर गवाही दिलाई जाती थी।

(सन्दर्भ- इन्क्वीजीशन इन गोवा बाई ए.आर.पिरोलकर)

देखा जाए तो ईसाई धर्मानुयायियों ने उपरोक्त अत्याचारों को एक प्रकार के धर्मिक अनुष्ठानों के रूप में किया था। इसका प्रमाण बाईबल में निम्न रूप से देखा जा सकता है-

यदि तेरा सगा भाई, वा बेटा, वा बेटी, वा तेरी अर्धांगिनी वा प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले में तुझको यह कहकर फुसलाने लगे, कि आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना वा पूजा करें, जिन्हें न तो तू न तेरे पुरखा जानते थे, चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेवाले आस-पास के लोगों के, चाहे पृथ्वी के एक छोर से लेके दूसरे छोर तक दूर-दूर के

रहनेवालों के देवता हों, तो तू उसकी न मानना, और न तो उसकी बात सुनना, और न उसपर तरस खाना, और न कोमलता दिखाना, और न उसको छिपा रखना, उसको अवश्य घात करना, उसके घात करने में पहिले तेरा हाथ उठे, पीछे सब लागों के हाथ उठें। उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए, क्योंकि उसने तुझको तेरे उस परमेश्वर यहोवा से जो तुझको दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, बहकाने का यत्न किया है। -व्यवस्थाविवरण (१३ : ६-१०)

खेदजनक है कि ऐसी मानव-मानव के बीच शत्रुता के बीज बोनेवाले कुत्सित विचारों से युक्त बाईबल को लोग न केवल पवित्रता का पर्याय मानते हैं अपितु ईश्वरीय पुस्तक भी मानते हैं। इस तथा ऐसे समस्त विवरणों ने बाईबल वर्णित तथाकथित ईश्वर की पोल खोल दी है। कितनी बड़ी विडम्बना है कि जिन धर्मान्तरित हिन्दुओं (वर्तमान ईसाइयों) के पूर्वजों को अमानवीय यातनाओं का शिकार होना पड़ा उन्हीं के वंशज आज मानवता का महान शत्रु, क्रूर, मतान्ध तथाकथित सेंट जेवियर के झूठे सन्तपन का विरोध करने के बजाए उसकी पवित्र (?) देह प्रदर्शन के दिन उसका सम्मान करने लाखों की संख्या में एकत्रित होते हैं। ध्यान दें! भारत के मतान्तरित ईसाइयों ने अपना सम्प्रदाय बदला है, अपने पूर्वज नहीं।

७. द मिथ ऑफ ए सेंट- मदर टेरेसा

विश्वविख्यात मदर टेरेसा को जब चर्च द्वारा मृत्योपरान्त सन्त की उपाधी से सम्मानित किया गया तब विश्व में चारों तरफ से आलोचनाओं के तीव्र स्वर भी सुनाई पड़े। इस अध्याय में हम पक्षपात रहित होकर इन आलोचनाओं की समीक्षा करते हैं-

मदर टेरेसा कोलकाता की एक प्रसिद्ध विभूति थीं जिसका नाम ईसाई जगत् में सेवा की प्रतिमूर्ति के नाम से विख्यात है। मदर टेरेसा को विश्वव्यापी प्रसिद्धि नोबल पुरस्कार ने प्रदान की थी। नोबल पुरस्कार उन्हें सेवा कार्यों के लिए प्रदान किया गया था। पाठकों को जान करके हैरानी हो सकती है कि नोबल पुरस्कार पानेवालों में कुछ व्यक्ति विवादित

भी रह चुके हैं। जिनमें से एक मदर टेरेसा भी है।

सन् १९०६ ई.में अमरीका के राष्ट्रपति रुसवेल्ट को यह पुरस्कार दिया गया था। उसी राष्ट्रपति ने अमरीका को युद्ध की भट्ठी में झौंक दिया था। सन् १९१२ ई. में इसी राष्ट्रपति के सचिव इलिहुरूट को दिया गया। यह पुरस्कार युद्ध में जपान को नीचा दिखाने के लिए दिया गया था। सन् १९५३ में अमरीका के आर्मी चीफ जॉर्ज मार्शल को यह पुरस्कार दिया गया। जिनका शान्ति से कुछ भी लेना-देना नहीं था। सन् १९५३ ई. में हैनरी किस्सींगर को यह पुरस्कार दिया गया था। यह व्यक्ति वियतनाम युद्ध का मुख्य सूत्रधार रहा था। इसी ने निष्पक्ष कम्बोडिया एवं लाओस पर बमबारी की थी जिससे कि समूचे क्षेत्र को आतंकित किया जा सके। इस तथाकथित शान्ति के दूत ने न्यूनतम साढ़े तीन लाख लोगों की जानें ली थीं। सन १९३० एवं १९५८ में यह पुरस्कार ईसाई मिशनरी के बिशपों को दिया गया, जिनके जीवन का उद्देश्य केवल ईसाई मत के प्रचार का रहा है। विचारणीय बात यह है कि अल्पसंख्यकों का तुष्टिकरण करनेवाले महात्मा गांधी को कभी यह पुरस्कार नामांकित होने के उपरान्त नहीं दिया गया क्योंकि उन्होंने ईसाई धर्मान्तरण के विरुद्ध आवाज उठाई थी।

सन् १९९६ ई. में नैल्सन मंडेला को दो पादरियों के संग यह पुरस्कार दिया गया। इन पादरियों ने ईसाई बहुल पूर्वी तिमोर को इंडोनेशिया से अलग होने में सहायता की थी। सबसे आगे सन् २००० में दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति को अमरीका के प्रति अपनी सकारात्मक भूमिका के लिए यह पुरस्कार दिया गया। इससे हम भली भांति जान सकते हैं कि नोबल पुरस्कार निष्पक्ष रूप से नहीं दिए जाते। इनके पीछे या तो ईसाई जगत अथवा अमरीका के हितों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है। अतः कोई आश्चर्य नहीं कि मदर टेरेसा का ईसाई जगत से सम्बन्ध होना इस पुरस्कार को प्राप्त होने में प्रधान कारण रहा है।

मदर टेरेसा की प्रसिद्धि के कारण

मदर टेरेसा पर कोलकाता में बहुत से वृत्तचित्र बने थे जिनमें यह दिखाया गया था कि कोलकाता भूखमरी, गंदगी एवं गरीबी वाला शहर है

जहां पर मदर हजारों को भोजन, कपड़ा एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराती है। मदर के कारण कोलकाता की भूखमरी आदि समस्याएं समाप्त हो रही हैं। यहां तक की मदर के कारण कोलकाता को पर्याप्त सम्मान भी मिला है। इस प्रकार की भ्रान्ति बनाकर मदर पश्चिम से भारी धनराशि दानरूप में प्राप्त करने में सफल हुई। मगर उस धनराशि का प्रयोग ननों एवं ईसाई संस्थानों पर अधिक मात्रा में किया गया। मदर द्वारा संचालित "निर्मल हृदय" में इंजेक्सन की सुइयों को दोबारा उबालकर प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं रुग्णों के शौच से भरे हुए कपड़े एवं भोजन के पात्र एक ही स्थान पर धोए जाते हैं। जब कि मदर की ननों की फौज अपनी सामान्य जांच भी सबसे मंहगे अस्पताल में कराती है।

मदर के अनुसार उन्होंने ६१२७३ बच्चों को बचाया है, यह बात उन्होंने नोबल पुरस्कार वितरण समारोह के अपने वक्तव्य में कही थी। उनकी यह बात सन्देह जनक है। ईसाई मत में प्राकृतिक परिवार नियोजन (नैचुरल कॉन्ट्रासेप्शन) की मान्यता है। मदर ने बिना सोचे समझे इतनी बड़ी सभा में झूठा वक्तव्य दिया। यदि मदर या उनके अनुयायियों से पूछा जाता आपके इस वक्तव्य का आपके पास कोई प्रमाण भी है? तो उन्हें सांप सूंघ जाए। हास्यास्पद स्थिति तो यह है कि न जाने किस आवेश में मदर यह भी उक्त समारोह में कह गईं कि मैं नहीं जानती कि कोलकाता में किसी महिला ने कुछ समय से गर्भपात कराया है। इतनी बड़ी सभा में ऐसी निराधार बातों को कहनेवाली झूठी महिला को सन्त का दर्जा देनेवालों की बुद्धि पर क्यों न तरस आवे।

कालीघाट के इलाके में जहां मदर समाजसेवा करती थीं वहां मुख्य रूप से आश्रितों में मदर की ननों की फौज एवं ईसाई परिवार हैं। गैर ईसाइयों की संख्या तो न के बराबर है। मदर का मानना था कि रुग्णों को औषधी कम और प्रार्थना की अधिक आवश्यकता है। इन सबके अलावा मदर के मृत्यु के समय उनके चारों ओर लाखों रुपए की मशीनें (Respiratory Ventilator) एवं हजारों रुपए की औषधियाँ रखीं थीं।

जिस मदर ने अप्रैल १९९६ में लेडीज़् होम जर्नल, अमरीका से

निकलने वाली पत्रिका में कहा था कि– "मैं एक गरीब की भांति अपने कालीघाट स्थित घर में मरना चाहती हूं"। वही मदर अपना इलाज कैलीफोर्निया, रोम व कोलकाता आदि के मंहगे अस्पतालों में करा चुकी थीं। कोलकाता में स्थित बिरला हार्ट इंस्टिट्यूट में अपने हृदय का इलाज कराया था। विश्व प्रसार माध्यमों को मदर ने यह कहकर धोखा देने का प्रयास किया था कि मैं मोतियाबिंद (Cataract) का ऑपरेशन Pitts-burgh स्थित St Francis Medical Centre में इसलिए नहीं कराना चाहती क्योंकि यहां के इलाज में व्यय होनेवाला ५ हजार डॉलर गरीबों के काम आएगा। जब कि सत्य यह है कि अगले ही वर्ष St.Vincent's Hospital, New York में इससे अधिक राशि में मदर ने अपना ऑपरेशन कराया था।

भारत की छवि को विदेशों में बिगाड़ने में मदर सर्वाग्रणी रहीं हैं। मदर ने विदेशों में कई एक नितान्त झूठे वृत्त चित्र बनाकर प्रसारित कराए थे जिसे दिखाकर वे मानवता की सेवा के नाम पर धन उगाही करती रहीं। ऐसे ही एक वृत्त चित्र (Video Film) में मदर ने कोलकाता माफिया एवं झुग्गी झोंपड़ीवालों के बीच में टकराव दर्शाया था। दंगे के बीच में एक ओर मदर की नन्स प्रार्थना कर रहीं थीं जब कि दूसरी ओर हिंसात्मक कार्यवाही का चित्रण था। जिसमें एक लड़के का हाथ कटता दिखाया गया एवं किसी व्यक्ति द्वारा महिला के पेट में चाकू घोंपा जाता दिखाया गया। जबकि कोलकाता में उक्त घटना कहीं पर भी घटी ही नहीं थी।

विश्व प्रचार माध्यमों को अपने इच्छानुकूल प्रयोग करने में मदर अन्यतम ही रहीं हैं। २६ जून १६८६ में अमरीका में मियांमी स्थित एक होटल में गर्भपात पर सम्बोधित करने के बाद मदर ने भोजन ग्रहण करने से यह कहकर मना किया कि– "मैंने पानी के एक घूंट के अभाव में लोगों को मरते देखा है। मैं आपकी रईसी ठाठ-बाट की आवभगत नहीं चाहती मैं तो उन गरीबों के बीच ही अपने को प्रसन्न अनुभव करती हूं।" अगले ही दिन मदर के इस वक्तव्य पर विश्व के सभी समाचार पत्रों ने मदर को त्याग व दया की मूर्ति रूप में प्रचारित किया। पाठक स्वयं अनुमान

लगा लें कि इस प्रकार के हथकण्डे अपनाने वाली मदर ने किस प्रकार विश्वभर के दानदाताओं से दान उगाही की थी।

प्रचुर मात्रा में विश्वभर से दान प्राप्त करने के उपरान्त भी मदर के सेवाक्षेत्र के संस्थानों में लोग अत्यन्त बदतर स्थितियों में जीवनयापन के लिए विवश थे। मदर द्वारा संचालित रुग्णालय में प्रयोग की जा चुकी सुईयों को ठंडे पानी से पुनः धोकर प्रयोग करना आम बात है। सभी जानते हैं कि इस प्रकार सुइयों का प्रयोग कई प्रकार के रोगों जैसे एच. आई.वी. एड्स आदि के संक्रमण को फैलाने का कारण बन सकता है।

मदर की सेवा पर उस समय कई प्रत्यारोप लगे थे जब एक अस्सी वर्षीय लकवाग्रस्त एवं दृष्टिहीन अम्माजी को मिशनरी की एम्बुलेंस फुटपाथ पर पटककर चली गई। पुलिस द्वारा हस्तक्षेप किए जाने पर सिस्टर निर्मला द्वारा स्थानाभाव एवं अम्माजी को घर के याद आने का झूठा बहाना बनाकर पिंड छुड़ाने का प्रयास किया गया था।

एक अन्य घटना में १८ सितम्बर २००० को मदर की एक नन सिस्टर फ्रांसिस्का पर पुलिस ने अभियोग चलाया। आरोप यह था कि उसने चार बच्चों को गैरकानूनी रूप से अपने पास रखा था एवं उनमें से एक सात वर्षीय कराबी मण्डल नामक लड़की का हाथ जलाया था। यह आरोप उसपर सिद्ध हुआ तथा उसे न्यायालय द्वारा दो मास कारावास या जुर्माने का दण्ड दिया गया। तब उस नन ने जुर्माना देकर अपना पीछा छुड़ाया था।

१८ नवंबर १६६५ को नई दिल्ली में ईसाई जगत् के संग उन्होंने नव परिवर्तित ईसाई दलितों के आरक्षण के लिए धरना दिया। इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। अगले ही दिन सुषमा स्वराज ने कहा– जातिवाद की इस बुरी प्रथा से लड़ने की बजाए मदर इसे ईसाई धर्म में भी प्रविष्ट कराना चातती हैं, यह बहुत खेदजनक है। इस पर मदर ने कोलकाता में प्रेस गोष्ठी कर स्पष्टिकरण दिया कि मैंने सोचा था कि यह तो एक प्रार्थना सभा है। मुझे नहीं पता था कि यह सभा आरक्षण के लिए है। इस पर न केवल स्थानीय समाचार पत्रों ने अपितु ईसाइयों ने भी मदर की पीछे हटने पर आलोचना की थी।

कुछ समय पूर्व मदर टेरेसा को सन्त की उपाधी प्रदान की गई। ईसाई जगत् में सन्त की उपाधी उस व्यक्ति को दी जाती है जो कोई चमत्कार दिखाता है। मदर ने एक आदिवासी महिला जिसका नाम मोनिका बेसरा था उसे ठीक करने का चमत्कार दिखाया ऐसा चर्च ने प्रचारित किया है। सबसे पहले हम ये जानें कि ईसाई जगत में सन्त की उपाधी किन-किन को मिली है। गोवा में हजारों हिन्दुओं को मरवाने वाले तथा हजारों को बलात् ईसाई बनानेवाले फ्रांसिस जेवियर को सन्त की उपाधी दी गई थी। सन् २००० में १६ वीं शताब्दी के पोप पायस नवम् को यह उपाधी दी गई थी। उस समय पोप पायस सर्वाधिक घृणा का पात्र समझा जाता था। उसकी जेलें सदा भरी रहती थीं। उसने सार्वजनिक रूप से फांसी की कुप्रथा को फिर से आरम्भ किया था। उसने एक गैर ईसाई लड़के का अपहरण करा उसे ईसाई बना लिया था। उस ने गैर ईसाइयों को कहा था कि वे कुत्ते हैं और रोम की गलियों में हर रोज घूमते हैं। जब उसकी मृत्यु हुई तब रोमवासियों ने हमला कर उसके ताबूत को खाई में फैंकने का प्रयास ही किया था कि पोप की सेना ने पहुंचकर ताबूत को बचा लिया। पोप पायस को एक महिला की पैर की हड्डी जोड़ने के कारण सन्त की उपाधी दी गई थी।

सन्त बनाने की इस मुहीम में दिवंगत पोप ने उस समय सभी को हैरान ही कर दिया था जब उसने जुआन डिएगो नामक मैक्सिको के १६ वीं शताब्दि के एक व्यक्ति को सन्त बनाया। वास्तव में इस नाम के व्यक्ति के विषय में ईसाई इतिहासकार भी संशय में हैं। एक अन्य पोप पायस बारह को भी सन्त की उपाधी दी गई जिसने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हिटलर की प्रशंसा की थी एवं स्वयं हजारों युद्धबन्दियों को मरवाया था।

सन् २००१ में निकोलस ग्रोस को सन्त की उपाधी दी गई। इन महाशय ने भी हिटलर का साथ दिया था। स्वयं इनके पुत्र ने अपने पिता को सन्त की उपाधी न देने की सिफारिश की थी मगर उसकी बात को अनसुना कर दिया गया। सन २००१ में पोप ने एक साथ २३३ व्यक्तियों को सन्त की उपाधी दी जिकी फ्रेन्को कैथोलिक स्टेट की ओर से स्पेन के विरुद्ध युद्ध में मृत्यु हुई थी।

अब हम मदर टेरेसा के जीवन का दर्शन करते हैं। मोनिका बेसरा नामक आदिवासी महिला पेट में गांठ के रोग से पीड़ित थी। ५ सितंबर १९९८ को मदर की २ ननों द्वारा उसके शरीर से मदर का मैडल बांध कर रात भर पूजा की गई। प्रातःकाल वह गांठ गायब हो चुकी थी। इसे मदर द्वारा किया गया चमत्कार समझा गया। तत्पश्चात् ननों द्वारा कोलकाता में इस समाचार को प्रसिद्ध किया गया। चर्च द्वारा ५ डॉक्टरों को मोनिका के परीक्षण के लिए भेजा गया। १ अक्तूबर २००२ में वेटिकन द्वारा इस चमत्कार की पुष्टि कर दी गई। ४ अक्तूबर को रात्रि समाचारों में ई टी.वी. पर बंगाल के स्वास्थ्य मन्त्री पार्थ डे का साक्षात्कार प्रसारित हुआ। उन्होंने कहा कि मोनिका बालूरघाट अस्पताल में अपना इलाज करा रही थी। उस अस्पताल की अधिकारी डॉ.मंजू मुर्शीद ने मोनिका के इलाज की पुष्टि की, मोनिका का इलाज करने वाले दो डॉ. टी.के.बिस्वास एवं डॉ.रंजन मुस्तफी ने पत्रकारों के समक्ष अपने बयान दिए। उनके अनुसार मोनिका पेट की टी.बी. से पीड़ित थी। उस समय के सभी समाचार पत्रों ने अपनी-अपनी प्रतिक्रिया चमत्कार में अविश्वास के रूप में दर्शाई। इधर चर्च ने ३४ हजार पृष्ठों की गवाही, ११२ गवाहों के बयान दर्ज कर वेटिकन भेज दी जिससे कि मदर को सन्त घोषित किया जा सके। अर्थात् कुल मिलाकर उन्होंने एक खेल रचा जिससे कि मदर को संत घोषित किया जा सके। किसी रोगी को ठीक करने के चमत्कार की सिद्धि तो दूर की बात है यह बात ही अविश्वसनीय लगती है जो मदर स्वयं बिमारियों से इतनी ग्रस्त रहीं और अपना ईलाज विभिन्न अस्पतालों कराती रहीं वह किसी और को स्वास्थ्य प्रदान करेंगी।

चमत्कारवाद को पोषण देना, मनगढ़न्त चमत्कारों द्वारा ईसाई धर्मान्तरण के कर्णधार रहे ईसाई प्रचारकों को पक्षपातपूर्ण रीति से सन्त घोषित करना ईसाई मिशन से जुड़ी संस्थाओं की नीति रही है। जिससे उनके मरणोपरान्त भी यावज्जीवन उनके द्वारा किया गया कार्य चलाया जा सके। आधुनिक युग में विज्ञान को धत्ता बताकर चमत्कारवाद को भुनाने की चर्च की प्रवृत्ति ने विदेशों में चर्च की लोकप्रियता को बहुत

अंशों में समाप्त सा कर दिया है। वहां जब इनके हथकंडे नहीं चलते है तब ये भारत जैसे विकासशील देशों की भोलीभाली गरीब जनता को चमत्कारों का लुभावना प्रलोभन दिखाकर धर्मान्तरण के लिए प्रेरित करते हैं। समय रहते इनके षडयन्त्रों का सामान्य जनता में पर्दा फाश न किया गया तो समूचा भारत को नागालैण्ड एवं मिजोरम की भांति ईसालैण्ड में परिवर्तित होते देर न लगेगी।

८. ईसाईयत पर महापुरुषों की सम्मतियां

यदि वे पूरी तरह से मानवीय कार्यों तथा गरीबों की सेवा करने के बजाए डॉक्टरी सहायता, शिक्षा आदि के द्वारा धर्म परिवर्तन करेंगे, तो मैं उन्हें निश्चय ही चले जाने को कहूंगा। प्रत्येक राष्ट्र का धर्म अन्य किसी राष्ट्र के धर्म के समान ही श्रेष्ठ है। निश्चय ही भारत का धर्म यहां के लोगों के लिए पर्याप्त है। हमें धर्म परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं।

–महात्मा गांधी गांधी वाङ्मय खण्ड ४५, पृष्ठ ३३६न्यू

टेस्टामेंट के विषय में पं.जवाहरलाल नेहरू के विचार

"About this time, the inquisition that terrible weapon which the Roman Church forged to crush all who did not bow down to it, was established in Spain, Jews, who had prospered under the Saracens, were now forced to change their religion, and many were burnt to death. Women and Children were not spared."

(Glimpses of World History-p.191)

" The church started the region of violence in religion, formally and officially, in 1233, by starting what is called 'The Inquisition'. This was a kind of court which inquired into the Orthodoxy of people's beliefs, and if they did not come up to the standard, their usual punishment was death by burning. There was a regular hunt for Heretics and hundred of them were burnt at the stake.Even worse than this burning was the torture inflicted on them to make them recant.Many poor unfortunate women were accused of being Witches and were burnt."

"All over the country the inquisition flourished and the most

horrible tortures were inflicted on so called heretics.from time to time great public festivals were arraged when batches of these Heretics man and women were burnt alive on huge pyres in the presence of the king and royal family and ambassadors and thousands of people. Autos-da-fe, acts of faith, these public burnings were called. Terrible and monstrous all this seems.The whole history of europe of this period is so full of violence and horrible and barbarous cruelty and religious bigotry as to be almost unbelievable. "

(Glimpses of World History-p.230)

९. धर्मशास्त्र एवं इतिहास में शुद्धि

इस प्रकरण में हम कुछ प्रमाण शुद्धि विषयक धर्मशास्त्रों एवं ऐतिहासिक उदाहरणों द्वारा दे रहे हैं। यवन एवं अंग्रेज शासन काल में बड़े पैमाने पर मतान्तरण किया गया। लेकिन चाहते हुए भी पुनर्वापसी वैदिक धर्म में सुलभ न थी। यद्यपि इतिहास में अपवाद स्वरूप उदाहरण शुद्धि के मिलते भी है पुनरपि विधिवत् शुद्धिआन्दोलन को वेदादि शास्त्रसम्मत बताकर आर्यसमाज के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम हम वेद की सम्मति इस विषय में दर्शाते हैं–

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदःपुनीहि मा।। –यजु. (१९/३९)
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्।
अग्ने क्रत्वा क्रतूँ ऽ रनु।। यजु. (१९/४०)

अर्थात् मन्त्रद्रष्टा वैदिक ऋषियों ने परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त कर समाज को संगठित, बलशाली और प्रगतिवान बनाने के लिए इन मन्त्रों द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि हम सभी मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध रहें। ज्ञान द्वारा निरन्तर शुभ कर्मों को करते रहें। यदि कोई हमारे परिवार, समाज तथा राष्ट्र की स्वाभाविक धारा से किन्हीं कारणों से विलग या अशुद्ध हो जाए तो उसे बिना किसी संकोच के पुनः अपने समाज में आत्मसात कर लें।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः।।

-ऋग्वेद (८/६३/५)

परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हमें श्रेष्ठ स्वभाव को प्रदान करे। जिससे धर्म आदि सद्गुणों की वृद्धि करते हुए हम समस्त संसार को आर्य अर्थात् शुद्ध करें।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।। -ऋग्वेद (१०/१३७/१)

हे आर्यों, तुम लोग अधोगत पतित पुरुषों को फिर से उन्नत अर्थात् शुद्ध करो। पापी और अपराधी पुरुषों को दोबारा जीवन दो। अर्थात् शुद्ध बनाओ।

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदित विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन।।

-ऋग्वेद (१/५१/१)

हे पुरुष तू उत्तम सुखादि गुणों के उत्पन्न करनेवाले व्यवहार की सिद्धि के लिए दया आदि गुणयुक्त परोपकारी पुरुषों को पहचान और परपीड़ा करनेवाले विधर्मी दस्यु अर्थात् वेदादि आज्ञा विरोधी अनार्यों को धर्म की सिद्धि के लिए शुद्ध कर व यज्ञादि कार्य में लगा।

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिसुतुका नाहुषाणि।। -ऋग्वेद (६/२२/१०)

हे राजन्, आप सत्य विद्या के दान और उपदेश से शूद्र के कुल में उत्पन्न हुओं को भी द्विज (शुद्ध) करिए और सब प्रकार से ऐश्वर्य को प्राप्त कराएं तथा शत्रुओं का निवारण करके सुख की वृद्धि कीजिए।

व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वा व्रात्यभावाद्विरमेयुः।
व्यवहार्या भवन्ति। कात्यायन श्रौत सूत्र १२/४

व्रात्यों का संस्कार करने (उन्हें शुद्ध करने) का इच्छुक व्रात्यस्तोम यज्ञ का अनुष्ठान करें, जिसके कारण वे व्यवहार्य हो जाते हैं।

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयाः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणानामदर्शनात्।।
पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः।
पारदाः पल्हवाश्चीनाः किराताः दरदाः खशाः।।
मुखबाहुरुपज्जानां या लोके जातयो बहिः।

म्लेच्छवाचश्चार्मवाचः सर्वे ते दस्यवो स्मृताः।। -मनुस्मृति (१०/४३-४५)

मानव सम्प्रदाय के आचार्यों के सम्मुख भी विदेशी व विधर्मी लोगों की समस्या उपस्थित हुई थी। उनका कथन था, कि यवन, शक, काम्बोज, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश, पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड़- ये सब वस्तुतः क्षत्रिय जातियां हैं। पर ब्राह्मणों के साथ सम्पर्क न रह जाने के कारण ये वृषलत्त्व को प्राप्त हो गई थीं, और इनमें चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था नहीं रह गई थी। चाहे इनकी भाषाएं आर्य हों, और चाहे म्लेच्छ, पर ये सब आर्य भिन्न हैं, अतः दस्यु वर्ग के अन्तर्गत हैं। इस प्रकार आचार्यों के साथ सम्पर्क न रहने के कारण इन जातियों के धार्मिक कार्य आर्य नहीं रह गए। इस लिए आर्य विद्वानों से पुनः सम्पर्क होने पर इन की धर्म वापसी में कोई बाधा नहीं है।

किरात हूणान्ध्रपुलिन्दपुक्कसा आभीर कंका यवनाः खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुद्ध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः।।

-श्रीमद्भागवतपुराण, २/४/१८

किरात, हूण, आन्ध्र, पुलिन्द, पुक्कस, आभीर, कंक, यवन, खस तथा अन्य पाप जातियां जिस प्रभु विष्णु के आश्रय में आकर शुद्ध हो जाती हैं, उसे हमारा नमस्कार हो।

इसी प्रकार देवल स्मृति व पंचदशी तृप्तिदीप (५-२३८) आदि में भी शुद्धि के विधान का वर्णन है।

अब इतिहास प्रसंग से शुद्धि के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं- मिस्टर किनकैड और पारसलैस लिखित मराठा हिस्ट्री में शिवाजी द्वारा अपने धर्म सचिव अष्ट प्रधान पंडितराव से बाजीराव व उसकी मुसलमान वधू जो बीजापुर के बादशाह की लड़की थी का सिंगणापुर नामक तीर्थक्षेत्र में ले जाकर शुद्धि करने का वर्णन है। छत्रपति शाहू के समय पूताजी बंडकर, सवाई माधवराव के समय नरहरि राव, संभाजी के समय गंगाधर रघुनाथ ब्राह्मण के शुद्ध किए जाने का वर्णन है। इतिहास संग्रह नामक मराठी पुस्तक में सन् १८१२ से १८१५ के बीच पेशवा राज्य में हिन्दुओं द्वारा व्यापक स्तर पर स्वधर्म वापसी हुई। उनमें से दो पत्र यहां उपस्थित हैं-

पहला पत्र सन् १८१२ में भोगले वंश की ओर से प्रधान की सेवा में भेजा गया था। फिरंगियों के राजकाल में यहां के पादरी अनेक हिन्दुओं को अपने यहां बुलाकर ईसाई बनाते रहे हैं। वे उन पर झूठा पानी डालकर ईसाई बना लेते थे। पेशवा का राज आने पर सभी शुद्ध होकर हिन्दु बन गए परन्तु हम लोग अभी भी ईसाई बने हुए हैं। पादरी अभी तक तो हमारे विवाह मात्र ही कराते थे। परन्तु अब हमसे सभी हिन्दू आचार व्यवहार को छोड़ देने के लिए कह रहे हैं, साथ ही हमसे बहुत सा द्रव्य मांगते हैं। इसलिए श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि अन्य लोगों के समान हमको भी शुद्ध कर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट होने की आज्ञा प्रदान करें।

इसी प्रकार सन् १८१५ में गाबड़ नाम के वंश के प्रधान ने भी पत्र भेजा। जब हमारे देश में फिरंगी राज्य था तब बहुत से हमारे लोग पादरियों द्वारा भ्रष्ट कर दिए गए। हमारे घर थोड़े हैं। हिन्दू लोग हमसे व्यवहार करने को तैयार हैं। परन्तु हमें पादरी लोग हिन्दुओं के साथ व्यवहार नहीं करने देते। हमारी कोई गति नहीं है, हमारी लड़के व लड़किया बड़े हो रहे हैं किन्तु विवाह नहीं होने पाते। इसलिए श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि हमको शुद्ध करके हिन्दू धर्म में मिलाने की आज्ञा प्रदान करें।

जयपुर की यह चिट्ठी १३ जून १९२८ के आर्य मार्तण्ड में छपी थी। आम्बेर के महलों में घुसने से पहले ही दिलाराम बगीचे के पास मैंने वह स्थान देखा जहां पर मिर्जा राजा के काल में श्री दादू जी महाराज आम्बेर में उपदेश करते थे। उन्होंने यहां पर ५२ मुसलमानों को शुद्ध कर हिन्दू धर्म की दीक्षा दी थी। रज्जब़ अली अपनी शादी के लिए बारात लेकर जा रहा था। दादू जी ने रज्जब़ से कहा कि संसार में किस काम से आया था और क्या करने लग गया। बस, इस बात ने रज्जब़ के दिल पर इतना प्रभाव डाला कि उसने विवाह से इन्कार कर दिया। बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना। तब उसके छोटे भाई को ही दूल्हा बनाकर ब्याह कर दिया गया। इधर रज्जब़ जी हिन्दू धर्म के पूर्ण प्रचारक बने और उन्होंने "रज्जब़ जी की वार्ता" नामक पुस्तक लिखकर हिन्दू धर्म के साहित्य का

भण्डार भरा।

अजमेर की प्रसिद्ध आनासागर झील बारहवीं सदी में राजा अरुणा देव ने हिन्दुओं को स्नान द्वारा शुद्ध करने के लिए खुदवाई थी। रामायण का फारसी अनुवाद करनेवाले मिर्जा अब्दुल कादिर साहब महात्मा विट्ठलदास की कृपा से हिन्दू बने थे। कश्मीर के राजा रणवीरसिंह ने शुद्धि की धर्मशास्त्र में व्यवस्था के लिए "रणवीर कारित प्रायश्चित्ताध्याय" नामक ग्रन्थ कर रचना करवाई थी। इसी प्रकार बंगाल में चैतन्य महाप्रभु एवं पंजाब में सिख गुरुओं के प्रयासों से अनेक शुद्धियां हुईं।

मिलाप लाहौर में यह समाचार छपा था कि मुहम्मद शाह बादशाह के समय में दीवान मंशाराम मोहन ब्राह्मण पंजाब के सुबेदार थे। उनके पुत्र का नाम था राजाराम जी और राजाजी के पुत्र का जयराम जी। बादशाह ने जयराम को कैद कर मुसलमान बना लिया। और उसका नाम युसुफ सानी रखा। बाद में युसुफ को शुद्ध कर अपनी जाति में मिला।

मेरा यहां पर मन्तव्य शुद्धि का गुणगान करना नहीं अपितु हिन्दू जाति के भाईयों को यह समझाना है कि शुद्धि के इस पवित्र कार्य को युद्ध स्तर पर चलाने का समय आ गया है। वैदिक धर्म में दीक्षित होकर मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता हूं तथा अपने पूर्वजों के गौरव को पुनः प्राप्त करने के इच्छुक सभी भाईयों को वैदिक धर्म में सादर आमन्त्रित करता हूं।

१०. मेरा संक्षेप में परिचय

मेरा जन्म ८ मई १९६४ को एक ईसाई परिवार में हुआ। मेरी माताश्री का शुभ नाम श्रीमती रोझी डिसूझा एवं पिताश्री का नाम श्रीमान् जॉन डिसूझा है। अपने माता पिता का मैं ज्येष्ठ पुत्र हूं। माता-पिता द्वारा मेरा नामकरण माईकल किया गया था। मेरे अलावा मेरा एक बहन श्रीमती हिल्डा और एक भाई श्री.हेन्री हैं। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा मेरी नानी श्रीमती मेरसिन कुटिनो के पास रहते हुए मुम्बई में १३ कक्षा तक सम्पन्न हुई। दो वर्ष आई.टी.आई. में तकनीकी कोर्स करने के उपरान्त पूर्वजन्मार्जित तीव्रवैराग्य के संस्कारों के उभरने से १९८६ में गृहत्याग

किया।

गृहत्याग से पूर्व लगभग तीन वर्षों तक सत्य धर्म की खोज की जिज्ञासा में अनेक मत-सम्प्रदायों के साहित्यादि का वाचन एवं उनके पूजाविधियों का अनुसरण चलता रहा। अन्धश्रद्धा में बहकर मूर्तिपूजा कब्रपूजादि को भी दो वर्षों तक किया। इस कालावधी में वारकरी सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय एवं कबीर मत में ज्ञान पिपासा को शान्त करने के प्रयासों में लगा रहा। गृहत्याग के उपरान्त नासिक त्र्यंबकेश्वर में दशनाम नागा संन्यासी अटल अखाड़ा के महन्त से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। वहां मेरा नामकरण सोमवारगिरी के रूप में किया गया। शीघ्र ही महन्त के साथ मनमुटाव के कारण तत्काल नासिक छोड़ मुम्बई वापस आया।

मुम्बई में में घर न लौटा अपितु पूर्व परिचित कबीर मत के एक सज्जन के सहयोग से पवई में रामबाग रामाश्रम में जा रुका। लगभग ६ से ८ माह बाद इसी आश्रम में आर्यवीर दल का जून १९८८ में एक युवक चरित्र निर्माण शिविर लगा। शिविर में प्रशिक्षण दे रहे शिक्षक ब्रह्मचारी सुरेन्द्र जी (वर्तमान स्वामी सुरेन्द्रानन्द) तथा स्थानीय श्री ओम्प्रकाश जी आर्य आदि के साथ शिविर में सत्संग का अवसर मिला। उन्होंने मेरे सारे सन्देहों की निवृत्ति कर दी गई। मुझे भी इस बात का अहसास हो गया कि जिस संन्यास को मैंने लिया था, मैं वास्तव में उसके योग्य न था। आर्य समाज का चौथा नियम कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए से मैं उस समय भी बहुत प्रभावित हुआ था। इस नियम का पालन करते हुए शिविर के अन्तिम दिन पुनः विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रती हो गया। मेरा नामकरण इस दिन 'अरुणकुमार' किया गया।

तब से आज तक मैं साधना एवं विद्याध्ययन के क्षेत्र में संलग्न हूं। अध्ययन के क्षेत्र में मुझे दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ गुजरात, आर्ष गुरुकुल नर्मदापुर, होशंगाबाद, म.प्र., पाणिनी महाविद्यालय, तिलोरा, राजस्थान, वैदिक साधना केन्द्र, बड़गांव भीला, खण्डवा, म.प्र., आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा, एवं वर्तमान में आर्ष गुरुकुल

सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा, में रहने का अवसर मिला है। इन स्थानों पर रहते हुए सर्वश्री आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य, उपाध्याय श्री विवेकभूषण जी दर्शनाचार्य, मेरे अध्यात्मगुरु डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय, वानप्रस्थी आचार्य अमृतमुनि जी (पूर्व नाम आ.अमृतलाल जी शर्मा), स्वामी देवव्रत जी (प्र.संचालक सा.आर्यवीर दल), स्वर्गीय आचार्य वेदपाल जी सुनीथ, स्वामी ऋतस्पति जी (पूर्व नाम जगद्देव जी नैष्ठिक) आदि महानुभावों से विद्याध्ययन एवं साधना आदि के क्षेत्र में पर्याप्त मार्गदर्शन मिला है।

आर्यसमाज के माध्यम से वैदिक धर्म प्रवेश मेरे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के अनुकूल चलकर ही अपने जीवन की चरम सफलता को प्राप्त कर सकूंगा। वैदिक धर्म के सार्वभौम सिद्धान्तों की तुलना जब मैं प्रचलित किसी भी मत-सम्प्रदायों के सिद्धान्तों से करता हूं तो यह पाता हूं, कि यद्यपि अच्छाइयां तो सभी मत-पन्थ-सम्प्रदायों में हैं, किन्तु वैदिक धर्म से भिन्न प्रत्येक में कुछ न कुछ कमियां सिद्धान्तों की, तो कहीं आचरण की, तो कहीं परम्पराओं की मिल ही जाती हैं। जिनके चलते मानव का पूर्ण उत्थान सम्भव प्रतीत नहीं होता। जैसे विषसम्पृक्तान्न सदैव त्याज्य ही होता है, वैसे ही इन मत-मतान्तरों की कथा है।

यद्यपि बाईबल को बचपन में मैंने पढ़ा था। चर्च में बाईबल की कथाएं, प्रवचन आदि भी सुने थे। पापों का क्षमा होना, कन्फेशन आदि कतिपय विषयों में सन्देह तो कक्षा आठवीं से ही बने हुए थे, किन्तु अन्धश्रद्धा, सत्य विद्या के अभाव एवं बुद्धि की अपरिपक्वता में बाईबल के विज्ञान एवं विद्याविरोधी बातों पर सहसा सन्देह नहीं हो पाया। हां! चरित्रहीनता के वर्णन जरूर मन में खेद उत्पन्न किया करते थे। किन्तु आर्य समाज प्रवेश के अनन्तर महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के १४ वें समुल्लास को पढ़ने के उपरान्त मेरी आंखें खुल गईं। हृदय में सत्य अर्थ का प्रकाश हुआ। इस पुस्तक को लिखने का मेरा प्रयोजन ईसाई भाइयों के साथ वैर-विरोध प्रकटन नहीं, अथवा किसी का दिल दुखाना भी प्रयोजन नहीं है; अपितु सत्य-सत्य अर्थ को प्रकाश में लाना है। इस पुस्तक का प्रयोजन ईसाइयों के उन गतिविधियों पर भी अंकुश

लगाना है जिससे वे छल-बल-धन एवं नौकरी आदि प्रलोभनों द्वारा भोले-भाले हिन्दू भाई-बहनों को बहला-फुसलाकर मतान्तरण करते हैं।

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम परमात्मा को धन्यवाद है, जिसकी महती कृपा से यह पुस्तक पाठकों के हाथों में है। इस पुस्तक के लिखने में जिन ग्रन्थों का सन्दर्भ लिया है इसकी सूची अग्रीम प्रकरण में दी गई है। उन सभी पुस्तकों के लेखकों को मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं। सन्दर्भित पुस्तकों के चयन में तथा विषय सामग्री अन्वेषण आदि कार्यों में डॉ.विवेक जी आर्य (जीन्द) तथा श्री.सहदेव जी समर्पित (संयुक्त सम्पादक शान्तिधर्मी- मासिक पत्रिका) का प्रभूत सहयोग मिला है, एतदर्थ इन दोनों महानुभावों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। पुस्तक लेखन काल में वैदिक साधना आश्रम में आवास, भोजनादि अन्य सुविधाएं सुलभ कराने के लिए आश्रम के व्यवस्थापक स्वामी जीवनानन्द जी तथा अन्य अधिकारी जनों का भी मैं कृतज्ञ हूं। इस पुस्तक की पाण्डुलिपी का ईक्ष्यवेक्षण कर बहुमूल्य सुझाव एवं सम्मतियां देने के लिए सभी महानुभावों गुरुजनों के प्रति सदैव अनुगृहीत हूं। पाठकों के सुझाव एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा मुझे सदैव बनी रहेगी।

१०. सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

1. Light of Truth- Swami Dayanand Saraswati
2. Footprints of Christ- Dr. Baburao Patel
3. Christianity in India- Ganga Prasad Upadhyaya
4. Mother Teresa- The Final Verdict- Aroup Chatterjee
5. The Bible unmasked- Henry C. Wright
6. The Aryasamaj and Christianity- Ganga Prasad Upadhyaya
7. A Triumph of Truth- Durga Prasad, lahore ,1889
8. Holy Vedas and Holy Bible-K.L. Talreja
9. Jawahar Lal Nehru-Glimpses of World History
10. Holy Bible-the new king james version,india bible literature,madras.
11. Crucification By An Eye Witness- Pt. Ghasiram, Pt. Chumupati
12. Dogmas of Christianity - Durga Prasad, lahore ,1887

१३. सत्यार्थ प्रकाश- स्वामी दयानन्द
१४. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- स्वामी दयानन्द
१५. कुलियात आर्य मुसाफिर- पं.लेखराम
१६. वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा- प्रो.विश्वनाथ विद्यालंकार
१७. दो महात्मा- कृष्णदेव व्याकरणाचार्य
१८. इंजीलों में परस्पर विरोधी कल्पनाएं- पं.देवप्रकाश
१६. परमेश्वर पुत्र ईसा- जगदीश्वरप्रसाद
२०. वेद और बाईबल- पं.दीनानाथ सिद्धान्तालंकार
२१. पादरियों को चुनौति- स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
२२. नियोग वैदिक है- पं.घासीराम एम.ए.
२३. राठौड़ वीर दुर्गादास- प्रताप नारायण मिश्र
२४. मुगल साम्राज्य का इतिहास- पं.इन्द्र विद्यावाचस्पति
२५. आर्यसमाज का इतिहास- डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार
२६. इंजिल के परस्पर विरोधी वचन- पं.रामचन्द्र देहलवी

२७. ऋग्वेद- भाष्यकार- महर्षि दयानन्द एवं श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
२८. यजुर्वेद- भाष्यकार- महर्षि दयानन्द
२९. सामवेद- भाष्यकार- ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड
३०. अथर्ववेद- भाष्यकार- श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
३१. मनुस्मृति- भाष्यकार- डॉ.सुरेन्द्रकुमार
३२. वैश्विक ईसाई धर्मान्तरण की साजिश- डॉ.प्रवीण तोगड़िया
३३. ईसाइयत का विश्वव्यापी षड़यन्त्र- अधीश कुमार
३४. चर्च सेवा की आड़ में- अधीश कुमार
३५. चर्च का चक्रव्यूह- मोहन जोशी
३६. पवित्र बाईबल- बाईबल सोसाइटी आफ इंडिया बैंगलोर
३७. सनातन शुद्धधर्म विचार
३८. शान्तिधर्मी मासिक पत्रिका
३९. वेदवाणी मासिक पत्रिका- नारी विशेषांक
४०. दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह- सम्पादक डॉ.भवानीलाल भारतीय
४१. भावार्थ प्रकाश भाग १ एवं २- सम्पादक सत्यानन्द वेदवागीश

११. युवापीढ़ी को सन्देश !

विगत १७ वर्षों के अपने वैदिक धर्म के अध्ययन से मैं निश्चयपूर्वक यह कह सकता हूं कि पृथ्वी पर सभी मत सम्प्रदायों में वैदिक धर्म के से सार्वभौम कल्याणकारी विचार कहीं पर भी देखने को नहीं मिलते।

जो युवा पीढ़ी वैदिक धर्म के प्रति अज्ञान तथा आधे-अधुरे ज्ञान के चलते अविश्वास तथा अन्य मतानुयायियों के थोड़े से बहकावे में आकर अपना धर्म परिवर्तन करते हैं उन्हें इस पुस्तक में लिखे विचारों पर चिन्तन कर स्वधर्म में वापसी की प्रेरणा देता हूं।

ईसाई मतानुयायी स्वमत विस्तार के लिए अपनी बेटियां तक हिन्दू लड़कों को देने को उद्यत रहते हैं तथा विवाह पश्चात उन लड़कों को ईसाई बना लेते। इसी प्रकार हिन्दू लड़कियों को ईसाई बनाकर अपने मतस्थ लड़कों से विवाह कराया जाता है। इसप्रकार सुनियाजित ढंग से भारत में चल रहा धर्मान्तरण का षडयन्त्र है।

मतान्तरण के इस कुचक्र को हमें न केवल रोकना है अपितु सत्यग्राही ईसाइयों को वैदिक धर्म की महत्ता समझाकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इस परमात्मा के आदेश को चरितार्थ भी करना है।

-आर्यवीर

अनुक्रमणिका

खण्ड १

१. बाईबल में नारी १
२. बाईबल में गुलामप्रथा ६
३. बाईबल में जातिवाद एवं भेदभाव..................... ११
४. बाईबल एवं मांसाहार १३
५. बाईबल और नरबलि १५
६. बाईबल और विज्ञान १७
७. बाईबल का ईश्वर २१
८. ईश्वर के दूतों द्वारा नरसंहार ३२
९. बाईबल और नियोग ३५
१०. निर्दोषों को सजा ३७
११. बाईबल की आज्ञा की अवहेलना ३९
१२. बाईबल एवं मदिरापान ४०
१३. पशुओं का बोलना ४१
१४. बाईबल में भूत-प्रेत व चुड़ैल आदि ४२
१५. बाईबल और मूर्तिपूजा ४३
१६. बाईबल एवं अप्रासंगिक दण्डव्यवस्था ४४
१७. बाईबल और चमत्कार ४६
१८. बाईबल की आपत्तिजनक बातें ४७
१९. बाईबल की असम्भव बातें ४९
२०. बाईबल एवं ट्रिनिटी का सिद्धान्त ५०

खण्ड २

१. बाईबल के परस्पर विरोधी वचन .... पृष्ठ ५२-८७

खण्ड ३

१. पाप क्षमा होते हैं या नहीं ८८
२. पुनर्जन्म होता है या नहीं १०१
३. ईसा का अज्ञात जीवन १०६

४. ईसाई और बौद्धमत की तुलना १११
५. भारत में ईसाई मत ११४
६. सेंट जेवियर्स एवं गोवा में ईसाई धर्मान्तरण ११८
७. द मिथ ऑफ ए सेंट- मदर टेरेसा १२१
८. ईसाईयत पर महापुरुषों की सम्मतियां १२८
९. धर्मशास्त्र एवं इतिहास में शुद्धि १२९
१०. मेरा संक्षेप में परिचय १३३
११. सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची १३७